गोवंश संवर्धन

मैं गोवंश सेवक सहदेव भाटिया विद्युत अभियंता, अखिल विश्व कामधेनु परिवार 21 सी, जयराज कोंपल्केस सोनी नी चाल, ओढव मार्ग, अहमदाबाद गुजरात 382415 दूरभा-ा 079-30423064 ई मेल गायमाताएट द रेट ओफ याहू डोट कोम वेबसाइट जीयोसीटीज डोट कोम फ्रंटस्लेसगायमाता 50 सालों से लगातार पूरे विश्व की 96 करोड़ गोवंश के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद में भारतीय गोवंश एवं ज्योति-ा वि-ाय पर अनुसंधान पत्र पढ़ने के कारण जून 2000 में टाउन होल रायपुर में स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया है. भारतीय गोवंश के संवर्धन पर अंग्रेजी में वेबसाइट तैयार करने के कारण चिकित्सक संगठन अमेरिका के द्वारा 24 सितम्बर 2001 को संध्या 5.30 बजे चिकित्सा पुरुस्कार 2001 से सम्मानित किया गया है.

रा-ट्रीय गोसंपदा सम्मेलन 2003 में गोवंश पर बहुत ही दुर्लभ वेबसाइट एवं वीडियो डीवीडी एवं सीडी तैयार करने के कारण अलबर्ट आइंसटीन पुरुस्कार से सम्मानित किया गया है. स्वामी सत्यानंद जी सरस्वती मुंगेर से संपूर्ण योग की शिक्षा प्राप्त कर योगाचार्य, स्वर्गीय श्री विठठलदास जी मोदी आरोग्य मंदिर गोरखपुर से प्राकृतिक चिकित्सा की संपूर्ण शिक्षा प्राप्त कर प्राकृतिक चिकित्सक, आर्यवैद्यशाला कोटटकल केरल से महापंचगव्य की संपूर्ण शिक्षा प्राप्त कर महापंचगव्य चिकित्सक, डाक्टर सत्यनारायण गोयनका जी से विपश्यना की संपूर्ण शिक्षा प्राप्त कर, अमरकंटक में श्री नागराज जी से जीवन विद्या के बारे में संपूर्ण शिक्षा प्राप्त कर गोवंश संवर्धन पर 50 सालों से अनुसंधान करने एवं पूरे भारत में गोशालाओं में भ्रमण करने के बाद में पुस्तक बहुत ही कम मूल्य पर पहली बार प्रकाशित कर रहा हूं.

गोमहाविज्ञान ग्रंथ का यह प्रथम भाग सबसे महत्वपूर्ण है. इंटरनेट पर मैंने सबसे पहले अंग्रेजी में वेब पेज पर अपने विचार रखे.

अमेरिका में बसे भारतीयों में मेरा यह ग्रंथ बहुत ही लोकप्रिय हुआ है. अमेरिका हर साल 100 अरब डालर दवाओं पर खर्च कर रहा है. 17 प्रतिशत वृद्धि हर साल दवा के खर्च में करता है. अमेरिका में गोवंश महाविज्ञान ग्रंथ की मांग सबसे अधिक है.

गोवंश महाविज्ञान ग्रंथ का प्रथम संस्करण मैंने 2003 में प्रकाशित किया था जिसे सभी गोशालाओं में बहुत ही अधिक पसंद किया था. प्रथम संस्करण का मूल्य मात्र 201 रु. रखा गया था. तीसरे गो संपदा सम्मेलन में प्रथम संस्करण की अपार लोकप्रियता के कारण ही मैंने मेहनत कर अगले संस्करण प्रकाशित करने का निश्चय किया. प्रथम संस्करण मात्र 150 पन्नों में ही समेट लिया था.

गोवंश पर वीडियो सीडी तथा डीवीडी की मांग आने के कारण ही बिना मूवी कैमेरा के 13 भाग 80 मिन ट के तैयार करने का कार्य किया. 25 तथा 100 रु. मूल्य के दोनों भागों को लोगों ने मेरे प्रयत्न का ह्रदय से स्वागत किया.

द्वितीय संस्करण 2004 में प्रकाशित किया था. सहयोग राशि 201 रु. ही रखी थी. गोमहाविज्ञान ग्रंथ को हर गांव में पहुंचाने के लिए कौन बनेगा गोवंश सेवक? का प्रकाशन साथ में प्रारम्भ किया. 298 प्रश्न सबसे पहले तैयार किए. सबसे पहले कोलकत्ता में तारकेश्वर में गो संपदा सम्मेलन में कौन बनेगा गोवंश सेवक? को प्रस्तुत किया. पूरे कार्यक्रम की वीडियो रिकार्डिग की गयी थी. विजेताओ ंको पुरुस्कार से सम्मानित किया गया था. प्रथम संस्करण में लोगों के बहुत सारे अमूल्य सुझाव मिलने से दूसरे संस्करण में बहुत सारे सुधार होने के कारण ही जन जन में लोकप्रिय हुआ था.

तृतीय संस्करण 2005 में प्रकाशित किया था. कौन बनेगा गोवंश सेवक? के 1000 प्रश्न तैयार किए गये. गोपाल गोशाला भाटापारा में 500 बच्चों के बीच में 97 प्रश्न चुनकर प्रतियोगिता की गयी थी. विजेताओं को गोपा-टमी के दिन सम्मानित किया गया था. तृतीय संस्करण में मैंने बहुत सारे वि-ायों का समावेश किया था.

2006 में चतुर्थ संस्करण प्रकाशित किया था. चतुर्थ संस्करण में काफी परिवर्तन किए गये थे.

2007 में पंचम संस्करण प्रकाशित किया था. 2007 में वीडियो कैमेरा लेकर कार्य करने का प्रारम्भ किया. पंचम संस्करण में क्रांतिकारी जानकारियां थी.

2008 में छठा संस्करण ओफसेट पर प्रकाशित कर रहा हूं. 5125 प्रश्न कौन बनेगा गोवंश सेवक? के तैयार किए हैं. छठा संस्करण नवीनतम दुर्लभ जानकारियों के साथ में प्रकाशित कर रहा हूं. विश्व में जबरदस्त परिवर्तन पर्यावरण के कारण 2008 दिसम्बर से 2012 तक दिखाई देगा. भारत खरबों डोलर गोबर गैस संयंत्र हर गांव में लगाकर कार्बन क्रेडिट के माध्यम से कमायेगा. आने वाले 100 सालों में भारत में 1 लाख नंदीशालाएं खुलेंगी. नंदी के विश्व में निर्यात करने से भारत को अपार धन मिलेगा. 2011 से सभी राज्यों में कामधेनु विश्व विद्यालय खुलेंगे. गो सेवा आयोग भी हर राज्य में कार्य करेंगे. कामधेनु चेनल 2011 से कार्य करेगी. मैंने इसमें सभी संदर्भ ग्रंथों का उल्लेख किया है. आप संदर्भ ग्रंथ को देख सकते हैं. आपको मेरा यह प्रयत्न कैसा लगा कृपया मुझे आप सूचित जरुर करें.

3200 अलग अलग खंड पुस्तकों के साथ साथ ही ओडियो एवं वीडियो डीवीडी, सीडी, वेबसाइट, धारावाहिक, चलचित्र, कामधेनु चेनल के रुप में गोवंश चिकित्सा, गोवंश का संतुलित आहार, गो माता का दूध, दूध के उत्पाद, गोमय से रोजगार, कौन बनेगा गोवंश सेवक? प्रतियोगिता को ओफसेट पर प्रकाशित कर रहा हूं. प्रत्येक प्रश्न के 4 संभावित उत्तर मैंने दिये हैं. सही उत्तर का चयन गहन अध्ययन करने के बाद में करना है. विजेता को अखिल विश्व कामधेनु परिवार 50 किलो सोने से सम्मानित करेगा. हमें आपके भरपूर आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है.

हर घर में गोवंश को अब वापस लाने के लिए हम सभी संगठित रुप से प्रयत्न अवश्य करें. हर घर में गोवंश आने पर ही भारत सोने की चिड़िया एक बार फिर से बन जायेगा. गोवंश वध भारत में पूरी तरह से बंद करने के लिए 2011 तक का समय हमने तय किया है. गोवंश के सम्मान करने पर विश्व में भारत की पहचान एक बार फिर से बनेगी.

1. गो क्या है? 10
2. गो माता की उत्पत्ति 10
3. मां शब्द की उत्पत्ति 10
4. भगवान श्री राम के समय 10
5. भगवान श्री कृ-ण के समय गोवंश संवर्धन 12
6. गोपा-टमी की शुरुआत 12
7.

दयोदया जीव केंद्र

भगवान महावीर को मानने वालों की संख्या आज भी विश्व में बहुत ही अधिक है तथा जैनी बहुत अधिक सम्पन्न भी हैं. लेकिन आज उनकी कथनी और करनी में बहुत ही अंतर है इसलिये भारत में गोवंश बहुत ही अधिक दुःखी है. जैन धर्म के अनुयायी के द्वारा जीव दया को ध्यान में रखकर बहुत सारे पिंजरापोल खोले गये हैं. दयोदया जीव केंद्र लगातार खुल रहे हैं. जैन मुनि श्री विद्यासागर जी ने बहुत सारी गोशालायें भारत में प्रारम्भ करवायी हैं. जबलपुर में 22 एकड़ भूमि पर अशोक जैन जी के मार्गदर्शन में 350 गोवंश मौजूद हैं. सागर जिले में कई गोशालाएं खुली हैं. पेंड्रा में गोशाला खुली है.

गोवंश विकास केंद्र

महान साध्वी प्रीति सुधा जी ने कई जगह भव्य गोशालाओं को खुलवाया है. प्रीति सुधा जी की प्रेरणा से डा. गौरीशंकर माहेश्वरी जी ने देश में गोवंश के संवर्धन करने के लिए अभियान चलाया था. गुजरात में गोवंश पालन का कार्य बहुत ही तेजी के साथ चल रहा है. कमल मुनि ने जेलों में भी गोशालाओ को चालू करवाया है. जैन संतो के उपदेश कोई भी जैन पूरी तरह से मानने के लिये तैयार ही नहीं है. जैन धर्म के अनुयायी गाय के बदले में भैंस का दूध पसंद करते हैं, जैन धर्म के मानने वालों का तर्क यह है कि गाय टटटी खा रही है तो हम उसका दूध कैसे पी सकते हैं? दया धर्म का मूल है और जीव दया और अहिंसा तथा शाकाहार की बात करने वाले जैनी स्वयं आज हिंसक और मांसाहारी हो गये हैं.

भारत पर वास्को डी गामा का आक्रमण

सोने के लिये भारत पूरे विश्व में बहुत अधिक प्रसिद्ध होने के कारण पोप के आदेश पर समुद्री लूटेरा वास्को डीगामा पुर्तगाल से भारत में समुद्र के मार्ग से सोना लूटने के लिये कालीकट में पहली बार 20 मई 1498 में आया था.

धोखे से हत्या

कालीकट के राजा झामोरिन से वास्को डी गामा ने व्यापार करने के लिए अनुमति मांगी और अनुमति मिलने पर धोखे से वास्को डी गामा ने झामोरिन की हत्या कर दी थी.

21 जहाज सोना

वास्को डी गामा तीन बार भारत में आया था और तीन बार में कुल 21 जहाज भर कर सोना लूटकर भारत से ले गया था. उसके बाद वास्को डीगामा मर गया था इसलिये सोना लूटने भारत नहीं आ सका था. वास्को डीगामा के द्वारा पूरे विश्व में जानकारी हो जाने के कारण सोना लूटने के लिये विश्व के कई लूटेरों को भी भारत आने की इच्छा हुई थी. हमें इतिहास की गलत जानकारी वर्तमान में पढ़ाई जाती है.

निर्यात

भारत में गोवंश के संपूर्ण विकास होने के कारण ही विश्व के कई देशों को भारत से गाय माता के गोबर से मसाले उत्पन्न कर मसाले का निर्यात 33 प्रतिशत किया जाता था जिसके कारण सोना भारत को मिलता था. भारत में विश्व का सबसे अधिक सोना था. भारत में सोना लूटने के लिये बहुत लम्बे समय तक मुगलों, हूणों, डच, अंगेजों ने कई बार बहुत ही जबरदस्त हमला किया था और भारत से बहुत सारा सोना लूट कर ले गये थे.

हैदरअली के राज्य में गोसंवर्धन

मैसूर के राजा हैदरअली और टीपू सुलतान के समय भी गोवंश बहुत ही सुखी था. हैदरअली ने अपनी दूध एवं दूध से बने पदार्थ की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अमृतमहाल यानी दूध का खजाना नस्ल का संपूर्ण विकास मैसूर राज्य में किया था.

गन बैल

अमृतमहाल नस्ल को उसके कार्य के अनुसार गन बैल, पैक बैल, हल बैल तीन श्रेणी में बाटा गया है. मैसूर का उत्तरी भाग समुद्र से 1800 फीट तथा दक्षिण भाग 3000 फीट उंचाई पर स्थित है. मैसूर का दक्षिण क्षेत्र नीलगिरी की पहाडियों से घिरा हुआ है. मैसूर के उत्तर में कृष्णा नदी है तथा दक्षिण में कावेरी नदी है. मैसूर के उत्तर में काली मिटटी में कपास की खेती की जाती है.

सुहावना मौसम

मैसूर के दक्षिण एवं पश्चिम में नदी से नहरें काट कर सिचाई के साधन विकसित कर गन्ने तथा धान की खेती की जाती है. मैसूर के पूर्व में लाल रंग की मिटटी है जिसमें फास्फोरस की कमी पायी जाती है. इस क्षेत्र के मध्य में पत्थरिली भूमि में उपजाउपन कम होने से मात्र घांस ही उगती है. मैसूर में मौसम पूरे साल बहुत ही सुहावना होता है. मैसूर में जून के प्रारम्भ में बहुत ही अच्छी बारिश होती है. अगस्त माह में भी कुछ समय बारिश होती है. सितम्बर से नवम्बर के मध्य तक बारिश होती है. आखिर की बारिश बहुत ही उपयोगी होती है. नवम्बर के अंत से फरवरी तक ठंड पडती है. मैसूर में गरमी मार्च से मई में पडती है.

अमृतमहाल

1672 से 1704 तक चिक्का देवराज वोदयार ने राजघराने के गोवंश की देखभाल की थी. अमृतमहाल गोवंश के संपूर्ण विकास

करने के लिए राज्य में बहुत अच्छी नंदीशालाएं तैयार की गयी थी. नंदीशाला में बछड़ों को जन्म से लेकर बड़े होने तक भरपेट दूध पिलाया जाता था. अमृतमहाल बैलों की अधिकतम आयु 25 साल थी. अमृतमहाल नस्ल को तीन प्रजातियों में बांटा गया था. 1. हल्लीकर, 2. हगलवडी, 3. चितलद्रुग. अमृतमहाल नस्ल का विकास हल्लीकर एवं मिलती जुलती नस्ल से हुआ था.

60,000

अमृतमहाल नस्ल के बैलों के मेले गांवों में आयोजित किये थे. 60 हजार अमृतमहाल नस्ल के गोवंश हैदरअली के समय मैसूर राज्य में मौजूद थे. हैदरअली ने गोवंश के विकास करने के लिए बहुत ही कठोर कानून बनवाये थे. हैदरअली ने गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगवाया था. गोवध करने वाले को बहुत कठोर सजा दी जाती थी. गोमांस के व्यापार पर प्रतिबंध था. मैसूर राज्य में गोचर की भूमि अलग से छोड़ी जाती थी. हैदरअली के पुत्र टीपू सुल्तान ने भी गोवंश के विकास करने के लिए अपने पिता के समान ही कठोर कानून बनवाये थे.

बैल से परिवहन

टीपू सुल्तान के समय में अमृतमहाल नस्ल के बैलों का संपूर्ण विकास बहुत अच्छी तरह से किया गया था. अमृतमहाल बैल हैदरअली के समय अपनी सवायी चाल के लिये विश्व में प्रसिद्ध था. हैदरअली की तोपों का परिवहन भी अमृतमहाल नस्ल के बहुत बढ़िया बैलों के द्वारा ही किया जाता था. 100 मील की दूरी उबड़ खाबड़ रस्तों पर बैलों के द्वारा 2.5 दिनों में तय की जाती थी. अमृतमहाल बैलों के कारण ही हैदरअली अपनी तोपों के साथ बहुत तेजी के साथ एक जगह से दूसरी जगह चला जाता था जिसके कारण अंग्रेज हैदरअली को कभी पकड़ नहीं पाते थे.

अग्रेजो के द्वारा अमृतमहाल का पतन

अंग्रेज सेना के अफसर लिटिलवुड ने 1936 में अपने अनुभव को लिखते हुए वर्णन किया है कि मैसूर के 230 अमृतमहाल बैलों के द्वारा बहुत ही खराब सडकों और दुर्गम तिराह पहाडी क्षेत्रों में अफगानिस्तान तक प्रतिदिन 16 घंटों की लगातार यात्रा कर 1842 में जाना और वापस आना पूरी तरह से बिना कोई सामान बदले सुरक्षित संभव हो सका था. अंग्रेजों के समय में जानबूझकर अमृतमहाल नस्ल पर ध्यान नहीं देने के कारण ही अमृतमहाल नस्ल का पतन प्रारम्भ हुआ था. भारत में यंत्रों को बढ़ावा देने के कारण ही खेती करने के लिए बैलों की उपयोगिता कम हो गयी. परिवहन में भी यंत्रों के उपयोग होने के कारण ही इस नस्ल के विकास में बाधा आ गयी.

अग्निहोत्र

गाय के घी से ही भारत में हर घर में नियमित अग्निहोत्र किया जाता था.

भारत में भैंस का प्रवेश

भारत में भैंस का उल्लेख बहुत ही प्राचीन समय से है. महि-ासुर का उल्लेख बहुत ही पुराना है. रामायण तथा महाभारत के समय में भी अन्य जानवरों के पालतु बनाने के समय में भैंस का उल्लेख मिलता है. रावण जैसे अनेकों असुरों ने मांस खाने के लिए भारत में भैंस का विकास किया था. रावण गाय विरोधी था इसलिए उसने भैंस को बढ़ावा दिया था. एशिया में मेसोपोटामिया, चीन, बेबीलोनिया, परशिया, नेपाल, भारत में भैंस का विकास मानव की सभ्यता के विकास के साथ ही हुआ है. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो सभ्यता में भी गुजरात, राजस्थान, हरियाणा में भैंसों का उल्लेख मिलता है.

9 प्रजातियां

पश्चिमी पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महारा-ट्र, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पाकिस्तान के कुछ भागों में भैंस का उल्लेख किया गया है. पंजाब में मुरा, पाकिस्तान में नीली रवि, कुंदी, गुजरात में मेहसाना में मेहसाना प्रजाति, सूरत में सूरती, जाफराबादी प्रजाति, महारा-ट्र में पंडरपुर में पडरपुरी प्रजाति, मध्यभारत में उड़ीसा में परलाकेमेडी, धेनकमल, कुजंग, भेडा, कोरापुट में मंदा, जेरांगी, कालाहांडी, संबलपुरी, टोडा, दक्षिण कनारा, नागपुर में नागपुरी प्रजाति, छतीसगढ़ में जंगली भैंसों, उत्तरप्रदेश में भदावरी एवं तराई, आंध्रप्रदेश में गोदावरी, सौरा-ट्र में कच्छी, मणिपुर में छोटी प्रजाति का विकास किया गया है.

भैंस के कारण पतन

दूध के लिए भैंस का उपयोग प्राचीन समय में भारत में हमेशा ही बहुत ही कम रहा है. हमारी प्रतिदिन की बहुत सी ऐसी क्रियाएं हैं जिनसे देश को हानि होती है. हम इतने अधिक मानसिक स्तर पर गुलाम हो गये हैं कि इन कुक्रियाओं के खराब परिणामों के बारे में जानने का प्रयत्न तक नहीं कर रहे हैं. यह बात भैंस के पालन के लिए है. वेदों में भैंस का उल्लेख नहीं है. प्राचीन भारत में भैंस नहीं थी. धरती पर सर्वप्रथम गो की उत्पत्ति हुई थी. वेदों में गो को अग्रजा कहा गया है. भारत में भैंस के प्रवेश के पूर्व भारतीय गोवंश की स्थिति बहुत ही अच्छी थी. भैंस की उत्पत्ति के पूर्व भारत में सत्य, ज्ञान, प्रेम, देवत्व का ही समय था. भैंस यानी अज्ञान, अंधकार, मृत्यु यानी पृथ्वी पर आतंकवाद, भ्रष्टाचार, हिंसा, बलात्कार, हत्या जैसी अनेक बहुत ही गंभीर समस्याएं यानी असुरत्व में वृद्धि, महिष, राक्षसी प्रवृत्ति का बढना यानी राक्षस मानव और पशु मानव में वृद्धि.

भैंस की उत्पत्ति

भैंस की उत्पत्ति पृथ्वी पर बहुत ही विचित्र स्थिति में हुई थी. विश्वामित्र ने प्रसन्न होकर त्रिशंकू को स्वर्ग में जीवित ही अपने तबोबल के द्वारा भिजवाया था . देवताओं ने त्रिशंकू को स्वर्ग में जीवित प्रवेश करने ही नहीं दिया था. इसलिये त्रिशंकू को स्वर्ग में प्रवेश नहीं मिला था और त्रिशंकू को स्वर्ग से देवताओं ने लौटा दिया था. विश्वामित्र को देवताओं पर बहुत ही क्रोध आया था. विश्वामित्र को अपनी अखंड साधना और तपोबल पर पूरा विश्वास था और

विश्वामित्र ने देवताओं से बदला लेन के लिये अपने तपोबल से नयी सृष्टि उत्पन्न की थी और तब अपनी नयी सृष्टि में ब्रहमा की सृष्टि में उत्पन्न गाय माता के बदले में भैंस की उत्पत्ति की थी. विश्वामित्र का एक बार वसि-ठ जी से नंदनी गो के लिए लड़ाई की थी. विश्वामित्र हार गये थे तब उन्होंने 10,000 सालों तक तपस्या की थी. नन्दनी गो के समान ही उन्होंने भैंस के निर्माण के लिए प्रयत्न किया था. भैंस की उत्पत्ति के बारे में बहुत सारी दंतकथाएं हैं.

हार का बदला

चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने राज्य का विस्तार करते हुए बेबीलोनिया के शासक सेल्यूकस को महत्वपूर्ण युद्ध में हराया था. चंद्रगुप्त ने सिंकदर से भारत की हार का बदला सेल्यूकस को हराकर लिया था. सिकंदर का सेनापति सेल्युकस जब चंद्रगुप्त मौर्य से युद्ध में हार गया था क्योंकि महान सम्राट चंद्र गुप्त मौर्य के समय गाय मातायें बहुत ही अधिक सुखी थी. गाय माता का दूध पीकर चंद्रगुप्त के सैनिक ताकतवर, बुद्धिमान, दूरदर्शी थे. सैनिकों में थकान बहुत ही कम रहती थी.

भैंस का विकास

सिकंदर का सेनापति सेल्युकस अपनी युद्ध की हार का बदला लेने के लिये अपनी बहन हेलन की शादी चंद्रगुप्त मौर्य के साथ पूरी तरह से सोच समझकर की थी और शादी के समय अपनी पूर्व योजना के अनुसार बहुत अधिक संख्या में बढिया प्रजाति की भैंस को दहेज में चंद्रगुप्त मौर्य को देकर भारत में भैंस का प्रवेश करवाया था.

आलस एवं सुस्ती

सेल्यूकस चाहता था कि भारत के लोग गाय माता के दूध के बदले में भैस का दूध ही पीयें और भैंस के समान ही शरीर से मोटे, सुस्त तथा आलसी और मंद बुद्धि बन जायें. चंद्रगुप्त मौर्य के समय में भैंस को बढ़ावा दिया गया था. लोगों ने गाय के बदले में भैंस का दूध पीना प्रारम्भ कर दिया था. भैंस का दूध पीने के कारण ही भारत में धोखाधड़ी, छल कपट, लालच, हिंसा, हत्या को बढ़ावा मिला था. भारत का नैतिक पतन भी प्रारम्भ हुआ था.

अंग्रेजों के द्वारा भैंस का बढ़ावा

सेल्यूकस के मन की बात अंग्रेजों ने भारत में 1600 से आने के बाद 347 सालों में और मजबूत कर दी थी. अंग्रेज भारत के लोगों पर राज करने के लिये भारत के लोगों को मंदबुद्धि बनाना चाहते थे. अंग्रेज जानते थे कि भारत के लोग गाय का दूध पीयेंगे तो मानसिक रुप से पूरी तरह से जागृत रहेंगे और जागृत लोगों पर राज करना असंभव है. अंग्रेजों ने भारत में 1000 साल तक राज्य करने के लिए बहुत ही खतरनाक :ड़यंत्र किया था. अंग्रेज भारत के लोगों के गोप्रेम के कारण बहुत अधिक परेशान थे. अंग्रेजों ने 1857 के विद्रोह में गाय के प्रेम को बहुत ही अच्छी तरह से देख लिया था.

गलतफहमियां

अंग्रेजों ने भैंस के बारे में सुव्यवस्थित ढंग से बहुत अधिक गलत प्रचार पूरे भारत में करवाया था. अंग्रेजों ने भारत के लोगों के मन में बिठाया था कि भैंस का दूध पीने से ताकत बढ़ जाती है. लोगों ने अंगेजों के कहने पर गायें बेचकर भैंस खरीद ली थी. गाय के बदले में भैंस का दूध पीना प्रारम्भ किया था. आज भी भारत में भैंस का दूध ताकत के नाम पर ही पीया जाता है. अंग्रेजों के गलत प्रचार के कारण ही भैंस को पालने का कार्य गांव गांव में तेजी से विकसित हुआ था. अंग्रेजों के भारत से चले जाने के बाद अंग्रेजों के द्वारा अपनी पसंद के चुने गये प्रतिनिधि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने गाय के बदले में भैंसों को अंग्रेजों के समान ही बढावा दिया था. नेहरु के मरने के बाद कांग्रेस ने भैंस को सुव्यवस्थित ढंग से भारत में पूरी तरह से बढावा दिया था.

भैंस को बढ़ावा

कांग्रेस ने स्वतंत्र भारत में अंग्रेजों की इच्छा के कारण ही बहुत ही लम्बे समय तक राज किया है. कांग्रेस सरकार के भैंस बढाने की नीति के कारण ही भारत में गाय के दूध के बदले में भैंस का दूध पीने की परम्परा बढ गयी थी. भारत में वर्तमान में भैंस की विश्व की सबसे बढिया जातियां पायी गयी हैं. भैंस के दूध को बढ़ावा देने के लिए भारत में दूध के मूल्य का निर्धारण वसा के आधार पर किया गया है. वसा के आधार पर दूध का मूल्य निर्धारण करने के कारण ही भैंस का दूध गाय के दूध से बहुत अधिक मंहगा बिकता है. गांव में आज भी गाय का दूध मात्र 6 रुपये किलो बिकता है. महानगरों में आज भैंस का दूध 25 रुपये किलो बिकता है.

बेईमानी

भदावरी भैंस के दूध में वसा की मात्रा 7 से लेकर 13 प्रतिशत है. वसा अधिक होने के कारण ही भैस का दूध बहुत अधिक मंहगा बिकता है. भैंस का दूध गाढ़ा होता है इसलिये भैस के दूध में पानी मिलाने की शुरुआत भी भारत में की गयी थी.

साढ़े 31 किलो दूध

भारत में मुरा भैंस ने एक दिन में साढे 31 किलो दूध देने के कारण अपनी मजबूत जगह बना ली है. मुरा भैंस अधिक दूध देने के नाम पर विश्व में 100 देशों में अपना अलग स्थान बना चुकी है. भैंस को भारत में गाय के बदले गांव में सम्पन्नता का प्रतीक माना जाने लगा है. गांवों में लोगों ने गायें बेच कर भैंस खरीदनी प्रारम्भ कर दी. मुरा भैंस पालने पर पंजाब सरकार के द्वारा भैंस पालकों को नगद पुरुस्कार देने के कारण ही मुरा भैंस का बोलबाला पूरे भारत में हो गया है. भारत में पशुपालन विभाग के द्वारा योजनाबद्ध तरीके से भैंस के लिये लोगों को बहुत अधिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है.

समस्याएं

भारत में सभी बैंकों में भी गाय के बदले सिर्फ भैंस के लिये कर्ज भी बहुत ही आसानी से उपलब्ध है. वर्तमान में महानगरों में भैंस का दूध ही बहुत अधिक उपलब्ध हो रहा है. महानगरों में गाय का दूध चिकित्सा के लिये बहुत ही परेशानी के बाद मिल पाता है. महानगरों में गंदगी के नाम पर गाय पालने पर संपूर्ण प्रतिबंध है. अंग्रेजों ने सरकारी कर्मचारियों पर गाय पालने पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया था जो आज भी वैसे का वैसा ही चल रहा है. सरकारी कर्मचारी अपने निवास में अंग्रेजों के बनाये नियम के अनुसार आज भी गायें नहीं रख सकता है. यदि गायें रखता है तो उस पर कानूनी कारवाही की जाती है.

पतन

कलकता में तो गायों को महानगर से पूरी तरह से बाहर कर दिया गया है जिसके कारण महानगर के लोग गोग्रास देने से भी वंचित हो गये हैं. भारत का नैतिक एवं आर्थिक पतन भी भैंस के कारण ही निरन्तर होता गया है. वर्तमान में भैंस के दूध से दूध पावडर, खोआ, पनीर, चीज, मक्खन, घी, मिठाईयां बहुत अधिक बनती हैं.

पूरे विश्व में भारत से गोवंश

पूरे विश्व ने भारत से बहुत बढिया प्रजातियों की गायें अपने यहां मंगवाकर अपना आर्थिक और सामाजिक विकास बहुत तेजी के साथ किया था. सेल्यूकस बहुत ही अच्छी तरह से जानता था कि भारत के लोग भैंस का दूध पीकर अब कभी भी विदेशी लोगों से युद्ध में जीत ही नहीं पायेंगे. सेल्यूकस के अनुसार ही भारत की युद्ध में लगातार हार हुई थी.

1000 साल की गुलामी

भारत में भैंस के प्रवेश के कारण भारत के लोगों में बहुत ही तेजी से परिवर्तन हुआ और भारत के पतन की शुरुआत भी हो गयी. भारत के लोग भैंस के प्रवेश के बाद लगातार विदेशी आक्रमणकारियों से हारते रहे. भैंस के कारण ही भारत 1000 साल से अधिक की गुलामी में रहा है. 1000 साल की लंबी गुलामी ने भारत के लोगों की मौलिक सोच पूरी तरह से ही बदल दी है. गुलाम सिर्फ यस सर, ओके सर यानी हां हां करता है और गुलाम ना कहना ही भूल चुका है. ना नहीं कहने के कारण विरोध करना ही भूल गया है.

भैंस के कारण गंभीर समस्याएं

भैंस के कारण ही भारत पर थोपे गये आंतरिक युद्ध में निरन्तर हारता रहा है. पूरे विश्व में भारत से 100 से अधिक देशों में भैंसें पहुंच चुकी हैं. असंतुलन, अस्थिरता, आतंक, अशांति, तनाव, भय, युद्ध, विनाश के लिये भी भैंस पूरी तरह से जिम्मेदार है क्योंकि पूरे विश्व में भैंस के बदले गाय को महत्व देने पर सात्विकता, देवत्व, भाईचारा, प्रेम, दया, ममता में असाधारण वृद्धि निश्चित ही होगी. भारत विश्व में अपने गोधन के कारण प्रसिद्ध था. भारत में ज्ञान, संस्कृति, धर्म का अध्ययन करने के लिये पूरे विश्व से जिज्ञासु बहुत बडी संख्या में आते थे. भारत का अतिथि धर्म सम्पन्नता के कारण विश्व में बहुत अधिक लोकप्रिय हुआ था. लेकिन आज भारत विश्व में सिर्फ भैंस के कारण उत्पन्न स्वार्थ से गरीबी, गंदगी, आलस, बेइमानी के कारण बदनाम है.

एशिया में भैंसों को बढ़ावा

मलेशिया, इजीप्ट, आस्ट्रेलिया, टर्की, भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश में ही भैंस का चलन वर्तमान में सर्वाधिक है. पूरे विश्व में भैंस कोई नहीं पालता है क्योंकि भैंस की किसी भी चीज का मानव के जीवन में कोई भी उपयोग ही नहीं है.

भैंस यानी महि-ा

भैंस का गोबर तंबाकू जैसी तामसी वस्तु के उत्पादन करने के लिए उत्तम है. भैंस का मूत्र किसी काम नहीं आता है. भैंस बहुत अधिक बीमार पड़ जाती है. भैंस के बच्चे बहुत ही अधिक मर जाते हैं. भैंस बहुत ही अधिक खाती है. भैंस बहुत ही कम समय दूध देती है. भैंस की पूजा कोई नहीं करता है. भैंस अशुभ मानी जाती है इसलिए भैंस का नाम लेने पर नहाना पड़ता है. भैंस के दर्शन करने पर अशुभ होता है. भैंस राक्षसों की सम्पत्ति है. भैंस के देह पर हाथ फेरने पर मृत्यु निकट आती है. भैंस के कारण घर में अशांति आती है. भैंस के गोबर के कारण घर में गरीबी आती है. भैंस के गोबर में कीडे पड जाते हैं. भैंस के गोबर में से भयकंर बदबू आती है. भैंस के थन बहुत ही कडे होते हैं. भैंस बहुत ही आसानी से दूध भी नहीं देती है. दूध देने के लिये भैंस को आइसोटोक्सीन के इंजेक्शन की आदत पड जाती है.

भैंस के दूध से बीमारियां

भैंस का दूध बहुत ही अधिक गाढा, स्वादहीन, सफेद रंग का होता है तथा भैंस का दूध मानव के लिये पचने में बहुत ही भारी होता है जिसके कारण मानव के बच्चों को पीने के लिये चिकित्सकों के द्वारा पूरी तरह से मना किया जाता है. भारत का सबसे बडा दुर्भाग्य हे कि भारत में भैंस के दूध पीने के कारण जन्म से लेकर 5 साल की आयु के 50 प्रतिशत बच्चे भयंकर बीमारियों के कारण बहुत अधिक कमजोर हैं. विश्व स्वास्थय संगठन के द्वारा किये गये अध्ययन के अनुसार भैंस के दूध का निरन्तर सेवन करने पर मानव के खून में कोलेस्ट्राल की मात्रा बहुत ही अधिक बढ जाती है. मानव शरीर में लगातार भैंस का दूध पीने पर चर्बी बढ जाने से शरीर भैंस जैसा ही हो जाता है और बुद्धि भी भैस जैसी ही हो जाती है.

हिंसक गतिविधियां

मानव शरीर का वजन बहुत ही अधिक हो जाता है. मानव की सहन करने की शक्ति भी भैंस का दूध पीने पर धीमे धीमे

कम हो जाती है. शरीर में थकान भी भैंस का दूध नियमित सेवन करने पर बहुत ही अधिक लगने लगती है. बुढापा जल्दी आ जाता है. सुबह देर से उठना, रात्रि में देर तक जागना, मांसाहारी तथा तामसिक एवं नशीली वस्तुओं का अधिक सेवन करना, हिंसक गतिविधियों में डूबना आदि गलत बातें भैंस के दूध पीने वाले के लिये सामान्य मानसिकता है. भैंस में दया ममता, वात्सल्य, देवत्व का पूरी तरह से अभाव है. भैंस के दूध के नियमित सेवन करने से मानव में राक्षसी प्रवृत्तियां हिंसा, बलात्कार, हत्या बहुत ही अधिक उभरने लगती हैं.

मांस के लिए भैंस पालन

ओस्ट्रेलिया जैसे विकसित देश में भी भैंस पालने के बाद कोई भी व्यक्ति भैंस का दूध नहीं पीता है. आस्ट्रेलिया में मांस के लिये भैंस का पालन किया जाता है. ब्राजील तथा अमेरिका में भैंस है ही नहीं. भैंस पर बारिश के दिनों में आकाश में से बिजली गिरती है. भारत का बहुत बडा दुर्भाग्य है कि विश्व की 51 प्रतिशत भैंसे यानी 11 करोड भैंसें भारत में हैं. भैंसों की 9 प्रजातियां भारत में बहुत ही गर्व के साथ पाली जा रही हैं. भारत में भैंस के बारे में बहुत सारी गलतफहमियां मौजूद हैं.

गलतफहमियां

आजादी के बाद भारत में सबसे बडी गलतफहमी यह है कि भैंस का दूध पीने से ताकत बढती है. सच्चाई यह है कि विश्व चैम्पियन पहलवान दारासिंह सिर्फ गाय माता का ही दूध पीते हैं. एशियाई खेलों में स्वर्णपदक विजेता मास्टर चंदगीराम जी गाय माता का ही दूध पीते हैं. विश्वनाथ आनन्द भी सिर्फ गाय माता का ही दूध पीकर वर्तमान में शतरंज में लगातार विश्व विजयी बने हैं. गाय की तुलना में भारत में भैंस का दूध 55 प्रतिशत उपयोग में लाया जा रहा था जो वर्तमान में 70 प्रतिशत तक पहुच चुका है. 1998-99 में भैंसों के कारण 63077 करोड रुपये भारत को प्राप्त हुए हैं. भैंसों के कारण भारत दूध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर आ गया है.

केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान

केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार हरियाणा 125001 दूरभा-न 01662 276631 भैंस को भारत में बहुत अधिक बढावा देने के लिये स्थापित किया गया है. भारतीय धर्म के जानकारों के अनुसार भैंस के पुत्र भैंसे पर काले रंग के यमराज, शनि, कलियुग बैठते हैं. भैंसे पर यमराज को बिठाने के पीछे वैज्ञानिक महत्व यह है कि हमें कभी भी मृत्यु की सवारी को अपने पास नहीं फटकने देना है. विश्व के विकसित देश भैंसे को अपने पास नहीं आने देते हैं.

भैंसे पर शनि

भारत में लोग हमेशा ही सबसे क्रूर, तीव्र ग्रह शनि से बहुत ज्यादा परेशान रहते हैं. शनि यानी शने शने यानी धीमे धीमे. शनि सदैव रोम छिद्रों में निवास करता है तथा रोम छिद्रों को बंद करता है. रोम छिद्रों के बंद रहने के कारण ही मानव बीमार रहता है. शनि वर्तमान में भारत के मानव की बुद्धि को बहुत ही अधिक प्रभावित कर रहा है. शनि गाढे बैंगनी रंग की तरंगे छोडता है. मानव के मस्तिष्क पर शनि की तरंगों का सीधा घातक प्रभाव पडता है जिसके कारण मानव अपना संतुलन खो देता है. शनि का सीधा संबंध रासायनिक खाद, कीटनाशक, नशीले पदार्थ चाय, कोफी, शराब, औषधियां, पुलिस, न्यायालय, दुर्घटना, तामसी वस्तुएं, दवाइयां, मादक वस्तुएं, मांस, अंडे के साथ बहुत ही गहराई से है.

गंदगी

भैंस बहुत ही धीमें धीमें यानी शने शने चलती है. भैंस गंदगी पसंद करती है. भैंस पानी में ही रहना बहुत ही अधिक पसंद करती है. भैंस कीचड में लेटकर सदैव मस्त रहती है. भैंस बहुत ही अधिक स्वार्थी होती है. भैंस कामचोर होती है. भैंस की सहन करने की क्षमता बहुत ही कम होती है. भैंस अपनी मनमानी करना पसंद करती है. भैंस को गुस्सा बहुत ही अधिक आता है. भैंस को जब गुस्सा आता है तब वह अपने सींग पर उठा कर जोर से मानव को जमीन पर पटक भी देती है.

कलियुग में भैंसों को बढ़ावा

भारत में भैंस का उपयोग खेती में भी नहीं होता है. कलियुग ने महाभारत के पश्चात महाराज परीक्षित से पृथ्वी पर 5 स्थान मांगे हैं. 5 स्थानों पर कलियुग का निवास है. वर्तमान में कलि यानी कलपूर्जा यानी ट्रेक्टर जैसे खतरनाक यंत्र यानी मशीनों का युग है. भैंस का बच्चा जब जन्म लेता है तो लम्बे समय तक लगभग 2 घंटे तक अपने स्थान पर सुस्त पडा रहता है इसलिये भैंस के बच्चे को पडा, पाडा, पड़वा या पड़िया कहते हैं. भैंस का बच्चा जन्म के बाद अपनी बुद्धि के मंद विकास के कारण ही अपनी मां को तुरन्त पहचान नहीं पाता है. भैंस भी अपने बच्चे को गाय माता की तुलना में कभी प्यार नहीं करती है. भैंस में सूर्यकेतु नाडी नहीं होती है इसलिये भैंस सूर्य के प्रकाश में रहना पसंद नहीं करती है.

रेगिस्तान में भैंस नहीं

भैंस को बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है इसलिये भारत में रेगिस्तान में भैंस कम पानी वाली जगहों में रहना पसंद नहीं करती है. जैसलमेर में पानी की भारी कमी रहने के कारण ही भैंस नहीं मिलती है. जैसलमेर में गायों की संख्या बहुत ही अधिक है. सिर्फ एशिया में ही भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश में भैंस का चलन बहुत ही अधिक है. भैंस की संख्या भारत और पाकिस्तान में बहुत अधिक होने के कारण ही 60 सालों से भारत और पाकिस्तान में जबरदस्त तनाव दिखाई देता है. भैंस की संख्या बंगलादेश में बहुत अधिक होने के कारण ही बंगलादेश में सीमा पर आतंकवाद के कारण बहुत ही अधिक तनाव है.

भारतीय गोवंश का निरन्तर पतन

5235 सालों में भारतीय गोवंश का निरन्तर पतन बहुत ही तेजी से हुआ है. भारतीय गोवंश का पतन करने के लिये विदेशी शासक पूरी तरह से जिम्मेदार हैं. विदेशी शासकों ने हमारी अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से बरबाद करने के लिए हमारे गोधन पर सीधा हमला किया. विदेशी शासकों के कारण ही हम गोधन से पूरी तरह से वंचित रहे हैं. हमारे अच्छे गोवंश को विदेशी शासक अपने साथ में ले गये. विश्व में भारत से ही गोवंश गया है. वर्तमान समय में भारत में मौजूद विदेशी कंपनियों को बाहर करना अनिवार्य है.

2 लाख 30 हजार बढ़िया बैल

भारत पर लगातार 1000 साल से अधिक समय तक हुण, मुसलमान, यवन, डच, पुर्तगाली, अंग्रेजों ने राज किया था. आक्रमणकारी गोवंश को लगातार मार रहे थे. भगवान कृ-ण के समय भी मुस्लिम आक्रमणकारी बहुत अधिक ताकतवर थे इसलिए भगवान कृ-ण ने बहुत ही चालाकी एवं छल के साथ कार्य किया था. भगवान कृ-ण ने कालयवन जैसे ताकतवर मुसलमान को मुचकुन्द से मरवा दिया था. मुस्लिम आक्रमणकारियों ने गोवंश का कतलेआम किया था. मुस्लिम आक्रमणकारियों ने भारत को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाया था. भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों के आगमन के पूर्व गोवंश की स्थिति बहुत ही अच्छी थी. ग्रीस का राजा सिकंदर भारत से 2 लाख 30 हजार बढ़िया बैल ग्रीस लौटते समय अपने साथ ले गया था. सिकंदर के कारण ही उस समय भारत में अच्छे बैलों की भारी कमी उत्पन्न हो गयी थी.

गोसंरक्षण में गोशालाओं की भूमिका

नेशनल ब्यूरो ओफ एनिमल जिनेटिक रिसोर्सेस जीटी रोड बायपास करनाल हरियाणा 132001 09416030654 के द्वारा 27 एवं 28 दिसम्बर 2005 में रा-ट्रीय सम्मेलन का आयोजन गोशालाओं के सुधार करने के लिए तथा भारतीय गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण करने के लिए आयोजित किया गया था. सम्मेलन के बाद में सम्मेलन की पूरी जानकारी स्मारिका के रुप में प्रकाशित की गयी थी. अंग्रेजी में अधिक लेख प्रकाशित किये गये थे. हिंदी में बहुत ही कम लेख प्रकाशित किये गये थे. डाक्टर डीके सदाना जी के द्वारा मुख्य भूमिका निभायी गयी थी.

गोशालाओं का महत्व

पूरे भारत से आये जानकारों में श्री भंवरलाल जी कोठारी अध्यक्ष राजस्थान गो सेवा आयोग जयपुर राजस्थान ने 30 साल के लंबे अनुभव के आधार पर अपने सारगर्भित संबोधन में विस्तार से गोशालाओं के बारे में प्रकाश डाला. श्री सूर्यकांत जी जालान सुरभि शोध संस्थान रविंद्रपुरी वाराणसी उत्तरप्रदेश के द्वारा अपने 60,000 गोवंश के अनुभव के आधार पर विस्तार से बताया.

गोवंश का सम्मान

श्री मनसुखभाई सुभागिया जी जलक्रांति ट्रस्ट राजकोट गुजरात ने अपने गीर गोवंश के बारे में विचार रखे थे. श्री हरिओम जी तायल श्री गोशाला सोसायटी पानीपत हरियाणा ने भी अपने विचार रखे थे. बहुत सारी बातें सामने आयी थी. गोवंश के संरक्षण करने के लिए गोशालाओं एवं गोरक्षा केंद्रो, पिंजरापोलों की भूमिका महत्वपूर्ण है. गोशालायें गोवंश के सम्मान करने के लिए एक मंच के समान है.

नये केंद्र

अखिल विश्व कामधेनु परिवार का वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर 2011 से 100 सालों में 1 लाख गोवंश संरक्षण केंद्र खोलने का लक्ष्य है. सर्वेक्षण कर पूर्व तैयारियां प्रारम्भ की गयी हैं. हजारों करोड़ रुपयों तथा करोड़ों समर्पित गोवंश सेवकों की आवश्यकता है. गलत लोग जो वर्तमान में गोवंश सेवक के नाम पर धब्बा हैं उनको हटाना बहुत ही आवश्यक है.

गलत लोग

गलत लोग जो गोवंश के नाम पर सिर्फ धन एकत्र करने में लगे हैं तथा गोवंश संवर्धन नहीं कर रहे हैं उनको समाज में रखना बहुत बड़ी समस्या है. धन के लिए हमें योजना तैयार करने के लिए चिंतन करना है. सरकार पर इस महान कार्य के लिए हमारे द्वारा कभी भी भरोसा नहीं किया जा सकता है. वर्तमान केंद्र सरकार के खिलाफ हमारा शंखनाद है.

नास्तिक सरकार

वर्तमान केंद्र सरकार तो राम को ही नहीं मानती है और गोवंश को भी नहीं मानती है. आवश्यकता पड़ने पर हमें वर्तमान में केंद्र तथा राज्य सरकार को भी बलपूर्वक बदलनी पड़ सकती है. बल प्रयोग करने के लिए हमें अपनी उर्जा संचित करनी है. गोवंश के सम्मान करने के लिए हमें किसी भी हद तक जाना पड़ सकता है. हम गोवंश के सम्मान के लिए किसी से कोई समझौता नहीं कर सकते हैं.

गोवंश सेवकों की कमी

वर्तमान समय में भारत में गोशालाओं में अच्छे गोवंश सेवकों की भारी कमी है. हर गांव में बेरोजगार शिक्षित युवकों को गोवंश सेवक बनाने के लिए अच्छे पारिश्रमिक तथा आवश्यक सभी सुविधाओं को देने के लिए व्यवस्था कर अभियान चलाने के लिए हमें प्रयत्न करने हैं. गोवंश सेवक तैयार करने पर गोवंश का सम्मान अच्छी तरह से होगा. गो को कामधेनु बनाना है.

कामधेनु

कामधेनु ही हमारा मार्ग अच्छा करेगी. शिक्षित एवं गोवंश महाविज्ञान में संपूर्ण प्रशिक्षित गोवंश सेवक हर गांव में भी तैयार करने पर हर गांव में गोशाला खोलना संभव है. हर गांव में गोशाला

खोलने पर ही गांव की प्रगति संभव है. वर्तमान में हर घर में गोवंश रखना संभव नहीं है. हर निवास में गोवंश रखने पर ही आदर्श अवस्था होगी. हर गांव में गोंवश सेवक तैयार करने के लिए बहुत सारे संगठन वर्तमान में अलग अलग कार्य कर रहे हैं. अलग अलग कार्य करने के कारण कभी भी परिणाम नहीं आयेंगे.

गोचारण की आवश्यकता

गोवंश सेवकों की कमी के कारण ही गोवंश की सेवा में कमी है. गोवंश बोलते नहीं है लेकिन मानव से अच्छे व्यवहार की अपेक्षा अवश्य ही रखते हैं. गोवंश को रहने के लिए साफ एवं सुरक्षित हवादार आवास की आवश्यकता है. गोवंश को अच्छी सेवा की आवश्यकता है. गोवंश को 2 किलोमीटर घूमने के लिए गोचारण की भूमि की आवश्यकता है. सूर्य का प्रकाश सूर्योदय से सूर्यास्त तक पूरे समय तक मिलना चाहिए. गोवंश को हमेशा ही सुख एवं शांति चाहिए. आवाज के कारण गोवंश को बहुत ही अधिक परेशानी रहती हे.

साफ सफाई पर ध्यान

गोवंश को दो समय पर हरी घांस भरपेट मिलनी आवश्यक है. एक पूर्ण विकसित गोवंश को 45 किलो से लेकर 100 किलो तक हरी ताजी घांस मिलनी आवश्यक है. तीन से चार समय साफ जल मिलना चाहिए. दूध देने वाले गोमाता को दाना भी मिलना चाहिए. संगीत से गोवंश बहुत ही प्रसन्न रहते हैं. गोवंश तथा गोशाला की साफ सफाई पर बहुत ही अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है.

मालामाल

अच्छी सेवा करने के कारण ही गोवंश मानव को मालामाल कर देते हैं. गोवंश को मानव का प्यार चाहिए. मानव का प्यार मिलने पर गोवंश का संवर्धन करना संभव है. गोवंश सेवकों को तैयार करने के लिए वर्तमान में सरकार अपने स्तर पर तैयार कर रही है. मानदेय तथा अन्य सुविधाएं नहीं मिलने से सरकार के द्वारा तैयार गोवंश सेवक मानसिक रुप से असंतु-ट हैं.

लापरवाही

गोशालाएं वर्तमान में भारत में लापरवाही, अज्ञानता, आलस, गरीबी के कारण ही पूरी तरह से स्वावलंबी नहीं हैं. पैसों की कमी के कारण गोवंश सुखी नहीं है. गोवंश की देखरेख पूरी तरह से नहीं की जाती है. खाने के लिए हरी घांस नहीं मिलती है. सूखा भूसा पैरा देने के कारण गोवंश का कमजोर रहना स्वाभाविक है. पीने के लिए साफ पानी नहीं मिल रहा है. गोवंश बीमार होने पर चिकित्सा की उचित सेवा नहीं मिल पा रही है. अकाल मरने के कारण गोवंश का नाश हो रहा है.

सांढ की कमी

गोशालाओं में वर्तमान में सांड की भारी कमी है. सांड की कमी रहने से नस्ल सुधार कमजोर है. नस्ल सुधार कमजोर होने के कारण गायों का दूध कम मिल रहा है. दूध कम मिलने के कारण ही बछड़ों को भी दूध नहीं के बराबर मिल पा रहा है. बछड़े जन्म लेने पर बहुत ही कमजोर रहते हैं. कमजोरी के कारण ही मर जाते हैं. गोशालाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए गोवंश महाविज्ञान ग्रंथ की आवश्यकता है. गोवंश महाविज्ञान ग्रंथ के अध्ययन से गोपालन के लिए संपूर्ण ज्ञान मिलने पर कार्य आसान हो जायेगा.

मानव के द्वारा उपेक्षा

मानव को दूध की पूर्ति गाय माता ही करेगी. वर्तमान में गायें धीरे धीरे कर दूध कम देने के कारण ही मानव के द्वारा उपेक्षा करने के कारण ही कतलखाने में चली जाती हैं. कतलखानों में जाने से रोकने के लिए गायों की नस्लों में सुधार करने के लिए गोशालाओं में गोपालकों के लिए प्रशिक्षण कपार्ट, भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड, गो सेवा आयोग के वित्तीय सहयोग से 1 दिन से 7 दिनों के शिविर चलाये जाते हैं. शिविरों की अवधि 1 माह से 6 माह करने की आवश्यकता है. कामधेनु विश्वविद्यालय के अंतर्गत कुछ गोशालाओं में पाठशालायें चलायी जा रही हैं. गोशालाओं में नियमित कामधेनु पाठशाला खोलनी आवश्यक है.

गोवंश संरक्षण केंद्र

कतलखाने बंद करने के लिए भी गोवंश संरक्षण केंद्र ही कार्य करेंगे. गोवंश को पूरे भारत में साप्ताहिक बाजारों में से ही कसाई हर सप्ताह खरीद कर ले जाते हैं. साप्ताहिक बाजार के पास में गोवंश संरक्षण केंद्र प्रारम्भ किये जायें. पूरे भारत में साप्ताहिक बाजारों में गोवंश संरक्षण केंद्र के प्रशिक्षित कार्यकर्ता हर सप्ताह गोवंश को ले कर अपने संरक्षण में रखें. जब साप्ताहिक बाजारों में गोवंश कसाई को नहीं मिलेंगे तो कतलखाने अपने आप बंद हो जायेंगे.

गोवंश संरक्षण केंद्र

कतलखानों के आसपास के मार्ग पर गोशालाओं को खोलना आवश्यक है जिससे गोवंश कतलखानों में ले जाते समय वाहनों में से रास्तें में पकड़े जाने पर सुरक्षित रखे जा सकें. गोवंश की सुरक्षा के साथ साथ उनका संपूर्ण विकास किया जा सके.

गोवंश सड़क पर

वर्तमान समय में गोसंरक्षण करने के लिए गोशालाओं, गोरक्षा केंद्र, पिंजरापोल तेजी से बढ़ रहे हैं. लोगों में गोवंश की उपेक्षा करने की भावना चरम सीमा पर पहुंच गयी है. पूरे भारत में अधिकांश समय में गोवंश भूख के कारण ही बाहर सड़क पर ही मुंह मारने लगते हैं. बाहर वाहनों से दुर्घटना के कारण घायल भी हो जाते हैं. गोवंश बाहर रहने के कारण ही बीमार और कमजोर हो जाते हैं.

व्यक्तिगत गोशाला

लोग अपने घरों में से बीमार और कमजोर गोवंश को गोसंरक्षण केंद्रों में छोड़ जाते हैं. गोसंरक्षण केंद्रों में वर्तमान में बहुत बड़ी मात्रा में गोवंश हैं. गोवंश की देखभाल सही ढंग से नहीं हो पाती है. भारत में कुल गोवंश का एक भाग इन गोशालाओं में रहता है. भारत में बहुत सारी गोशालायें भावना एवं व्यापार के कारण ही व्यक्तिगत चलायी जा रही हैं. व्यक्तिगत गोशालाओं में सरकारी सहायता भी नहीं ली जाती हैं.

दूध मंहगा

कुछ लोग अपनी गोशालाओं के लिए दान लेना पसंद नहीं करते हैं. व्यक्तिगत गोशालायें पूरी तरह से स्वावलंबी हैं क्योंकि इन गोशालाओं में दूध बहुत ही मंहगा बेच रहे हैं. दूध 25 रु. लीटर तक वर्तमान में बिक रहा है. देशी गाय का दूध अनुसंधान के कारण 5300 रसायन ज्ञात होने के कारण कुछ समय में ही जैविक के नाम पर 47 रु. लीटर तक पहुंच जायेगा. दूध 47 रु. सस्ता लगेगा. गाय के दूध से तैयार की गयी दही 20 से 50 रु. तक बिक रही है.

छाछ निःशुल्क

छाछ भी मुफत से लेकर 8 रु. लीटर तक बिक रही है. दूध के बहुत सारे उत्पाद रसगुल्ला 40 रु. से 100 किलो तक, राजभोग, चमचम, रसमलाई, पेड़े, श्रीखंड, गोरसपाक, रबड़ी, बासुंदी, लस्सी, दूधपाक, मिल्क शेक, बरफी, पायसम, खीर, मेवा पकवान, मोहनथाल आदि भी बहुत अच्छे मूल्य पर बिक रहे हैं. दूध के उत्पादों के कारण गोशालाएं लाभ में हैं.

क्रीम से घी

दूध से क्रीम का घी तैयार कर 190 से लेकर 400 रु. तक बिक रहा है. दही से मक्खन बनाकर घी 500 से 800 रु. किलो बेच रहे हैं. गाय का घी जैविक के नाम से 2000 रु. लीटर तक बहुत ही आराम से भारत में पहुंच जायेगा. पंचगव्य घी दवा के नाम पर 1600 से 5000 रु. किलो तक बेच रहे हैं. महापंचगव्य घी 2 लाख रु. किलो तक विश्व में आसानी से पहुंच जायेगा. दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी की बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखकर व्यक्तिगत गोशालाओं को बढ़ावा दिया जाना बहुत ही आवश्यक है.

नयी सूची

व्यक्तिगत गोशालाओं की जानकारी भी कहीं पर नहीं मिलने के कारण ही बहुत ही सीमित है. व्यक्तिगत गोशालाओं की सूची तैयार करने के लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता है. अच्छी नस्ल की गीर गायें अधिक दूध के लिए व्यक्तिगत गोशालाओं में रखी गयी हैं. साहीवाल, थारपारकर, लाल सींधी नस्लों का विकास किया गया है. बछड़ों को भरपेट दूध पिलाया जाता है.

नंदीशाला

अच्छे सांड नंदीशालाओं में गायों के लिए विकसित किये गये हैं. भारत में वर्तमान में सुप्रसिद्ध मंदिरों के द्वारा भी बहुत ही बड़ी गोशालायें अपने बल पर चलायी जा रही हैं. गोशालाओं में नंदी का विकास पहले बहुत ही अच्छी तरह से किया जाता था. वर्तमान में नंदी के विकास पर कम ध्यान देने के कारण कमी उत्पन्न हो गयी है. हर गांव में मंदिर अप्रत्यक्ष रुप से गोवंश के संरक्षण, संवर्धन करने के लिए लगे हैं.

संवर्धन

गोशालाओं में नंदी के विकास पर पूरा ध्यान देने पर नंदी की कमी पूरी की जा सकेगी. लोग अपनी भावना से अच्छे गोवंश तो दान में देते हैं. लोगों से दान के रुप में नंदी लिए जायें. मंदिर के द्वारा संचालित गोशालाओं में गोवंश की बहुत ही अच्छी देखभाल की जाती है.

अपार संपत्ति

मंदिर के द्वारा संचालित गोशालाओं में दवा बनाने का कार्य भी कही कही पर किया जा रहा है. दवा बनाने का कार्य सभी मंदिरों की गोशालाओं में किया जाये तो गोमाता के प्रसाद के रुप में दवा आसानी से निःशुल्क या कम मूल्य पर गरीब आदमी को मिल सकेगी. मंदिरों के पास में सोने चांदी, हीरे मोती, जमीन के रुप में अपार स्थायी संपति मौजूद है इसलिए सरकार से गोवंश के विकास करने के लिए अनुदान नहीं लेते हैं. मंदिरों की भारत में कभी भी कमी नहीं है.

मंदिर में गोवंश संवर्धन

मंदिरों में आवक की कमी कभी भी नहीं है. मंदिर ही यदि गोवंश के संरक्षण करने के लिए जागरुक रहें तो समस्या का समाधान जल्दी हो जायेगा. मंदिर में दवा का वितरण भी सरलता के साथ होगा. मंदिर में भावना के कारण गोवंश का संवर्धन करना संभव है. मंदिर के मठाधीश गोवंश के विकास करने के लिए वाचनालय में सभी साहित्य विकसित करें तो कार्य अच्छी तरह सें चलता रहेगा. मंदिरों में समय समय पर सम्मेलनों, बैठकों, प्रशिक्षणों के माध्यम से गोवंश का संवर्धन करना संभव है.

संत के द्वारा गोवंश संवर्धन

संत, कथावाचकों के द्वारा भी अपनी सुविधाओं के अनुसार गोशालायें चलायी जा रही हैं. संतों को भी नियमित आवक एवं संपत्ति बहुत ही अच्छी है. अपनी आवक में से गोवंश के संरक्षण का कार्य कर जीवन सुधार रहे हैं. लोगों से गोदान में अच्छी नस्ल की गीर गायें रखी गयी हैं. संत दवा बनाने का कार्य बड़े स्तर पर करवा रहे हैं.

कथावाचक के द्वारा गोवंश संवर्धन

वर्तमान में कथावाचकों की कमी नहीं हे. कथावाचकों को कथा में अच्छा धन मिल रहा है. कथावाचक दवा बनाने का कार्य कर रहे हैं. कथावाचकों की गोशालाओं का प्रथम लक्ष्य गायों से प्राप्त दूध है. मंदिरों में नियमित दूध से अनेकों पकवान बनाये जाते हैं.

सरकारी सहायता

गोशालाएं सरकारी सहायता पाने के लिए कतलखाने से बचाये गये आवश्यक गोवंश को भी रख रही हैं. इन गोवंश से प्राप्त मूत्र से घनवटी, फिनायल, आंख की दवा 2000 रु. लीटर से 12000 रु. लीटर तक, अर्क, नारी संजीवनी, बालपाल रस, प्रमेहारी, आसव, 250 रु. लीटर से 1000 रु. लीटर तक मंहगी दवाएं तैयार कर रही हैं.

गोमूत्र अर्क पर पेटेंट

भारत में गोशालाओं से आयुवेदिक संस्थाएं गोमूत्र 5 रु. लीटर तक आसानी से खरीद कर ले जाती है. गोमूत्र पर तेजी से विश्व में पेटेंट मिलने के कारण अब 25 रु. लीटर तक गोमूत्र बिक जायेगा.

गोवंश की संख्या में बढ़ोत्तरी

गो सेवा आयोग एवं भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड से सरकारी सहायता पाने के लिए कम से कम कतलखाने से बचाए गये 100 गोवंश आवश्यक हैं. सरकार को 100 से बढ़ाकर गोवंश की संख्या 200 कर देनी चाहिए.

मनमानी

गोवंश गोशालाओं में संचालकों के मनमानी तथा लापरवाही के कारण मर जा रहे हें. अधिकांश गोशालाएं वर्तमान में डेयरी के रुप में ही चलती हैं. गोशालाओं में दूध के लिए वर्णसंकर दुधारु जानवर रखे जाते हैं. भैंसों को भी कहीं कहीं पर रखा जाता है. जीव दया के नाम पर बकरी एवं भेड़ें भी रखी जाती हैं.

भावना

अधिक दूध देने वाले जानवरों को भरपूर हरा चारा तथा दाना भी खिलाया जाता है. साफ पानी भी पिलाया जाता है. देखरेख करने के लिए प्रशिक्षित गोपालक रखे जात हैं. गोवंश का उपचार करने के लिए चिकित्सक रखे जाते हैं. गोचारण करने के लिए घांस के मैदान भी हैं. गोशालाओं में गोवंश के विकास पर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है. वर्तमान में मारवाड़ी तथा व्यापारी वर्ग अपनी भावना के कारण ही धन लगाकर गोवंश संरक्षण करने में लगे हैं. कुछ गोवंश रक्षा केंद्रों में बहुत ही अच्छा कार्य किया जाता है. बिना सरकारी धन लिए भी गोवंश का संपूर्ण विकास किया जाता है.

गोवंश रक्षा

गोरक्षा केंद्रों तथा पिंजरापोलों में कतलखानों से कटने से बचाकर बहुत बड़ी संख्या में गोवंश को रखा जाता है. गोरक्षा केंद्रों में लाये जाने वाले गोवंश दूध नहीं देने के कारण तथा बैल 14 सालों के बाद कमजोर हो जाने के कारण कानून के विचार से उपयोगी नहीं हैं तथा उनके पालन करने पर बहुत ही अधिक खर्च करने की आवश्यकता होती है. विश्व में गोवंश के विकास करने के लिए भारत में किए जा रहे कार्यों के बारे में जागृति उत्पन्न की गयी है.

अनुसंधान

वर्तमान में 15 सालों से भारत में गोवंश को कानून के नजरिये से उपयोगी साबित करने के लिए गोमूत्र गोबर से असाध्य रोगों के लिए पंचगव्य दवा बनाने के लिए कार्य प्रारम्भ किया गया है. बहुत सारे वैद्य मिलकर गोमूत्र एवं गोबर के महत्व को जन जन में समझाने के लिए कार्य कर रहे हैं. गोमूत्र एवं गोबर पर वैज्ञानिक अनुसंधान जारी हैं.

निर्यात

करोड़ों रुपयों की 500 से अधिक प्रकार की पंचगव्य एवं महापंचगव्य की दवाएं सौ साल से केरल एवं कोयम्बतूर तमिलनाडू से भारत से निर्यात की जा रही हैं. अन्य राज्यों में भी पंचगव्य दवाओं को अच्छे मूल्य पर निर्यात करने के लिए संगठित प्रयत्न करने के लिए वर्तमान में जागरुकता दिख रही है. पंचगव्य दवाओं के खरीददार विश्व में बसे भारतीय ही हैं.

100 अरब डालर

अमेरिका हर साल 100 अरब डालर दवाओं पर खर्च करता है. 17 प्रतिशत वृद्धि दवा के खर्च में अमेरिका कर रहा है. अमेरिका में भारत ने 4 पेटेंट पिछले 4 सालों में गोमूत्र के कैंसर पर प्राप्त भी किये हैं. अमेरिका में 80 प्रतिशत भारतीय मूल के निवासी रहते हैं. विश्व में बसे भारतीयों को दवायें देने के लिए सरकार के अलावा हमें भी गंभीरता के साथ विचार कर कार्य करना होगा.

अनुसंधान केंद्र

गोरक्षा केंद्रों में लाखों रु. के अनुसंधान केंद्र तैयार किए गये हैं. अनुसंधान केंद्रों में गोबर गोमूत्र पर बहुत ही तेजी के साथ अनुसंधान किये गये हैं. स्मारिका के माध्यम से इन अनुसंधानों को लोगों को बताया गया है. अनुसंधानों के कारण ही जागृति भी उत्पन्न हुई है. दूध पर भी विश्व में बहुत ही गहन अनुसंधान किये गये हैं. जैविक अलग अलग खाद तथा फसलरक्षक भी तेयार करने का कार्य विश्व में चल रहा है. जैविक खाद का मूल्य बहुत ही अच्छा मिल रहा है.

केचुआ खाद

केंचुआ खाद 3 रु. से 15 रु. किलो तक चाय के निर्यातकों के द्वारा आसाम में बहुत ही बड़ी मात्रा में खरीदा जा रहा है. आसाम में केंचुआ खाद मांग के अनुसार पूर्ति न होने के कारण ही कार्य प्रभावित हो रहा है. विश्व में केंचुआ खाद की मांग में तेजी के साथ वृद्धि हुई है. विश्व में केंचुओं की मांग भी निरन्तर बढ़ रही है. केंचुआ खाद बहुत बड़े स्तर पर बनाने के लिए संगठित प्रयत्न प्रारम्भ किये जा रहे हैं.

1 गाय से 1 लाख

नेडेप काका यानी श्री नारायणराव पंडरी पांडे जी पुसद महारा-ट्र ने कहा था कि हर साल एक गाय से 1 लाख रु. कमाना संभव है. गोमय वस्ते लक्ष्मी यानी गोमय में लक्ष्मी आठ प्रकार के ऐश्वर्य के साथ विराजमान है को साबित कर दिखाना है. आज उनकी बात आम आदमी को भी समझ में आ रही है.

सवा मन सोना

गाय भले दूध न दे लेकिन गोबर और गोमूत्र के उपयोग करने से गाय माता के पेट में जो सवा मन सोना है वह मानव के लिए वरदान है.

नेडेप खाद

नेडेप काका के कारण ही नेडेप खाद गोशालाओं में गाय के गोबर से बहुत बड़े स्तर पर तैयार की जा रही है. नेडेप खाद पर अनुसंधान जारी हैं. अनुसंधान करने के कारण अब नेडेप खाद ज्यादा प्रभावशाली ढंग से बनाना संभव है.

अमृत पानी

श्री मोहन शंकर जी देशपांडे जी के कारण अमृत पानी भी गोशालाओं के द्वारा तैयार किया जा रहा है. 3 लाख किसानों के द्वारा अमृत पानी सिर्फ महारा-ट्र में ही अपनाया गया है. अमृत पानी की मांग भी निरन्तर बढ़ती जा रही है.

सींग खाद

मरे हुए गोवंश के सींग से सींग खाद भी कुछ गोशालाओं में तैयार किया जा रहा है. सींग खाद वर्तमान में भारत में बहुत ही मंहगा बिक रहा है. 2000 रु. से लेकर 4000 रु. किलो तक बिक रहा है. सींग बैक की आवश्यकता महसूस होने लगी है.

कामधेनु डिस्टेम्पर

गोबर से परमाणु विकिरण को सोखने वाले कामधेनु डिस्टेम्पर 30 रु. किलो तक बेचे जा रहे हैं. गोबर से अग्निरोधी कवेलु, टाइल्स, प्लास्टर, नवग्रह धूप 25 पैसे से 1.रु. 25 पैसे तक, नहाने का साबुन, मालिश का तेल, आंख की दवा, अंगराग पावडर 10 रु. से 25 रु., दंतमंजन अधिकतम 60 रु. तक, चर्मरोग मलहम, गोबर गैस तैयार की जा रही है. गोबर से बनने वाला पंचगव्य, मूलतानी आदि नहाने के साबुन बहुत अच्छे मूल्य पर आसानी से बिक रहे हैं. 10 से 15 रु. में साबुन बिक रहा है. फेस पैक भी गोबर से तैयार मंहगा बिक रहा है. बैल से चलने वाले उपकरण विकसित किए गये हैं.

जीव दया

जीव दया की भावना के कारण प्रारम्भ में बहुत ही उत्साह के साथ युवा गोरक्षा केंद्र चलाना चाहते हैं. वर्तमान में अधिकांश पुराने गोरक्षा केंद्र बहुत ही विशाल जमीनों के मालिक हैं तथा उनके पास जनता तथा सरकार का अपार धन भी है. गोचर की भूमि पर सिंचाई की अच्छी व्यवस्था रहने के कारण हरी घांस उगाने की व्यवस्था कुछ जगह पर है.

पैसों में हेरा फेरी

गोरक्षा केंद्रों में बैकों में धन रखने के कारण ही वर्तमान में गोवंश संवर्धन का कार्य कमजोर है. गोरक्षा केंद्रों में सूखा भूसा एवं खराब हरी घांस दी जा रही है. भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड तथा गो सेवा आयोग के आर्थिक सहयोग के कारण ही गोरक्षा केंद्र चल रहे हैं. गोरक्षण केंद्र में गोवंश का ध्यान रखने वाले कर्मचारी ही पैसों में हेराफेरी करने में लगे रहते हैं.

गोरक्षा केंद्रों की संख्या सीमित

कतलखानों की तुलना में गोरक्षा केंद्रों की संख्या बहुत ही सीमित है. कतलखानों के लिए सरकार निरन्तर प्रयत्नशील है. गोरक्षा केंद्रों के लिए सरकार पूरी तरह से उदासीन है. गोरक्षा केंद्र लोग अपने बल पर प्रारम्भ कर देते हैं. बिना पैसों के ही गोरक्षा केंद्र खुल जाते हैं. जनसहयोग के कारण ही जगह न मिलने पर श्मशान में भी गोरक्षा केंद्र चल रहे हैं. गोरक्षा केंद्रों पर गंभीरता के साथ में ध्यान देने की आवश्यकता है.

पहली गोशाला

हमारे भारत में 1878 में आर्य समाज के संस्थापक श्री स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने गोवंश के महत्व को जन जन में पहुंचाने के लिए जरदस्त कार्य किया था. गोकरुणानिधि पुस्तक भी दयानंद जी ने लिखी थी. हरियाणा में रेवाड़ी जिले में एक गोशाला की नींव रखी थी.

वाहनों से गोवंश परिवहन

हरियाणा से बहुत बड़ी संख्या में गोवंश कटने के लिए वाहनों से कतलखाने जाते हैं. गोवंश को कटने को जाने से रोकने के लिए बहुत सारे गोरक्षा केंद्र खुल गये हैं. गोरक्षा केंद्र सही ढंग से

संचालित नहीं हो पा रहे हैं. गोरक्षा केंद्रों में गोवंश की देखभाल अच्छी तरह से नहीं होती है.

गोशाला में अधिक गोवंश

वर्तमान में हरियाणा में गोशालाओं में बहुत अधिक गोवंश मौजूद हैं. 7 हजार से अधिक गोवंश वाली गोशाला हरियाणा में है. हरियाणा से गोवंश के कतलखाने जाने का कार्य बंद नहीं हो पा रहा है.

सेना की गोशाला

धीरे धीरे गोशालाएं भारत में हर गांव में खुलती गयी. गांव में तो हर घर में अपार गोवंश मोजूद था. सेना ने भी अपनी दूध की आवश्यकता के लिए गोशालायें खोली थी. सेना ने गोशालाओं के लिए अलग से चारागाह भी विकसित किये थे.

जेलों में गोशाला

भारत में जेलों में भी गोशालायें कैदियों के विकास करने के लिए खुली थी. केंद्रीय जेलों में गोशालाओं के द्वारा कैदियों के व्यवहार में भी क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिले हैं. जेलों की गोशालाओं को बीच में अचानक बंद कर दिया गया था. जेलों में एक बार फिर से गोशालाओं को खोलने का कार्य आरम्भ किया गया है.

विश्व की सबसे बड़ी गोशाला

विश्व की सबसे बड़ी गोशाला भी भारत में खोली गयी है. अकाल के समय में 3 लाख गोवंश रखे गये थे. वर्तमान में 1 लाख 25 हजार गोवंश रखे गये हैं. बदलते समय के अनुसार गोशालाओं का महत्व समझ में आ रहा है. रा-ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन बयूरो करनाल तथा अन्य संस्थाओं के द्वारा नस्लों की संख्या तथा उत्पादन जानने के लिए सर्वेक्षण किया गया है. सर्वेक्षण में यह पता चला है कि हमारी 32 देशी प्रजातियों में अधिकांश खतरे में हे. गोशालाओं का सर्वेक्षण सही ढंग से करने तथा उन्हें समझाने की आवश्यकता है.

अमेरिका में भारतीय गोवंश का चोरी से विकास

अमेरिका में रेड इंडियनों के द्वारा गोवंश को पाला जाता था लेकिन 10 करोड़ रेड इंडियनों को मारने के समय गोवंश का भी कत्ल किया गया था जिससे अमेरिका में एक भी गोवंश नहीं बचा था. अमेरिका ने विश्व से प्रदर्शनी में बढ़िया गोवंश मंगवाकर अपनी आवश्यकता की पूर्ति करने के प्रयत्न प्रारम्भ किये थे. अमेरिका को दूसरे देशों से गोवंश लाने पर आशातीत सफलता नहीं मिल पायी थी. मजबूरन अमेरिका ने भारत के बारे में पता लगाया था ओर अमेरिका भारत से पहली बार 1849 में डाक्टर जेम्स बोल्टन, डेविस फेयर फील्ड काउन्टी, साउथ केरोलिना, कृषि सलाहकार सुल्तान तुर्की के द्वारा गीर नस्ल का आयात किया गया था. अमेरिका के द्वारा भारत से गीर नस्ल के आयात करने के लिए बहुत अधिक विरोध का सामना करना पड़ा था क्योंकि अमेरिका को गीर नस्ल मांस खाने के लिए कोई भी भारतीय देना नहीं चाहता था.

ब्राहमण प्रजाति का विकास

भारत में गाय के मांस को खाना भयंकर पाप माना जाता है. अमेरिका चोरी छिपे सर्कस एवं चिडियाघर के माध्यम से गीर को ले जाकर अपने यहां गाय के बढिया मांस के अधिक उत्पादन करने के लिये ही गुजरात की कांकरेज और दक्षिण भारत की अंगोल के साथ मिलाकर ब्राहमण प्रजाति विकसित कर चुका है. अमेरिका में ब्राहमण के संपूर्ण विकास करने के लिए अनुसंधान किये गये हैं. ब्राहमण प्रजाति के अन्य देशों में निर्यात करने से अमेरिका मालामाल हुआ है.

ब्राहमण ब्रीड संगठन

1904 में हेगनबच एनिमल प्रदर्शन में प्रिंस नाम के लाल रंग के बैल को टेक्सास के ए.एम. फददीन के द्वारा खरीदा गया था. 12 बैलों को डाक्टर विलियम स्टेट जेकब ने खरीदा था. 1905 एवं 1906 में टेक्सास के विक्टोरिया के परस रेंज के प्रबंधक एबल पी. बोरडन ने 30 बैल तथा 3 गाय मातायें खरीदी थी. ब्राहमण नस्ल के विकास करने के लिये अमेरिका में ब्राहमण ब्रीड एशोसियेशन का भी गठन किया गया है. ओस्ट्रेलिया में भी ब्राहमण ब्रीड एसोसियेशन का गठन किया गया है. ब्राहमण नस्ल अपने बहुत ही अच्छे गुणों के कारण ही पूरे अमेरिका में तेजी के साथ फैल गयी हैं. अमेरिका से बाहर भी ब्राहमण नस्ल का निर्यात बहुत ही बडी मात्रा में किया गया है. 1910 से 1920 के मध्य में ब्राहमण की नस्ल पूरी तरह से मूल रखने का प्रयास कुछ पालकों ने किया था.

ब्राहमण का निर्यात

अमेरिका ने अपनी नयी प्रजाति का नाम ब्राहमण हम गाय का मांस नहीं खाते हैं इसलिए ब्राहमण रखा है. ब्राहमण प्रजाति से ही अमेरिका अपनी मांस की बढती मांग को ध्यान में रखकर ब्रहमोसिन, अमेरिकन, अंकोल, अंकोल वाटसी, ब्रेफोर्ड मांसल प्रजातियां उत्पन्न कर रहा है. अमेरिका अन्य देशों दक्षिण आफ्रीका, ओस्ट्रेलिया आदि को भी भारतीय गोवंश से विकसित मांसल प्रजातियों को निर्यात कर रहा है. अमेरिका के अलावा ब्राजील, आस्ट्रेलिया, आफ्रीका एवं अन्य देश भी भारतीय गोवंश की बहुत ही बढ़िया प्रजातियों गीर, लाल सींधी, साहीवाल, थारपारकर, अंकोल, अंकोल वाटसी को अपने देश में विकसित कर मालमाल हुए हैं. आफ्रीका को आफ्रीकेंडर लगभग 33 प्रतिशत मांस के लिये विकसित करने में लगे हुए हैं तथा अपने देश से विश्व के कई देशों में बहुत बडी मात्रा में अच्छे सांड लम्बे समय से निर्यात करते रहे हैं.

महाअकाल में राजस्थान में गोवंश का महाविनाश

वर्तमान में भारत में राजस्थान में 5 सालों के महाअकाल के कारण ही भारतीय गोवंश का बहुत अधिक विनाश हुआ है. राजस्थान में पिछले 100 सालों में ऐसा सूखा भारत में कभी नहीं पडा है. राजस्थान में गायों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण ही अतिथियों को पानी मांगने पर गाय का दूध पिलाया जाता था. गाय का घी प्रतिदिन के खाने में बहुत अधिक प्रयोग किया जाता रहा है. गाय के दूध से तैयार दही और छाछ का प्रयोग भी राजस्थान में दैनिक जीवन में बहुत अधिक किया जाता है. बढ़िया नस्ल के सांढ विकसित किये गये थे.

कम बरसात

भयंकर सूखे के कारण ही भारतीय गोवंश पानी पीने के लिये तरस गये थे. जिस राजस्थान की हरी घांस में इतना दम था कि महाराणा प्रताप ने घांस की रोटियां खाकर लडाई के मैदान में मुगल सम्राट अकबर के दांत खटटे कर दिये थे उसी राजस्थान में सूखी घांस तक गायों के लिये सूखे के कारण ही उपलब्ध नहीं थी. पूरे देश के मुकाबले में 1 प्रतिशत मात्र जल संसाधन सामान्य स्थिति में राजस्थान में उपलब्ध हैं. बरसात कम होने के कारण जैसलमेर क्षेत्र में रेगिस्तान बहुत अधिक क्षेत्र में है.

पलायन

राजस्थान में बरसात बहुत कम होती है. प्रतिकूल परिस्थितियों में सूखे के कारण मां बेटे का संबंध पूरी तरह से समाप्त हो गया था. पूरे भारत में गायों के प्रति उदासीनता के कारण ही महाअकाल के समय राजस्थान में भारतीय गोवंश को बचाने के लिये बहुत कम मदद की गयी थी. सूखे के कारण उत्पन्न स्थिति में बहुत अधिक संख्या में लोग भूख से अपनी जान बचाने के लिये गायों को मरने के लिये छोडकर गांवों से भाग गये थे.

रैन बसेरे

गायें बेसहारा होने के कारण महाअकाल के समय में अपनी भूख मिटाने के लिये मारी मारी इधर उधर भटकने लगी थी. पहले तो किसानों ने गायों को गोशालाओं, राहत के लिये प्रारम्भ किये रैन बसेरे में रखना प्रारम्भ किया था लेकिन जब स्थिति नियंत्रण से बाहर जाने के कारण ही रैन बसेरे के अभाव में हरी घांस की खोज में गायों के झुंड बहुत समय तक भटक रहे थे. भयंकर सूखे ने गाय माता को अपनी भूख मिटाने के लिये प्लास्टिक खाने के लिये मजबूर कर दिया था. प्लास्टिक खाने के कारण ही गायें तडफ तडफ कर मर गयी थी. मरी हुई गायों के पेट से 40 किलो प्लास्टिक निकला था. महाअकाल के समय मरी हुई गायों की हडिडयों के ढेर लग गये थे.

तीन करोड़ पचयासी लाख

महाअकाल में गायों की हडिडयों के ढेर देखकर गोप्रेमियों की आत्मा कांप गयी थी. भारत में रहने वाले बहुत ही कम लोगों को भारतीय गोवंश के सर्वनाश के बारे में पूरी तरह से मालूम पड सका था. सूखे की चपेट में साढे पांच करोड गोवंश आये थे. तीन करोड पचायसी लाख गोवंश सूखे के कारण भूख के कारण तडफ तडफ कर काल के गाल में समा गये थे. राजस्थान गो सेवा आयोग सूखे के कारण गोवंश को बचाने के लिये प्रतिदिन 3 करोड रुपये खर्च कर रहा था.

तीन करोड़ हर दिन

राजस्थान गोसेवा आयोग धन के द्वारा बहुत ही कठिन समय में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूरी तरह से सफल नहीं हो पाया. राजस्थान गोसेवा आयोग के द्वारा यदि प्रत्येक गांव में गोवंश पर पूरी गंभीरता के साथ ध्यान नहीं दिया जायेगा तो आने वाले समय में गोवंश का विनाश और बहुत बडे पैमाने पर होना निश्चित है. भारत में प्रकृति के असंतुलन के कारण निश्चित ही अकाल, बाढ, भूकम्प जैसी भयंकर त्रासदी आगे भी आयेंगी और गोवंश त्रासदी के कारण उत्पन्न महामारी के कारण भी बडी संख्या में निश्चित ही समाप्त होगा.

गोवंश बोंड

प्राकृतिक आपदा के समय गोवंश के लिये सभी मौन हो जाते हैं. मौन से समाधान नहीं होगा. प्राकृतिक आपदा के समय गोवंश की संपूर्ण रक्षा करने के लिये भारत में धन की व्यवस्था केंद्रीय स्तर पर हमें ही करनी होगी. भारत में विश्व का सबसे अधिक सोना वर्तमान में मौजूद है. गोवंश पर आने वाला भयंकर खतरा हमें सुरक्षित नहीं रख सकता है इसलिये सभी को प्राकृतिक आपदाओं के समय गोवंश के लुप्त होने वाले खतरे के लिये प्रतिदिन अपनी आय में से निश्चित रकम अलग से निकालकर रखनी होगी. गोवंश बैंक की नीव रखनी है. 1 लाख के कम से कम 100 गोवंश बोंड जारी करके धन जमा करना प्रारम्भ किया जा सकता है या 100 रुपये के 1 लाख बोंड जारी करके भी प्रयास किया जा सकता है. किसी न किसी को तो पहल करनी ही होगी. मेरा गंभीर प्रश्न यह है कि कौन बनेगा गोसेवक ? भारत के प्रत्येक गांव में गोवंश बैंक की शाखा बनानी होगी.

क्षेत्रोपासना

गोवंश रक्षा करने के लिये नये उपाय भारत में रहने वाले गोप्रेमियों को खोजने होंगे. गोवंश रक्षा करने के लिये जो उपाय मुसीबत के समय किये जाते हैं वे दूरदर्शिता के अभाव के कारण ही पूरी तरह से असफल साबित हो जाते हैं. क्षेत्रोपासना ट्रस्ट 216, ए. जे.सी. बोस रोड, सूट नं 2 ई, कोलकोता 700017 फोन 22475422, 22816770 ने राजस्थान में पडे सूखे को देखकर कोलकता में भागवत का आयोजन करवा कर सवा करोड से अधिक का धन एकत्रित कर छतीसगढ में भाटापारा से रेक से चारा भिजवा कर 32 जिलों के 41000 गांवों में ट्रकों से गोधन के लिये वितरित किया था. गोधन के प्रति राजस्थान में बहुत अधिक प्रेम है लेकिन महाअकाल ने सभी प्रयत्नों पर पूरी तरह से पानी फेर दिया. राजस्थान में पडे महाअकाल ने भारत में भारतीय गोवंश की गंभीर स्थिति को ध्यान में रखकर गोप्रेमियों को गंभीरता के साथ सोचने के लिये मजबूर कर दिया है.

वर्णसंकर

भारतीय गोवंश का स्थान वर्तमान में वर्णसंकर जानवरों ने तेजी के साथ ले लिया है. वर्णसंकर जानवरों के कारण ही भारतीय गोवंश की अच्छी प्रजातियों को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है. राजस्थान में दूध की बढती हुई मांग के कारण नकली दूध का उत्पादन बहुत बडे पैमाने पर किया जा रहा है. भारत में राजस्थान में महाअकाल फिर से आने पर भारतीय गोवंश सुरक्षित रखने के लिये योजनाबद्ध तरीके से संगठित रुप से तैयारी करने की आवश्यकता है.

1000 गोशालाएं

वर्तमान समय में राजस्थान में बहुत बडी संख्या में गोवंश के समाप्त हो जाने के कारण वहां बच्चे गाय के दूध के लिये तरस गये हैं. वर्तमान में राजस्थान की 1000 गोशालाओं में भारतीय गोवंश की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है. भारत के लोगों को राजस्थान में गांवों में स्वयं जाकर गंभीरता के साथ अध्ययन करने की आवश्यकता है. भारत में महाअकाल से गोरक्षा करने के लिये वैज्ञानिकों के द्वारा सरल उपाय गांव गांव में पहुंचाने के लिये समाचार पत्र, पत्रिकाओं, आकाशवाणी, दूरदर्शन, चैनल एवं अन्य प्रचार प्रसार के साधनों का उपयोग अधिक से अधिक करने की आवश्यकता है.

भारत में अंग्रेजों का प्रवेश

अंग्रेज हमारे भारत में वास्को डी गामा के द्वारा 21 जहाज भर कर सोना लूटने के कारण विश्व में हमारी संपन्नता की जबरदस्त चर्चा सुनकर 1600 में व्यापार करने के नाम पर हमें पूरी तरह से बरबाद करने के लिये सूरत गुजरात से आये थे. सूरत उस समय विश्व में सबसे अधिक समृद्ध था. सूरत में विश्व से व्यापार करने लोग आते थे. हमारे लोगों ने अंग्रेजो की नीयत को नहीं समझा था. अंग्रेजों ने हमें लुभाने के लिए बहुमूल्य भेंट दी थी. अंग्रेजों को हमारे लोगों ने व्यापार करने की अनुमति दी थी.

छल कपट

अंग्रेज जानते थे कि हमारी अतिथि देवो की परम्परा तथा दया धर्म का मूल है की भावना का लाभ उठाया जा सकता है. कर्नल कूपर ने सबसे पहले कूपर विला कोठी सूरत में बनवायी थी और अंग्रेजों ने अपनी नींव सूरत से मजबूत की थी. सूरत में अंग्रेजों ने व्यापार के नाम पर अपना कब्जा किया था. अंग्रेजों ने सबसे पहले सूरत को पूरी तरह से बरबाद किया था. सूरत में अंग्रेजों ने व्यापार के नाम पर राज्य करना प्रारम्भ किया था. सूरत के व्यापार पर अंग्रेजों ने अपना पूरा कब्जा किया था.

गददार

अंग्रेजों की सेना का नेतृत्व करने वाले राबर्ट क्लाइव ने बंगाल पर कब्जा करने के लिए इंग्लेंड में पत्र लिखा था कि हमें बंगाल पर कब्जा करने के लिए अधिक सेना की आवश्यकता है. हमारे पास मात्र 300 सिपाही हैं. इंग्लेंड से राबर्ट क्लाइव को जवाब आया कि हम नेपोलियन से लडत्राई लडत्र रहे हैं इसलिए हमारे पास अधिक सिपाही नहीं हैं इसलिए आप 300 सिपाहियों से ही लड़ाई लड़कर जीत जायें. राबर्ट क्लाइव ने इंग्लेंड से पत्र का जवाब आने पर नवाब सिराजूदौला की सेना के नेतृत्व करने वाले की कमजोरी के बारे में पता लगवाया. नवाब सिराजुदौला के सेनापति मीरजाफर की कमजोरी के बारे में पता चल गया. राबर्ट क्लाइव ने मिरजाफर को अंग्रेजों की मदद करने पर बंगाल का नवाब बनने की लालच दी.

गुलामी की नींव

अंग्रेजो के पास मात्र 300 सैनिक थे और नवाब सिराजूदौला के पास 18,000 सिपाही थे और मजे की बात तो यह थी कि भारत का एक एक सिपाही दस दस अंगेजों से बहुत ही आराम से लड़ सकता था लेकिन अफसोस की बात तो यह हे कि गद्दार और देशद्रोही मीरजाफर के कारण ही बिना लडाई लडे ही हम प्लासी की लडाई पूरी तरह से 45 मिनट में ही हार गये थे. राबर्ट क्लाइव ने नवाब सिराजूदौला के 18000 सिपाहियों को 10 दिनों तक भूखा रखा था और उसके बाद उनकी हत्या कर दी थी. मीरजाफर को भी मरवा दिया गया था.

विजय जुलुस

राबर्ट क्लाइव ने अपनी डायरी के दो पन्नों में बहुत ही गर्व के साथ यह लिखा है कि हम अपनी जीत का विजय जुलुस जब कलकत्ता की सड़क पर निकाल रहे थे तब हम मात्र 300 सिपाही थे और हमारा विजय जुलुस देखने वाले हजारों भारतीय लोग मौजूद थे. हमें यदि किसी एक भी भारतीय ने पत्थर मारा होता तो उसको देखकर हजारों लोग हमें पत्थर मारते तो हम मात्र 300 लोग उनका सामना नहीं कर सकते थे. मजे की बात तो यह थी कि उस समय किसी भी भारतीय ने एक पत्थर नहीं मारा. गुलाम की तरह सिर्फ हमारा तमाशा देखते रहे. इस घटना के कारण ही हमारा उत्साह बहुत अधिक बढ़ गया था.

भारत में गोवंश हत्या की शुरुआत

भारत में गोवंश हत्या की व्यवस्थित योजना अंग्रेजों के समय से मान सकते हैं. राबर्ट क्लाइव ने 1757 में कलकत्ता में प्लासी की लड़ाई जीतने के उत्साह में अंग्रेजों के द्वारा निकाले गये विजय जुलुस के समय में भारतीयों की विरोध न करने की कमजोरी का लाभ उठाकर 1760 से अपने सैनिकों की गोमांस की आवश्यकता के लिए सरेआम गोवंश हत्या की शुरुआत की. अंग्रेज गोमांस बहुत अधिक पसंद करते थे. राबर्ट क्लाइव बहुत ही अच्छी तरह से जानता था कि भारत के लोग बहुत लंबे समय से गुलामी की परम्परा में जीने के आदी हो गये हैं और गुलाम कभी विरोध नहीं करता है.

भारत को गरीब बनाने के लिये अंग्रेजों का खतरनाक ड़यंत्र

अंग्रेज हमारे भारत में व्यापार करने के नाम पर सूरत से आये थे लेकिन दुर्भाग्य से भारत पर लम्बे समय तक राज करने के लिये अंग्रेजों ने भारत में कानून बनाने के लिए 1801 से लेकर 1813 तक लंदन में संसद में लगातार बहस चलायी थी कि भारत को गरीब कैसे बनाया जाये और भारत में ईसाइयत किस तरह से फैलायी जाये. 50,000 दस्तावेज एकत्रित करके उसका गहराई से

अध्ययन करके पता लगाया गया कि अंग्रेज किस तरह से कार्य करते थे. वर्धा में आप इन दस्तावेजों का अध्ययन कर सकते हैं. 13 साल तक लंदन में संसद में लगातार चली बहस के कारण ही भारत को पूरी तरह से बरबाद करने के लिये 1813 के बाद अंग्रेजों ने बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से भारत में 3735 कानून लगू करने प्रारम्भ कर दिये थे.

1844 में आयकर, विक्रयकर, उत्पादकर, संपत्तिकर

अंग्रेजों ने सबसे पहले सन 1844 में भारत के व्यापारियों पर आयकर, विक्रयकर, उत्पादकर, सम्पत्ति कर, चुंगीकर आदि कानून भारत को आर्थिक रुप से पूरी तरह से बरबाद करने के लिये कडाई से लागू कर दिये थे. अंग्रेजों ने आयकर को वसूल करने के लिये आयकर विभाग, विक्रयकर वसूलने के लिये विक्रयकर विभाग, उत्पाद एवं सम्पत्ति कर विभाग की स्थापना भारत में की थी. आयकर विभाग में आयकर अधिकारियों की नियुक्ति की थी जो भारतीय व्यापारियों से आयकर वसूल कर सके. अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय व्यापारी उनके द्वारा लगाये गये आयकर, बिक्रीकर, उत्पादकर, संपति कर आदि बहुत अधिक होने के कारण न पटा सकें और उनके सामने बेइमानी करें.

97 प्रतिशत

अंगेजों ने आयकर की दर जानबूझकर 97 प्रतिशत तक उंची रखी थी. व्यापारियों पर कुल मिलाकर कर 127 प्रतिशत तक था. अंग्रेज बहुत ही अच्छी तरह से जानते थे कि बेइमान आदमी कभी भी आंख में आंख मिलाकर बात नहीं कर सकता है. अंग्रेज नहीं चाहते थे कि कोई भी भारतीय व्यापारी मनमानी करने पर उनका विरोध करे.

92 प्रतिशत

आजादी के बाद भी अंग्रेजों के भारत से चले जाने के बाद भी 1972 तक आयकर की दर 92 प्रतिशत थी. अंग्रेजों के बनाये हुए आयकर के कानून को आज भी क्यों चलाया जा रहा है?

3735 कानून

अंग्रेजों के द्वारा बनाये गये सभी 3735 गाय विरोधी कानून आज भी क्यों चल रहे हैं?

मौलिक सोच की कमी

गुलाम कभी भी ना नहीं कहता है. गुलाम यस सर, ओके सर, राइट सर, थेंक्यू सर, फाइन सर यानी गुलाम सिर्फ हां कह सकता है. गुलाम की अपनी मौलिक सोच नहीं होती है.

बलिदान

गाय माता के लिये 1760 से लेकर आज तक 6 लाख 40 हजार गोसेवकों ने हंसते हंसते अपने प्राण तथा सर्वस्व न्योछावर कर दिया थे.

इंडियन सिविल सर्विस एक्ट

1860 में ही अंग्रेजों ने 1857 की क्रांति को बहुत ही गंभीरता से ध्यान में रखकर ही गाय विरोधी इंडियन सिविल सर्विस एक्ट बनाया था. 1860 में अंग्रेजों ने इंडियन सिविल सर्विस एक्ट की स्थापना इसलिये ही की थी कि भारत के किसानों से कडाई से फसल पर लगान वसूल कर उन्हें पूरी तरह से गरीब बनाकर भारत में आने वाले 1000 सालों तक शासन बहुत ही आराम से किया जा सके. किसान गरीब होने पर गाय का पालन नहीं कर सकेंगे. 1860 के इंडियन सिविल सर्विस एक्ट का भारत के किसानों पर बहुत खतरनाक असर पडा.

आजादी बचाओ आंदोलन

अंग्रेजों के भारत से चले जाने के बाद इंडियन सिविल सर्विस एक्ट आज 145 सालों बाद भी बहुत आराम से चल रहा है. इंडियन सिविल सर्विस एक्ट को भारत में समाप्त करने के लिये आजादी बचाओ आंदोलन इलाहाबाद उत्तरप्रदेश से 1989 से बहुत बडे स्तर पर निरन्तर कार्य कर रहा है. इंडियन सिविल सर्विस एक्ट के कारण किसानों को नुकसान हो रहा है. इंडियन सिविल सर्विस एक्ट के बारे में किसानों को विस्तार से बताना बहुत ही आवश्यक है. वर्तमान समय में रा-द्रबंधु श्री राजीव दीक्षित जी भूतपूर्व वैज्ञानिक सीएसआईआर हिंद स्वराज्य अभियान सेवाग्राम के पास में वर्धा महारा-द्र 442001 1992 से पूरे भारत में किसानों के बीच जाकर अपनी बात समझा रहे हैं. उनके विचारों के साथ में लगभग 1 करोड़ से अधिक लोग जुड़ गये हैं.

इंडियन पुलिस एक्ट

1860 में अंग्रेजों ने इंडियन पुलिस एक्ट लागू किया था. अंग्रेजों के सिहासन की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारण भारत में इंट से इंट हिल गयी थी उसको भारत में दूसरी बार मंगल पाडे जैसा गोसेवक कभी भी खडा न हो सके इस संभावना को पूरी तरह से ध्यान में रखकर तथा यदि भविष्य में कभी भी ऐसा हुआ तो उसे पूरी तरह से समाप्त करने के लिये पुलिस को सभी अधिकार 1860 के कानून इंडियन पुलिस एक्ट में अंग्रेजों ने देकर बहुत ही कडाई से गोसेवकों का भयंकर दमन किया गया था.

गोवंश हत्या के कारण विद्रोह

क्योंकि मंगल पाडे ने बैरकपुर बंगाल छावनी में खुली परेड में बंदूक लेकर जब अंग्रेजों ने जान बूझकर भारतीयों को इसाई

बनाने के लिये गोमांस से युक्त कारतूस मुंह से खोलने दिये तब आर्य समाज के कटटर समर्थक ब्राहमण ने गाय माता की चर्बी से युक्त कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार कर विद्रोह कर 29 मार्च 1857 में जो क्रांति का बिगुल भारत में अंगेजो के खिलाफ बजाया था और गरज कर कहा था कि हम गोमाता के भक्त सनातन धर्मी हैं. चर्बी लगे अपवित्र कारतूसों को छूकर अपना धर्म भ्रष्ट कदापि नहीं करेंगे.

गोवंश के मांस के कारण विद्रोह

अग्रेज सार्जेंट मेजर ह्यूसन ने मंगल पांडे को गिरफतार करने के आदेश दिये थे लेकिन मुसलमान का आदेश पालन करने कोई भी सैनिक सामने नहीं आया था. मंगल पांडे ने गाय माता के दुश्मन अपने मुसलमान अफसर पर गोली दागकर उसे मार डाला था. गोली की आवाज सुनकर लेफिटनेन्ट बाम सामने आया तो परम गो भक्त मंगल पांडे ने उसे भी गोलियों से भून डाला. मंगल पांडे को अंगेजों ने 8 अप्रेल 1857 को फांसी पर लटका डाला था. देश और गो प्रेम के धर्म के लिये वीर मंगल पांडे की यह पहली आहूति गाय माता के लिये थी. मंगल पांडे के द्वारा जो विद्रोह बैरकपुर की छावनी में किया गया था उसकी खबर पूरे देश की सैनिक छावनियो में बहुत ही तेजी से फैल गयी थी.

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

मंगल पांडे के बलिदान की बात बहुत ही अच्छी तरह भारत के प्रत्येक सिपाही को समझ में आ गयी थी अंगेजों ने मंगल पांडे के विद्रोह को बहुत ही मामूली समझकर 6 मई 1857 को मेरठ छावनी में 90 हिन्दुस्तानी घुडसवार सिपाहियों को गाय माता की चर्बी से युक्त नये कारतूस जान बूझकर जबरदस्ती दिये गये थे. मेरठ छावनी में 85 सिपाहियों ने मंगल पांडे के बलिदान से प्रेरित होकर कारतूसों को छूने से भी इंकार कर खुला विद्रोह कर दिया. 9 मई को इन 85 गोसेवक भारतीय सिपाहियों का कोर्ट मार्शल कर दस-दस वर्ष की सजा देकर जेल भेज दिया गया था. अगले दिन ही मेरठ सैनिक छावनी में 10 मई 1857 को सैनिक क्रांति का भयंकर विस्फोट गोद्रोही अंगेजों के विरोध में हुआ था. देखते ही देखते गोसेवक हिन्दुस्तानी सैनिक गोद्रोही अंगेज अफसरों पर पूरी तरह से योजनाबद्ध तरीके से टूट पडे थे.

कसाईयों की हत्या

एक दर्जन से ज्यादा अंगेज अफसरों को मौत के घाट उतार दिया था. 85 हिंदू सैनिकों को जेल से छुडा लिया था. अंग्रेजों ने फूट करो और राज करो की नीति अपनाकर गोहत्या करने की पूरी छूट अमृतसर में दे दी. 14 जून 1871 को अपने असाधारण साहस से लहनासिह, हाकिमसिंह, बोहलसिंह, फतहसिंह ने कतलखाने पर हमला कर अनेक कसाईयों को मौत के घाट उतार दिया था. अमृतसर में जगह जगह गोहत्या तेजी से की जाने लगी जिसके कारण ही 15 जुलाई 1871 को गोसेवकों ने कस्बा रामकोट के गुरु गोविन्दसिंह गुरुद्वारे के पास स्थित कतलखाने पर हमला कर 2 गोहत्यारे कसाईयों को मौत के घाट उतार दिया था. 15 जनवरी 1872 को मलेरकोटला के कतलखाने पर धावा बोलकर कतलखाने को पूरी तरह से तहस नहस कर डाला तथा कई गोहत्यारों की बहुत ही होशियारी के साथ हत्या कर दी.

जलिया वाला कांड

13 अप्रेल 1919 को जब 20,000 गोसेवक अमृतसर में जलियावाला बाग में अंगेजों के द्वारा गाय माता पर किये जा रहे लगातार भयंकर अत्याचारों का विरोध करने के लिये एकत्रित हुए थे और अंग्रेजों के अत्याचारों का विरोध करने के लिये कार्य योजना बना रहे थे तब क्रूर जनरल डायर ने जलियावाला बाग को चारों ओर से घेरकर 20 मिनट तक लगातार उन पर फायरिंग की थी जिसमें 2,200 गोसेवक दिन में बिना किसी कारण के मारे गये थे. बहुत सारे गोसेवक गोली लगने के कारण बहुत अधिक घायल हो गये थे. लेकिन जनरल डायर को अंग्रेजों के द्वारा जानबूझकर फांसी की सजा नहीं दी गयी थी बल्कि सेवा निवृति के बाद लंदन में सार्वजनिक रुप से जनरल डायर को सम्मानित किया गया था.

जलिया वाला बाग का बदला

उधम सिंह ने भारत से लंदन जाकर जनरल डायर की डंके की चोट पर हत्या कर अपने मां बाप की हत्या का बदला लिया था. उधमसिंह ने आत्मसमर्पण करने के बाद न्यायधीश को कहा था कि डायर की हत्या वह चुपके से कर सकता था लेकिन जिस तरह से जनरल डायर ने भारत में दिनदहाडे 2200 गोसेवकों की क्रूरता के साथ हत्या कर बहादुरी दिखाने का प्रयास किया था ठीक उसी तरह से ही डायर को लंदन में मारना बहुत जरुरी था जिससे गोसेवकों की मौत का बदला लिया जा सके.

पुलिस एक्ट का समापन

1860 के इंडियन पुलिस एक्ट में मारने वाले को मारने के पूरे अधिकार तो अंगेजों के द्वारा बहुत ही सोच समझकर दिये गये थे लेकिन मरने वाले को बचने के अधिकार अंग्रेजों ने जानबूझकर ही नहीं दिये गये थे और 1861 में इंडियन पुलिस एक्ट को भारत में बहुत ही कडाई से लागू करवा दिया था. अंग्रेज 15 अगस्त 1947 में हमें कहने के लिये तो आजादी देकर चले गये हैं लेकिन इंडियन पुलिस एक्ट आज भी आजादी के 60 साल पूरे होने के बाद वैसे के वैसा ही चल रहा है. इंडियन पुलिस एक्ट 1860 को भारत में अब बंद करने के लिये भारत की जनता में जागृति उत्पन्न कर संगठित स्तर पर बहुत जबरदस्त आंदोलन करने की आवश्यकता है.

इंडियन फोरेस्ट एक्ट

1865 में अंगेजों ने बहुत ही सोच समझ कर गाय विरोधी इंडियन फोरेस्ट एक्ट की स्थापना गुलाम भारत में की थी. 1865 के पूर्व जंगल गांव वालों की संपत्ति थी. पर्यावरण के प्रति गांव के लोग बहुत ही अधिक जागरुक थे. विश्व का सबसे अच्छा पर्यावरण भारत का था. विश्व के सबसे घने वन भारत में थे. वर्तमान में अंडमान निकोबार में 92.3 प्रतिशत, मिजोरम में 89.1 प्रतिशत, नागालैंड में 85.8 प्रतिशत, अरुणाचल प्रदेश में 81.9 प्रतिशत, मणिपुर में 78 प्रतिशत क्षेत्रफल वन से घिरा हुआ है. नेशनल रिमोट सेंसिग एजेंसी

के अनुसार वन विनाश की वार्षिक दर 1970 से 1980 के बीच में 1.3 प्रतिशत थी.

वन विनाश

1980 से 1990 के बीच में एफ.ए.ओ. के अनुसार वन विनाश की दर 0.34 प्रतिशत थी. पर्यावरण की शिक्षा पाठयक्रम में प्राचीनकाल से ही भारत में थी. भारत में 1 करोड़ लोग वन पर पूरी तरह से आश्रित हैं. 60 प्रतिशत ग्रामीण वनों से जलाने के लिए लकड़ी एकत्रित करते हैं. 6 करोड़ भैंसों को वनों से चारा प्राप्त होता है. 15 करोड़ गोवंशों को चारा वनों से ही प्राप्त होता है. वन के कारण विश्व की सबसे अधिक व-र्ा भारत में होती थी. विश्व की सबसे अधिक जड़ीबूटियां भारत में होती थी.

बरबाद करने के कानून

60 से 65 प्रतिशत जड़ीबूटियां वनों से प्राप्त होती हैं. गांव के लोग जड़ीबूटियों का संपूर्ण उपयोग जानते थे. गांव के लोग जंगल की सुरक्षा करते थे. अपनी आवश्यकता पडने पर गांव के लोग जंगल से इंधन के लिये लकडी काट लेते थे. जंगलों में गाय को हरी हरी घांस चराते थे. गाय माता को जंगल में हरी हरी घास चरने ले जाते थे. गाय माता हरी हरी घांस के साथ जडी बूटियां भी खा लेती थी. गाय माता को जडीबूटियों की पूरी जानकारी रहती थी. अंग्रेज भारत के पर्यावरण को पूरी तरह से बरबाद करने के लिए योजना बना चुके थे.

कानून की आड़ में भयंकर क्रूरता

अंग्रेज इंडियन फोरेस्ट कानून की आड में जंगल का सर्वनाश कर रहे थे. इंडियन फोरेस्ट एक्ट के कानून के कारण ही जंगल के समाप्त होने पर भारतीय गोवंश का पतन भी बहुत तेजी के साथ हुआ था. गोप्रेमी गांव वालों को पूरी तरह से दबाने के लिये वन विभाग की स्थापना की थी और वन विभाग में वन अधिकारियों की नियुक्तियां की गयी थी. वन अधिकारी को विशेष अधिकार दिये गये थे जिसके कारण ही वन अधिकारी गांव के लोगों को जंगल में घुसने ही नहीं देते थे. वन में गायें चरने नहीं देते थे. यदि गांव वाले गायों को चराने के लिये वन में प्रवेश करते थे तो वन अधिकारी उन्हें कोडों से मारते थे और जेल में बंद कर देते थे.

गलत कानून का समापन

गोप्रेमी के द्वारा अंगेजों का विरोध करने पर गोली से भी मार देते थे. अंगेजों ने 1865 के इंडियन फोरेस्ट एक्ट के माध्यम से भारत के सभी वन बहुत ही तेजी के साथ पूरी तरह से जबरदस्ती से कटवा दिये थे और वन की लकडी अपने चमचों को बेच दी थी. गांव वाले जब जंगल काटने का अंगेजों का प्रबल विरोध करते थे तब अंगेज गांव वालों को बहुत ही क्रूरता के साथ कोडों से पिटवाते थे और मौके पर गोली भी मार देते थे. भारत 1947 में अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी से आजाद अवश्य हुआ है लेकिन वर्तमान में विदेशी बहुरा-ट्रीय कंपनियों का गुलाम है. 1865 का खतरनाक वन कानून आज बहुत ही खतरनाक तरीके से कार्य कर रहा है.

ओक्सीजन की कमी

1901 में भारत में वन क्षेत्रफल 45 प्रतिशत था वह 2001 में घटकर मात्र 19 प्रतिशत रह गया था. 1972 से 1990 के बीच में 91,70,000 हेक्टेयर वन क्षेत्र समाप्त हुआ है. एक पेड़ 7.5 लाख की ओक्सीजन हमें देता है. नीम के पेड़ से 24 घंटे शुद्ध ओक्सीजन प्राप्त होती है. नीम के पेड़ से स्पर्श करने वाली हवा 126 बीमारियों को रोकती है. वन कानून 1865 का दुरपयोग कर विदेशी बहुरा-ट्रीय कंपनी इंडियन टोबेको कंपनी सिगरेट बनाने के लिये हर साल 1400 करोड पेड काटती है एवं 90 अरब सिगरेट बनाती है. वर्तमान में भारत में 34 करोड़ से अधिक लोग सिगरेट पीते हैं. हम यदि एक पेड काटते हैं तो वन कानून के कारण हमें जेल हो जाती है. गाय विरोधी वन कानून पूरी तरह से भारत में बंद करने के लिये अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा सोयी हुई मासुम जनता का जनजागरण करने के लिये इलेक्ट्रोनिक मीडिया में जबरदस्त प्रचार प्रसार करने की आवश्यकता है. वर्तमान में गोप्रेमियों को संगठित होकर वन कानून का विरोध करना अनिवार्य है.

लैंड एक्वीजिशन एक्ट

1894 में अंग्रेजों के बहुत ही क्रूर अफसर लोर्ड डलहौजी ने राज्य के राज्यों की भूमि हडपने का कानून लेंड एक्वीजिशन एक्ट यानी भूमि अधिग्रहण कानून बना दिया था. अंग्रेज हमारा सर्वनाश करना चाहते थे. लार्ड डलहौजी अच्छी तरह से जानता था कि भारत में गोचर भूमि पर अपनी मनपसंद हरी हरी घांस भरपेट खाकर गाय मातायें बहुत अधिक दूध देती हैं. 1894 के भूमि अधिग्रहण के कानून के बाद अकाल, भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाओं के बढ़ने के कारण ही संतुलित गोपालन बहुत अधिक प्रभावित हुआ. भारत में अच्छी प्रजातियों की गायों की संख्या बहुत ही कम हो गयी थी. भैंस को चरने के लिये अधिक भूमि की आवश्यकता नहीं थी. भैंस आलसी होने के कारण एक जगह पर ही अपना पेट भरती है.

गोचर हड़पने का कानून

गाय गतिशील है इसलिये गाय को कम से कम 2 किलोमीटर जमीन चाहिये. अंग्रेज आज भारत से 60 वर्षों पूर्व ही चले गये हैं लेकिन अंगेजों के द्वारा जो कानून 1894 का हमारी गाय माता का सर्वनाश करने के लिये बनाया गया है वह कानून आज भारत में क्यों चल रहा है. जब तक 1894 का चारागाह हडपने का यह अंधा कानून चलता रहेगा तब तक गाय माता कभी भी भारत में सुखी नहीं रहेगी. इसका जवाब कौन देगा. 1894 के गाय विरोधी कानून को भारत में बंद करने के लिये गाय माता के लालों को आगे आना ही होगा. वर्तमान में भारत में सभी गांवों में चारागाह की गोचर भूमि 1894 के कानून के कारण ही अवैध तरीके से हडप कर ली गयी है. अग्रेज चारागाह की जमीन पूरी तरह समाप्त कर हडप चुके थे जिससे गांव के लोग गाय माता को चरने के लिये गांव से बाहर मैदान में कभी भी न ले जा सकें. हरी हरी घांस के अभाव में गाय मातायें तेजी से मरने लगी थी.

मेकाले की भारतीय शिक्षा नीति

भारत को पूरी तरह से गरीब बनाने के लिये 1000 साल की लंबी गुलामी की योजना अंग्रेजों के द्वारा तैयार की गयी थी. 1835 से लेकर 1858 तक लगातार पूरे भारत का जबरदस्त सर्वेक्षण करवाकर 1858 में लार्ड मेकाले ने भारतीय शिक्षा नीति की स्थापना करवायी थी. लार्ड मेकाले ने जब भारत के गुरुकूलों का सर्वेक्षण करवाया था तब लार्ड मेकाले ने देखा था कि गुरुकूलों में गाय मातायें बहुत ही आनंद के साथ रहती थी. गुरुकुलों में विद्यार्थियों को बहुत ही गहन शिक्षा पर्यावरण, स्वास्थय, विज्ञान, अर्थ आदि की दी जाती थी. गुरुकूलों में पढने वाले विघार्थी गुरुकूलों की गाय माताओं की सेवा बहुत ही प्रेम से करते थे और गाय माता का ताजा धारोष्ण दूध पीकर विघा अध्ययन करते थे.

गुरुकुलों पर हमला

गुरुकुलों में अच्छी नस्ल के नंदी तैयार किए जाते थे. नंदी के माध्यम से गोसंवर्धन चरम सीमा पर था. गोसंवर्धन चरम सीमा पर रहने के कारण विद्यार्थी दीर्घायु तथा निरोगी रहते थे. लार्ड मेकाले यह सभी नहीं चाहता था. लार्ड मेकाले ने गाय माता के निबंध का अध्ययन किया था जिसमें वेदों के अनुसार गाय विश्व की माता है गाय हमारा सभी कुछ है यह पढाया जाता था. लार्ड मेकाले ने जब भारतीय शिक्षा नीति बनवायी थी तब उसमें गुरुकूलों को पूरी तरह से अवैध घोषित करवा दिया था जिससे गुरुकूलो में जो दान आता था उसे भी पूरी तरह से अवैध घोषित कर गुरुकूलों को पूरी तरह से बंद करवा दिया था. गुरुकूलों को हमेशा के लिये पूरी तरह से समाप्त कर उसके बदले कोनवेंट की स्थापना भारत में की थी.

अनाथालय

युरोप में कोनवेंट अनाथालय को कहा जाता है. युरोप में विवाह के पहले गलत अनैतिक संबंध रहने के कारण ही उत्पन्न संतान को अनाथालय में छोड दिया जाता है. अनाथ बच्चों को अनाथालय में ही पढाया जाता है. लोर्ड मेकाले ने भारत में कोनवेंट के नाम पर अनाथालय इसलिये खोले थे जिसके कारण भारत में रहने वाले मासूम बालक जन्म जरुर भारत में लें लेकिन वे पूरी तरह से अंगेजों के अनुसार ही दिमाग से तैयार हो जायें जिससे अंगेज कभी भी भारत से वापस न जायें. सनाथ बच्चे आज लार्ड मेकाले के द्वारा तैयार नीति के कारण पूरी तरह से अनाथ हैं. कोनवेंट में पढने वाले बच्चे को गाय माता की सेवा करने का अवसर ही नहीं दिया जाता है इसलिये कोनवेंट में पढने वाले बच्चे गाय माता को हमेशा ही जानवर, ढोर, डांगर, पशु के नाम से ही संबोधन करते हैं.

गुलामी की नींव

कोनवेंट में गाय विरोधी पढाई पढने के कारण ही बडे होने पर यही बच्चे ही भारत में केंद्र सरकार में पहुंचकर गाय विरोधी नीतियां तैयार करते हैं. 1858 की लोर्ड मेकाले की भारतीय शिक्षा नीति इतनी अधिक खतरनाक थी कि हमारे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु जी पूरी तरह से अंगेजों के अनुसार ही कार्य कर रहे थे. लार्ड मेकाले ने 1858 में जो खतरनाक नीति तैयार की थी उसके कारण ही हम हूण, मुगल, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, डच आदि के 1000 सालों से बहुत ही पहले से गुलाम थे और आज भी पहले से ज्यादा 18,000 से अधिक विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के गुलाम ही हैं.

गाय के निबंध में परिवर्तन

लार्ड मेकाले ने वेद के अनुसार गुरुकूलों में पढाया जाने वाला निबंध गावो विश्वः मातरः यानी गाय विश्व की माता है यानी गाय विश्व का पालन करती है को कटवा कर कोनवेंट की नयी शिक्षा नीति के अनुसार गाय का नया निबंध प्रारम्भ करवाया जिसमें पहला वाक्य अंग्रेजी में लिखवाया कि काउ इसे पेट एनिमल, काउ इसे डोमेस्टिक एनिमल यानी हिंदी में उसका अनुवाद गाय एक उपयोगी जानवर है. गाय एक पालतु पशु है. आज हिंदी की सभी शालाओं में तीसरी कक्षा के बच्चे को 1858 से तैयार गलत गाय माता का निबंध पढाया जाता है. मजे की बात तो यह है कि गाय का निबंध पढ़ाने वाले शिक्षक को यह भी पता नहीं है कि वह क्या गलत पढ़ा रहा है?

कानवेंट

लार्ड मेकाले जानता था कि नयी शिक्षा नीति के अनुसार कानवेंट में पढने वाला व्यक्ति गाय माता का नया निबंध पढने के बाद गाय को जानवर मानेगा तथा कभी भी गाय कटने पर विरोध नहीं करेगा. कानवेंट में पढने वाला व्यक्ति गाय की सेवा कभी भी नहीं करेगा. लोर्ड मेकाले की शिक्षा नीति अंग्रेजों के भारत से चले जाने के बाद भारत में पूरी तरह से सफल हुई जिसके कारण भारत में आने वाले 1000 सालों तक अंग्रेजीयत के गुलाम ही पैदा होते रहेंगे. लार्ड मेकाले के द्वारा तैयार नयी शिक्षा नीति को बदलने के लिये भारत में संगठित चिंतन की आवश्यकता है.

वर्णसंकर जानवरों का भारत में प्रवेश

वर्णसंकर जानवरों के प्रवेश पर भारत के गोपालकों के द्वारा प्रबल विरोध किया गया था. गोपालकों के विरोध की चिंता किसी ने नही की थी. विदेशों के दबाव में अपने निश्चित कार्यक्रम के तहत कृत्रिम गर्भाधान का अभियान चलाया गया था. वर्तमान में यह चरम सीमा पर पहुंच गया है. कृत्रिम गर्भाधान विश्व में पहले कभी भी नहीं किया जाता था. भारत में नंदी की पहले कभी कमी नहीं थी. दस गायों के पीछे एक नंदी रहता था. नंदी गांवों में छोड़ने की परम्परा थी. कृत्रिम गर्भाधान पूरी तरह से गलत है यह बात हर व्यक्ति को अच्छी तरह से समझ में आती है.

जर्सी

अंग्रेज सरकार के द्वारा विश्व को गोवंश के विचार से पूरी तरह से बरबाद करने के लिए नयी नीति तैयार की गयी थी. जर्सी नस्ल 1771 में इंग्लेंड में जर्सी टापू पर हिंसक जानवरों को पालतु बनाकर उनको सुअर, यार्क, तथा भैंस जैसे जीवों के साथ क्रोस करवाकर बहुत अधिक दूध के लिए विकसित की गयी है. जर्सी नस्ल को पूरे विश्व में फैलाने के लिए बहुत ही अधिक चिंतन किया गया था. जर्सी सांढ बहुत ही मंहगे खरीदने पड़े थे. उनके पालने में भी बहुत ही अधिक खर्च करना पड़ रहा है. जर्सी नस्ल बहुत जल्दी

बीमार पड़ जाती है. जर्सी नस्ल का कंधा नहीं होता है. कंधा नहीं होने की वजह से बैल खेती के लिए उपयोगी नहीं हैं.

कैंसर के कारक

जर्सी नस्ल दूध एवं वसा के लिये पूरे विश्व में प्रसिद्ध है. जर्सी के दूध में वसा की मात्रा 4.8 प्रतिशत है. 1850 में अमेरिका में जर्सी को लाया गया था. अमेरिका में दूध के लिए गायों की आवश्यकता थी. अमेरिका में मजबूरी में जर्सी को लाया गया था. अमेरिका ने अपने अनुसंधान में यह पता लगाया है कि कैंसर एवं अन्य रोग जर्सी के दूध से होता है. यूरोप में जर्सी को मांस खिलाने के कारण मेड काउ बीमारी होती है. जर्सी बहुत जल्दी बीमार होने पर दूध कम देने लगती है.

नस्ल समापन

जर्सी को भारत का वातावरण सहन नहीं होता है. भारत में गर्मी बहुत ही अधिक पड़ने के कारण वातानुकुलन की वयवस्था मजबूरन करनी पड़ती है. जर्सी ठंडे में रहने के लिए ही है. जर्सी अपने भार से 13 गुना दूध देती है. भारत में 1900 के आसपास अधिक दूध के नाम पर वर्णसंकर जानवरों के साथ क्रोस करवाने का खतरनाक :ाड़यंत्र रचा गया था. सबसे पहले यूरोप की जर्सी नस्ल को भारत में सेना के डेयरी फार्म में बड़े स्तर पर प्रवेश करवाया गया था. पहला सेना का डेयरी फार्म इलाहाबाद में अंग्रेज सिपाहियों की दूध की आवश्यकता को ध्यान में रखकर 1889 में तैयार किया गया था.

विदेशी जानवर

बहुत सारे आयरशायर, 2 या 3 छोटे सींग वाले शार्ट हार्न, एक होलीस्टीन फ्रीजीयन सांढों का आयात किया गया था. वर्णसंकर होलीस्टीन का जन्म यूरोप में किया गया था. नीदरलेंड में होलीस्टीन का इतिहासिक विकास किया गया था. होलीस्टीन का विशेष विकास उत्तरी होलेंड एवं फ्रीसलेंड में किया गया था. होलीस्टीन का विकास घांस के सर्वाधिक उपयोग करने के लिये किया गया था. होलीस्टीन मूल में काले रंग के वर्णसंकर पशु हैं. सफेद रंग के बेटेवियन तथा फीजीयन के साथ 2000 वर्षों पूर्व रीन डेलटा क्षेत्र में आदिवासियों ने स्थानान्तरित कर दिया था.

सांढ का आयात

1908 से इन सांढों का उपयोग गर्भाधान करने के लिए किया गया था. जर्सी सांढों का आयात भी किया गया था. आयरशायर नस्ल का विकास स्कोटलेंड के आयर में 1750 से किया गया था. आयरशायर के विकास करने के लिये देश के 3 जिलों कनिंघम देश के उत्तरी भाग, देश के मध्य भाग में कायले, देश के दक्षिण भाग में केरिक का चयन किया गया था. आयरशायर को पहले डनलप, बाद में कनिंघम तथा अंत में आयरशायर के रुप में जाना जाने लगा. 1912 से 1920 तक भारत में आयरशायर सांढ उपयोग में लाये गये थे. 1924 से भारत में होलीस्टीन फ्रीजीयन सांढों का आयात किया गया था.

वर्णसंकर जानवर का आयात

वर्णसंकर जानवरों का आयात अमेरिका, ब्रिटेन, दक्षिण आफ्रीका से किया गया था. 1952 से भारत सरकार को अपनी गलती का अहसास होने पर एक बार फिर से बढ़िया साहीवाल, थारपारकर, हरियाणा, गीर सांढों का उपयोग किया गया था. भारत सरकार को यह समझ में आ गयी थी कि सफेद हाथी पालना इतना आसान नहीं है. सफेद हाथी सिर्फ इंद्र ही पाल सकता है. हम अपनी गाय को ही विकसित करें. 1952 में भारत सरकार ने साहीवाल सांढों की नस्ल का संपूर्ण विकास करने के लिए सरकारी फार्म हाउसों का विकास किया था जिसमें हिसार, छतीसगढ़ राज्य में अंजोरा, थारपारकर नस्ल के लिए राजस्थान में सूरतगढ़, उत्तरप्रदेश में भरारी, गीर का विकास करने के लिए गीरनार पर्वत जूनागढ़ में मेहनत की गयी थी.

गीर का नाश रोकने के लिए प्रयत्न

श्री मनसुख भाई जी के द्वारा पिछले 40 सालों से वर्णसंकर के कारण गीर के नाश को रोकने के लिए प्रयत्न चल रहा है. उनके साथ गुजरात के गांव के लोग हैं. जूनागढ़ के बावाश्री किशोरचंद्र महाराजश्री भी 167 गोशालाएं खोल चुके हैं जिसमें गीर का विकास किया जा रहा है. श्री राजीव दीक्षित जी भी गुजरात में नियमित रुप से जाकर कार्य कर रहे हैं. गुजरात के लोगों को अपनी गलती का पूरा अहसास हो गया है. गलती के पश्चाताप के लिए वर्णसंकर के बदले में गीर को रख रहे हैं.

60 लाख गीर का विकास

श्री मनसुख भाई सक्रिय रुप से पूरे भारत में गोवंश सम्मेलनों में भ्रमण कर रहे हैं. श्री मनसुख भाई जी गुजरात के द्वारा गीर गोवंश को फिर से भारत में गांव गांव में लाने के लिए गुजराती में पुस्तक गीर आपणें आंगणे तैयार की गयी है. गीर गोवंश भारत में कहीं भी चाहिए तो उपलब्ध करवा रहे हैं. श्री मनसुख भाई गुजरात में 5000 गांवों में गीर को सम्मान के साथ में वापस ला रहे हैं. गीर गोवंश विश्व की सबसे अच्छी गाय है यह पूरी तरह से साबित हो गया है. गीर ही वर्णसंकर को टक्कर दे सकती है. गीर गोवंश से डेयरी में लोगों को लाभ है. गुजरात की अर्थव्यवस्था गीर से ही मजबूत हो जायेगी.

सेना के द्वारा बढ़ावा

आजादी के बाद बाहर से आयात करने पर प्रतिबंध लगाया गया था. सेना के फार्मों में 1952 तक क्रोस ब्रीडिंग कार्य चलता रहा. भारत में वर्णसंकर जानवरों को अंग्रेजों के जाने के बाद से निरन्तर बढावा देने के कारण ही वर्तमान में वर्णसंकर जानवरों का बोलबाला गांव गांव में हो गया है. वर्णसंकर जानवरों को गाय के बदले पालने के लिये केंद्र सरकार बहुत ही अधिक मेहनत भारत के

हर गांव में लम्बे समय से कर रही है जिससे भारतीय गोवंश पूरी तरह से समाप्त कर सके.

वर्णसंकर का विकास

नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड के द्वारा अधिक दूध उत्पादन के नाम पर करन फ्रीजियन और करन स्वीस जैसी वर्णसंकर नस्लों का विकास किया गया है. वर्णसंकर गायों की भागीदारी कुल दूध उत्पादन में से 18 प्रतिशत है. अधिक दूध देने के नाम पर इलवारा जैसी उन्नत वर्णसंकर जानवरों को महानगरों में डेयरी उद्योग में बढ़ावा दिया गया है. खतरनाक जानलेवा बीमारियां भारत में वर्णसंकर के कारण ही वर्तमान में तेजी से गोवंश में बढ़ रही है. गलघोटू, खुरपका जैसी अनको खतरनाक बीमारियों के प्रवेश के कारण ही गायों के दूध का उत्पादन प्रभावित हुआ है. अच्छी नस्लें पूरी तरह से समाप्त हो गयी हैं.

कृत्रिम गर्भाधान

भारत में आजादी के पूर्व अंग्रेजों ने अच्छे नंदी अपनी सत्यानाश करने की नीति के अंतरगत कतलखाने खुलवाकर कटवा दिये थे और आजादी के बाद में बढ़िया नंदी का अभाव बहुत ही अधिक हो चुका है. नंदीशाला का अभाव भारत के लिए खतरनाक साबित हुआ है. नंदीशाला खुलने पर कृत्रिम गर्भाधान पूरी तरह से हमेशा के लिए बंद करना संभव है. नंदी के विकास करने के लिए हमें नंदीशाला पर ध्यान देना अनिवार्य है. नंदीशाला का दूसरा विकल्प नहीं है. सरकार को अब अपनी गलती का अहसास हो गया है इसलिए सरकार नंदी के विकास करने के लिए मदद करने के लिए तैयार है.

बैलों का आयात

छतीसगढ़ राज्य में हर गांव से 2 लाख रु. हर साल बैलों को खेती करने के लिए आयात करने के लिए मजबूरन दिए जाते हैं. सभी राज्यों में नंदी के अभाव में बैलों की मांग बढ़ रही है. मांग के कारण ही बैलों का मूल्य बहुत ही तेजी के साथ बढ़ रहा है. अच्छे बैल ढेड़ लाख रु. में मिल रहे हैं. देवनी एवं खिल्लारी बैल के लिए अच्छी मांग रहने के कारण बैल के मालिक के द्वारा खरीदने वाले को पहले से ही समझा दिया जाता है कि यदि पैसे नगद है तो बैल देखने आना.

10 करोड़ नंदियों की आवश्यकता

वर्तमान में 10 करोड़ से अधिक बढ़िया नंदियों की भारत में तुरन्त ही आवश्यकता है. नंदीशालाओं में ब्राजील की तरह ही नंदी तैयार करना है. भारत में वर्तमान में नंदीशालाओं का पूरी तरह से अभाव है. गोशालाओं में भी बढ़िया नंदी तैयार नहीं किए जा रहे हैं. गोशालाओं में भी वर्णसंकर सांढ़ खरीदे जा रहे हैं. गांव में भी धनी व्यक्ति के मरने के बाद उसकी आत्मा को ृांति पहुंचाने के लिए बढ़िया नंदी छोड़ने की परम्परा थी. समय के साथ नंदी छोड़ने की परम्परा भी कमजोर हो गयी है.

जागरुकता

नंदी छोड़ने के लिए नयी नीति तैयार करने की तुरन्त ही आवश्यकता है. नंदी छोड़ने के लिए वापस समाज में जारुकता की आवश्यकता है. कौन बनेगा गोवंश सेवक प्रतियोगिता आयोजित करवानी है. श्री वी. एम. शर्मा जी के द्वारा वर्तमान समय में कामधेनु कल्याण एवं हर्बल अनुसंधान परि-द 4 झूलेलालधाम कटोराधाम रायपुर छतीसगढ़ राज्य के द्वारा नंदीशाला खोलने की दिशा में कार्य प्रारम्भ किया गया है. यमुनानगर हरियाणा में रहकर उनके द्वारा कार्य किया जा रहा है.अखिल विश्व गायत्री परिवार के नेतृत्व के द्वारा 84 देशों में नंदी तैयार करने के लिए कार्य करना है. जयति जय गोमाता मूल्य 15 रु., रा-द्र के अर्थतंत्र का मेरुदंड गोशाला 40 रु., गोपालन वं गोशाला प्रबंधन संदर्शिका मूल्य 40 रु. प्रकाशित की गयी है जिसमें नंदी के विकास के बारे में विस्तार से बताया गया है.

अखंड उर्जा केंद्र

हम सभी बहुत ही अच्छी तरह से जानते हैं कि नंदी पर महाकाल बैठते हैं. नंदी उर्जा का एकमात्र केंद्र है. नंदी के बारे में जानकारी हमें कल्याण गीताप्रेस के गो अक 1945 में मिल रही है. 1945 का अंक 2007 में 3000 प्रतियों के साथ मिल रहा है. नंदी यानी सांढ के अभाव में ही कृत्रिम गर्भाधान को बल देने के लिये गांव में कामधेनु के विकास के नाम पर लोगों के दिमाग में अधिक दूध उत्पादन की बात समझायी गयी. भारत सरकार ने अमेरिका और यूरोप के दबाव में श्वेत क्रांति के नाम पर अधिक दूध उत्पन्न करने के लिए वर्णसंकर सांढों के वीर्य को देशी गोवंश में प्रवेश करने के लिए योजना तैयार की थी. सरकारों ने अपने राज्यों में जबरदस्ती कृत्रिम गर्भाधान का अभियान चलाकर हमारी देशी नस्लों को लुप्त करवा दिया है.

कृत्रिम गर्भाधान का विरोध

वर्तमान में भारत में चल रहा कृत्रिम गर्भाधान पूरी तरह से गलत है. गांव में गोपालक इसका जबरदस्त विरोध कर रहे हैं. गोपालकों को वर्णसंकर नस्ल के सांढ के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान करने के लिए समझाया जा रहा है. भारत में जोरों से चल रहे कृत्रिम गर्भाधान को पूरी तरह से बंद करने की आवश्यकता है.

बेईमानी

2011 तक कृत्रिम गर्भाधान को पूरी तरह से बंद करने के लिए संगठित प्रयत्न की आवश्यकता है. कृत्रिम गर्भाधान विदेशों में मांस के लिए नयी नस्ल तैयार करने के लिए किया जाता है. विदेशों की अंधी नकल करने के लिए भारत में भी भारतीय गोवंश के संपूर्ण विकास के नाम पर खरबों खर्च कर कृत्रिम गर्भाधान करने के लिए गांव गांव प्रचार करवाया गया. कृत्रिम गर्भाधान करवाने के लिये साम, दाम, दंड, भेद की नीति सरकार ने अपनायी. पहले वीडियो सीडी के माध्यम से कृत्रिम गर्भाधान के बारे में बहुत अच्छी तरह से समझाया. गांव में मानसिकता तैयार होने पर लोगों को लालच भी दिया गया. लोगों को बहुत ही चालाकी से कृत्रिम गर्भाधान करवाने के लिये डराया धमकाया भी गया.

बीमारियां

गांव में वर्णसंकर जानवरों का वीर्य कृत्रिम गर्भाधान करने के लिये हमेशा ही उपलब्ध रहता है. लगातार सरकार के प्रचार एवं सांढ के कम हो जाने के कारण ही गांव के गोपालकों के द्वारा भारतीय गोवंश का वीर्य मांगने पर वहां के सहायक पशुपालन अधिकारी के द्वारा हमेशा ही मना कर दिया जाता है. भारत सरकार अपने उद्देश्य में पूरी तरह से आज सफल हो गयी है. वर्णसंकर जानवरों ने भारतीय गोवंश की नस्लों को पूरी तरह से बरबाद कर दिया है. मानव के अंदर भी नयी नयी बीमारियां वर्णसंकर जानवरों के दूध से आयी हैं. वर्णसंकर जानवरों को 2011 तक भारत से पूरी तरह से बाहर करने के लिए भारतीय गोवंश संवर्धन करने के लिए ग्रामीण कामधेनु विश्वविद्यालय की तुरन्त ही आवश्यकता है.

गोवंश सुरक्षा आवश्यक

वर्णसंकर जानवरों, भैंस, ट्रैक्टर, रासायनिक खाद, मांस के निर्यात के कारण ही भारतीय गोवंश की महत्वपूर्ण प्रजातियां अमृतमहाल, सींधी, साहिवाल, गीर, नागोर, सीरी, वैचूर, तंजोर, लाल कंधारी, रोजहन, लोहानी, लुप्त होने की स्थिति में है. केंद्र सरकार के प्रोत्साहन के कारण ही भारत से चोरी छिपे सर्कस, झू और अन्य साधनों से भारतीय गोवंश की बहुत अच्छी प्रजातियां लगातार भारत से बाहर चली गयी हैं और आने वाले समय में भी जायेंगी.

पी.एल. 480 का समझौता

अंग्रेजों ने लंदन में लगातार बहस 1801 से 1813 तक चलाकर 48 करोड गोवंश 300 कतलखाने खोलकर मुसलमानों को नौकरियां देकर बहुत ही क्रूरता के साथ 1760 से 1947 तक कटवा दी थी तब 15 अगस्त 1947 से ही भारत सरकार से हजारों बार बहुत ही संगठित एवं ठोस अनुरोध किया था कि अंग्रेजो से आजाद भारत में संपूर्ण गो हत्या बंदी कानून को बहुत ही कडाई से पूरी तरह से लागू कर मूक गाय माताओं को कतलखानों में क्रूरतापूर्वक कटने से बचा लिया जाये.

लाल गेहूं

भारत में जनता की आंखों में धूल झोककर भारी उद्योगों की स्थापना करने के नाम पर प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु के समय में 1955-56 में अमेरिका के साथ में 20 सालों के लिए पब्लिक ला 480 का समझौता किया गया था. 1964-65 में जब धरती माता को गाय माता पर हो रहे अत्याचार सहन नहीं हुए तो भारत में भयंकर अकाल पडा था. भारत में अकाल पडने के कारण अनाज की भयंकर कमी उत्पन्न हुई थी. अनाज की कमी की पूर्ति के नाम पर अमेरिका से पब्लिक ला 480 के समझौते के कारण ही लाल गेहूं जो अमेरिका में सुअर भी नहीं खाते थे गाय माता के मांस के बदले में मंगाये गये थे.

जबरदस्ती आयात

अमेरिका को भारत से बढ़िया गोमांस देने के लिए यह समझौता किया गया था. भारत के पतन करने के लिये पब्लिक ला 480 समझौता निर्णायक साबित हुआ था. पब्लिक ला 480 का अध्ययन करने के लिये जनजागरण की आवश्यकता है. पब्लिक ला 480 के समझौते के कारण ही वर्तमान में भारत से प्रति वर्ष 50 लाख टन गोमांस यानी देशी गाय माता का मांस, जिसे अंग्रेजी में बीफ कहा जाता है तथा अंग्रेजी में जिसे क्रोम कहा जाता है यानी गाय माता के गर्भ में पल रहे मासूम बछडे का कोमल मांस का निर्यात कर भारत सरकार हर साल खाघान्न, दूध पावडर, 30,000 करोड रुपयों का रासायनिक खाद, मशीन के पुर्जे, रेपसीड आयल, 1,45,000 करोड रुपयों का पेट्रोलियम पदार्थ मंगाती रही है.

गोवंश का विकास

हमें गोमांस के बदले में अपनी आवश्यकता के लिए दूध पावडर नहीं चाहिए. दूध पावउर विदेशों में ही अच्छा है. दूध पावडर हमारे अनुकूल भी नहीं है. हम अपनी आवश्यकता के लिए दूध देने वाली गायों का ही संपूर्ण विकास करने पर पूरा ध्यान दें.

बैल चालित उपकरण

हमें अपनी आवश्यकता के लिए पेट्रोल, डीजल के लिए बाहर से मंगवाने के लिए पीएल 480 जैसे समझौते करने पड़ रहे हैं तो हम यदि परिवहन करने के लिए फिर से साइकिल, बैल चलित उपकरण जिनमें बैल से चलने वाले चारे काटने की मशीन, बैल से चलने वाले पानी निकालने के यंत्र, बेल से चलने वाले खेती के उपकरण, बैल से चलने वाले परिवहन के यंत्र के विकास पर पूरा ध्यान दें तो हमें बहुत ही कम आवश्यकता पेट्रोल, डीजल की पड़ेगी. तेज गति से चलने वाले बैलों नागोर, अमृतमहाल, खिल्लार आदि के विकास करने पर पूरा ध्यान देने की आवयकता है.

साइकिल में सुधार

वर्तमान में बैल चलित उपकरण बनाने के लिए प्रयत्न किए गये हैं. साइकिल के संपूर्ण विकास करने के लिए गंभीरता के साथ सोचना है. भारत वर्तमान में साइकिल उद्योग में सबसे आगे है. साइकिल में यदि गेयर का प्रयोग किया जाये तथा वर्तमान धातु के बदले में हलके धातु का प्रयोग किया जाए तो गति बढ़ जायेगी तथा लंबी दूरी हम बहुत ही आसानी के साथ तय कर सकेंगे. साइकिल में एक से अधिक चालक के लिए बैठने तथा अलग अलग पैडल एक ही चेन में सुविधाएं तैयार करने पर भी गति बहुत अधिक बढ़ जायेगी तथा थकान नगण्य हो जायेगी. इसके लिए अनुसंधान करने की आवश्यकता है. वर्तमान में विश्व में अलग अलग चालकों वाले यंत्र मोजूद हैं.

चीन में साइकिल पर पूरा जोर

सम्मिलित ताकत के कारण कम बल में अधिक गति मिल जायेगी. लंबी दूरी तय करने पर चालकों को थकान अनुभव नहीं

होगी. साइकिल का मूल्य भी कम रखना आवश्यक है. साइकिल से पानी निकालने के यंत्र भी वर्तमान में तैयार किए गये हैं. वर्तमान में पेट्रोल एवं डीजल से चलने वाले यंत्रों का प्रयोग बहुत ही तेज गति के कारण ही किया जाता है. साइकिल में तेज गति आने पर साइकिल की मांग अपने आप बढ़ जायेगी. विश्व में साइकिल से चलने वाले यंत्र के अध्ययन करने की आवश्यकता है. भारत की मासूम एवं भोली भाली जनता के साथ पब्लिक ला 480 समझौता बहुत ही गंदा एवं धोखाधडी तथा विश्वासघात है. इस समझौते को समाप्त करने के लिए कानूनी प्रकिया की तुरन्त ही आवश्यकता है.

जागृति की आवश्यकता

भारत में जनता के अंदर पब्लिक ला 480 के समझौते के बारे में संपूर्ण जागरुकता आने पर केंद्र सरकार को पब्लिक ला 480 समझौता रदद करने के लिये मजबूर होना पडेगा. यह बहुत ही अधिक खतरनाक समझौता धीरे धीरे राजनीतिज्ञ अपनी सुविधाओं की पूर्ति करने के लिये 10-10 सालों में नवीनीकरण करवाते रहा तथा आज तक यानी 2001 से 2010 तक के नये नवीनीकरण समझौते के कारण ही चल रहा है. 2011 तक इस समझौते को भारत में बंद करने के लिए केंद्र तथा राज्यों में सत्ता परिवर्तन करने के लिए संगठित प्रयत्न किए जा रहे हैं.

सरकारी प्रयत्न

11 वी पंचव-र्षीय योजना में कृ-ि मंत्रालय के द्वारा अपनी 41 पन्नों की सिफारिस में मात्र 4 पन्ने भारतीय गोवंश के लिए हैं. कृ-ि मंत्रालय के चंगुल में से गोवंश को निकालना बहुत ही आवश्यक है. कई लोगों को यह भी पता नहीं है कि गोवंश पर वर्तमान में कृ-ि मंत्रालय का नियंत्रण है. कृ-ि मंत्रालय में जानबूझकर एनीमल हसबेंडी की 60 सालों से लगातार उपेक्षा की जा रही है. मांस के लिए एनिमल हसबेंडी का विकास किया जा रहा है. वर्तमान में 100 में से मात्र 9 प्रतिशत धन देकर 60 सालों से कृ-ि मंत्रालय के द्वारा भारतीय गोवंश के संवर्धन करने की जानबूझकर भयंकर उपेक्षा की गयी है. गो मंत्रालय की तुरन्त ही आवश्यकता है.

गोवंश के लिए आंदोलन का अभाव

गो मंत्रालय खोलने के लिए भूतपूर्व न्यायधीश, भूतपूर्व सांसद, रा-ट्रीय गोवंश आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री गुमानमल जी लोढा ने 2002 में सरकार को अपनी सिफारिश की थी लेकिन सरकार ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया था. अब समय आ गया है कि हम संगठित स्तर पर देश में जबरदस्त आंदोलन अवश्य करें. वैसे भी करपात्री जी महाराज के बाद में अब देश में गोवंश के लिए आंदोलन नहीं हुआ है.

65,000 नये कतलखाने

श्री रामास्वामी के अनुसार 41 पन्नों की सिफारिस में वर्तमान में मात्र 1 पक्ति मांस के लिए की गयी है. मांस के व्यापार को बढ़ावा देने के लिए नये कतलखाने खोलने के लिए सरकार प्रयत्नशील है तथा योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री कृ-णचंद जी पंत ने भारत सरकार को आने वाले 5 सालों में 65,000 नये कतलखाने भारत के कई महत्वपूर्ण स्थानों में खोलने के लिये सुझाव दिया है. ऐसी सरकार को तुरन्त ही केंद्र से हटाने की आवश्यकता है.

नये कतलखाने

गोसेवकों के विरोध के कारण नये कतलखाने नहीं खुल पाये थे लेकिन केंद्र सरकार कभी भी नये कतलखाने खोल सकती है इसलिए कांग्रेस की केंद्र सरकार को तथा राज्यों की लाल झंडे वाली साम्यवादी सरकार, समाजवादी सरकार को तुरन्त ही उखाड़ने की आवश्यकता है. श्री नरेन्द्र जी मोदी के समान लोगों की आवश्यकता वर्तमान राजनीति में है. श्री नरेन्द्र मोदी जी वर्तमान में गुजरात में जनता को अपने साथ में लेकर चल रहे हैं. श्री नरेन्द्र जी 2012 तक भारत में राजनीति की दिशा ही पूरी तरह से बदल देंगे. केंद्र में भी भारतीय जनता पार्टी नये रुप में आ जायेगी. 2011 में भारत में गो आधारित अर्थव्यवस्था के समर्थक प्रतिनिधियों की नियुक्ति करने के लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता है. केंद्र सरकार अमेरिका के दबाव में गाय के मांस के उद्योग को बढ़ावा देने के लिए नयी नीति विकसित कर चुकी है.

कांग्रेस का समर्थन

वर्तमान में भारत में कांग्रेस की केंद्र सरकार ने तथा राज्य की सरकारों ने मुसलमानों और इसाइत के दबाव में अपने लंबे राज में कतलखानों की बाढ़ लायी थी. श्री नरेन्द्र मोदी जी मुख्यमंत्री गुजरात सरकार ने हिंदुत्व के कारण ही लगातार तीसरी बार चुनाव जीता है. आने वाले 5 सालों में गुजरात में सभी कतलखाने बंद करवाने में सफलता मिल जायेगी. श्री नरेन्द्र मोदी जी की जबरदस्त जीत से प्रभावित होकर हिंदु अब नयी आक्रामक रणनीति तैयार कर चुके हैं.

भारत के कतलखाने

आंध्रप्रदेश में 343, असम में 5, बिहार में 47, गुजरात में 38, हरियाणा में 43, हिमाचल प्रदेश में 36, जम्मू काश्मीर में 33, कर्नाटक में 633, केरल में 715, मध्यप्रदेश में 261, महारा-ट्र में 282, नागालैंड में 7, उड़ीसा में 75, पंजाब में 89, राजस्थान में 380, तमिलनाडू में 183, त्रिपुरा में 3, उत्तरप्रदेश में 407, पश्चिम बंगाल में 11, सिक्किम में 21, पांडिचेरी में 2, दिल्ली में 1, चंडीगढ़ में 1 गोआ में 1 लाइसेंस प्राप्त कतलखाने हैं.

सही सूचना

इन कतलखानों को बंद करवाने के लिए सही सूचनाओं की आवश्यकता है. कतलखाने में कार्य करने वाले कर्मचारियों के नाम एवं पते, उनकी जाति, आयु आदि का पता लगाना है. कतलखानों का आकार, सरकारी अनुदान, कतलखानों में कटने वाले गोवंश की संख्या कितनी है तथा कतलखानों में आने वाले गोवंश के लिए आसपास के गोवंश बाजारों के बारे में पक्की जानकारियां पता लगाकर रखनी आवश्यक है. कतल किये जाने वाले गोवंश के लिए

अनुमति देने वाले पशु चिकित्सक का नाम और उसका मोबाइल नंबर आदि का पता रखना है.

2010 में हरिद्वार में पूर्ण कुंभ मेला

अब संत समाज को पूरी तरह से सामने आने की आवश्यकता है. वर्तमान में 1 करोड़ से अधिक संत भारत में मौजूद हैं. संत अलग अलग आजादी के 60 सालों से गोवंश रक्षा करने के लिए तत्पर हैं. कुंभ मेलों में भी 1 करोड़ संत मिलकर समाज को गोवंश रक्षा करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं. पूर्ण कुंभ मेले में हरिद्वार में आने वाले समय में संत सरकार पर दबाव अवश्य ही बनवायें. संतों का समाज पर बहुत ही अच्छा प्रभाव है. उनके कहने पर प्रभावशाली लोग कार्य कर सकते हैं. प्रभावशाली लोग सरकार पर दबाव बना सकते हैं.

मांसाहार बंद करने अभियान

मांसाहार, नशीली वस्तुओं को पूरी तरह से त्यागने के लिए संतों के द्वारा ठोस प्रयत्न करना है. मांसाहार भारत में बंद हो जाने पर समाधान हमेशा के लिए हो जायेगा. मांसाहार को बंद करने के लिए सरकार पर पूरी ताकत से दबाव बनाना है. विश्व हिंदु परि-द संत समाज को एक मंच पर लाने के लिए कार्य कर रही है. संत समाज को एक मंच पर लाने के लिए दत्तशरणानंद जी महाराज ने बहुत ही अधिक प्रयत्न किया है.

36 वें शंकराचार्य

36 वें शंकराचार्य जी श्री राघवेश्वर भारती जी ने भी विश्व गो सम्मेलन करवाकर 20 लाख संतों को एक मंच पर लाया था. विश्व गो यात्रा दशहरा 2009 में निकालने के लिए तैयारिया प्रारम्भ की है.आंध्रप्रदेश में हिंदु संघठन को सक्रिय एवं संगठित होकर कार्य करना आवश्यक है. केरल में भी हिंदुओं को मिलकर तैयारी करनी आवश्यक है. भारत में लाइसेंस प्राप्त कतलखानों के अलावा गैरकानूनी रुप से बहुत अधिक कतलखाने आराम से चल रहे हैं.

गोस्वामी श्री द्वारकेश जी

गोस्वामी श्री द्वारकेश बावाश्री महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी के वंशज चम्पारण छतीसगढ़, अमरेली गुजरात, लंदन, अमेरिका के द्वारा कतलखानों का जबरदस्त विरोध करने के लिए तीन करोड़ वै-णवों के साथ में मिलकर पुस्तकें गुजराती में प्रकाशित करने के लिए तैयारियां की गयी हैं. गोस्वामी श्री द्वारकेश बावाश्री के द्वारा अपने भाई राजु बावा के साथ में मिलकर अभियान बहुत ही लंबे समय से चलाया जा रहा है.

पदयात्राएं

उनके द्वारा युवाओं को जगाने के लिए पदयात्राएं तथा दंडवती परिक्रमाएं की जा रही हैं. अपने संबोधनों में भी गोवंश रक्षा करने के लिए पूरा जोर दिया जाता है. चम्पारण में 5 करोड़ का भव्य निर्माण कर वै-णवों को उत्सवों में आमंत्रित किया जाता है. दिसम्बर माह में अन्नकूट में वै-णवों को मार्गदर्शन दिया जाता है. गुंसाई जी के जन्म महोत्सव में भी गोस्वामी श्री द्वारकेश बावाश्री के द्वारा हिंदुओं को जगाया जा रहा है. गोस्वामी श्री द्वारकेश बावाश्री के द्वारा चम्पारण में वल्लभ गोशाला में 284 गोवंश रखकर संवर्धन एवं संरक्षण करने का कार्य वर्तमान में किया जा रहा है.

पूर्व नियोजित कार्यक्रम

गोस्वामी श्री मथुरेश्वर जी महाराज वड़ोदरा सुरत गुजरात वंशज श्री महाप्रभुजी के द्वारा भी विश्व में अपने लालजी गोस्वामी श्री योगेश्वर जी तथा श्री द्रुमिल महाराज श्री के साथ में यात्राएं करके अपनी ओजस्वी वाणी तथा प्रतिभा के माध्यम से गोवंश रक्षा करने के लिए जागृति उत्पन्न की जा रही है. गोवर्धन नाथ जी के मंदिर विश्व में अमेरिका तथा अरब देशों में बनवाकर हिंदुओं को एकत्र किया जा रहा है. अरब देशों में दुबई, अबु धाबी, शारजाह आदि में गोस्वामी श्री मथुरेश्वर जी महाराज के द्वारा कई बार जा कर गोवंश रक्षा करने के लिए हिंदुओं को जगाया जा रहा है. गोस्वामी श्री मथुरेश्वर जी के द्वारा व्रज में यात्राएं निकालकर गोवंश संवर्धन अभियान चलाया जाता है.

विश्वव्यापी अभियान

गोस्वामी श्री व्रजेश महाराज श्री कांकरोली राजस्थान एवं वड़ोदरा गुजरात के द्वारा विश्व में गोवंश रक्षा करने के लिए अपने पुत्रों गोस्वामी श्री द्वारकेशलाल जी तथा गोस्वामी वागीश लाल जी के साथ में मिलकर बहुत ही लंबे समय से अभियान चलाया जा रहा है.

गोस्वामी बालक

गोस्वामी बालक लगभग 250 की संख्या में 142 बैठकों में भी गोवंश रक्षा करने के लिए प्रयत्नशील हैं. विश्व के कई देशों में वै-णव आचार्य निरन्तर जाकर गोवंश रक्षा करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं. गोस्वामी बालक वर्तमान में विश्व में जाकर गोवंश रक्षा करने के लिए कार्य कर रहे हैं. इतिहास के अनुसार वै-णव आचार्य महाप्रभु श्री वल्लभचार्य जी तथा गोस्वामी श्री गोकुलनाथ जी ने भी गोवंश हत्या का विरोध बहुत ही अधिक किया था. श्रीगोवर्धन नाथ जी नाथद्वारा राजस्थान में 500 सालों से बैठकर हिंदुओं के लिए आस्था का केंद्र हैं. नाथद्वारा में 3000 से अधिक गोवंश मौजूद हैं. तिरुपति के बाद में लोकप्रियता के लिए विश्व में श्री गोवर्धन नाथ जी का ही स्थान है. पूरे विश्व में श्री गोर्वधननाथ जी के मंदिरों के माध्यम से हिंदुओं को एकत्रित कर रहे हैं.

बरबादी

वर्तमान समय में भारतीय जैन संघटना के द्वारा पानी की बरबादी, जबरदस्ती सरकार के द्वारा दिए जा रहे अनुदान को बंद करने के विरोध में कतलखानों को पूरी तरह से बंद करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में याचिका लगायी गयी हैं. उनके प्रयत्नों से

सफलता मिल रही है. गुजरात में 47 सालों के बाद में 25 अक्तूबर 2005 को सफलता मिल गयी है. सरकार कतलखानों को बंद करने के लिए मजबूर हो गयी है. संविधान में गोवंश काटने के अधिकार को चुनौती दी गयी है. सरकार के द्वारा कतलखाने खोलने के अधिकार पत्र यानी लाइसेंस पर बहस चल रही है. कतलखानों को दिए गये लाइसेंस के बारे में भी सही जानकारी गोप्रेमी लोगों को नहीं है. जानकारी के अभाव में ही मुसलमान अवैध रुप से हर जगह बहुत ही आराम से गोवंश को काट रहे हैं.

अवैध कतलखाने

कतलखानों के लाइसेंस रदद करवाने के लिए संगठित प्रयत्न करने की आवश्यकता है. विश्व हिंदू परि-द के द्वारा देश में लंबे समय से प्रयत्न अवश्य ही किया गया है. वर्तमान में हिंदुओं को इन कतलखाने के बारे में पूरी जानकारी नहीं है. इन कतलखानों को 2011 तक पूरी तरह से बंद करने के लिए केंद्र की सत्ता योजनाबद्ध तरीके से परिवर्तन करना बहुत ही आवश्यक है.

2011 से आक्रमण

2011 तक हिंदुओं को बहुत अधिक मजबूत करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार 1953 से, रा-ट्रीय स्वयंसेवक संघ 1925 से, विश्व हिंदु परि-द 1964 से, बजरंग दल के साथ मिलकर निरन्तर कार्य कर रहे हैं. मुसलमानों ने भारत की गो आधारित अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त करने के लिये तथा हिदुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिये गाय को काटने की शुरुआत की थी. मुसलमान आज भी गोवंश काटने का कार्य बहुत ही अच्छी तरह से कर रहे हैं.

मदरसे

भारत में 1950 में मदरसों की संख्या मात्र 88 थी और आज मुसलमानों के भारी दबाव में 1 लाख 20 हजार मदरसे हैं. हर मदरसे पर हम सभी हिंदुओं को कड़ी नजर रखने की आवश्यकता है. प्रत्येक मदरसे में चल रही सभी गतिविधियों की पूरी जानकारी हमें सदैव चाहिए. प्रतिदिन यदि मदरसे से 20 मुस्लिम युवक तैयार होकर निकलते हैं तो 6 लाख 20 हजार मुस्लिम प्रचारक बनकर साल भर में भारत में निकलते हैं. मुस्लिम प्रचारक तालिबान जितने ही खतरनाक हैं. इतनी बढ़ी संख्या में मुस्लिम प्रचारक भारत में गद्दारी करने के लिए खतरनाक मानसिकता विकसित करने में लगे हैं.

आम जनता में गलतफहमी

आम जनता को मुसलमानों के बारे में जानकारी नहीं है. आम जनता मुसलमानों को अपना समर्थक समझ रही है. आम जनता को पूरी तरह से जगाना है. मुस्लिम प्रचारकों को गाय विरोधी प्रचार से संगठित होकर तुरन्त ही रोकना बहुत ही आवश्यक है. केंद्र में सत्ता परिवर्तन करने पर ही मदरसों को भारत में पूरी तरह से बंद करना संभव है. मुसलमानों को यदि तुरन्त ही नहीं रोका गया तो भारत में गोवंश के अस्तित्व को खतरा होगा.

हिंदुओं को खतरा

गोवंश के अस्तित्व के साथ हिंदुओं के अस्तित्व को भी खतरा है. मुसलमान कभी भी गाय का समर्थक नहीं है. मुसलमान हमेशा ही अपनी दूध की आवश्यकता के लिए भैंस पालना पसंद करता है. भैंस हमेशा ही हिंसक जानवर है. भैंस को भारत में बढ़ावा मुसलमान के द्वारा दिया जाता है. हिंदुओं को हमेशा ही याद रखना चाहिए कि मुस्लिम देशों इराक, इरान, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, मसकत, दुबई, ारजाह, स्टेट ओफ ओमान आदि में हिंदूओं को अपने धर्म को पालने की सख्त मनाही है. कुवैत में हिंदू को अपना धर्म पालने पर बहुत ही कड़ी सजा है. कुवैत में मुसलमान के द्वारा गोमांस खाने के कारण ही एक भी भारतीय गोवंश दिखाई ही नहीं देता है.

इसाईयत को प्रोत्साहन

भारत में पूर्णकालिक ईसाई प्रचारक 1 लाख 20 हजार 479 हैं जो 1 लाख 75 हजार लोगों को हर साल ईसाई बनाते हैं. पूर्णकालिक ईसाई प्रचारक भारत को पूरी तरह से गरीब और गुलाम बनाने के लिए के लिए हमेशा ही प्रयत्नशील हैं. भारत से बाहर से उन्हें भरपूर मदद आती है. भारत से बाहर से आने वाली मदद पर कड़ी नजर रखकर बंद करने के लिए उपाय करने हैं. ईसाईयों को गोवंश के विरोध में गलत प्रचार करने से तुरन्त ही रोकना आवश्यक है. इसाईयों को गांवों में धर्म परिवर्तन करने से रोकने के लिए हमें कमर कस कर सामने आना होगा.

गोवंश हत्या चरम सीमा पर

2011 तक वर्तमान मनमोहनसिंह तथा सोनिया गांधी की केंद्र सरकार बदलने के लिए ठोस संगठित कार्य आरम्भ किया गया है. ईसाई हमेशा ही गोमांस हिंदुओं को खिलाने के लिए नये नये तरीके विकसित करने में लगा हुआ है. केरल में 80 प्रतिशत मुसलमान तथा ईसाई मांस खाने वाले हैं इसलिये केरल में प्रतिदिन 30 हजार गोवंश कटता है. केरल में गो आधारित विचारधारा के हिंदू लोगों की दिनदहाड़ हत्या की जाती है. केरल में मुसलमानों एवं ईसाईयों के द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के कानून को नहीं माना जाता है और कई क्षेत्रों में आसानी से दिनदहाड़े गायें काट दी जाती हैं.

अवैध मुसलमान भारत में

भारत में 2 करोड 75 लाख मुसलमान कांग्रेस की वर्तमान केंद्र सरकार के प्रोत्साहन के कारण ही अवैध रहते हैं. अपनी दिल्ली की कुर्सी बचाने के लिए इन अवैध लोगों के मत प्राप्त करने के लिए कांग्रेस सरकार उन्हें वैध बना चुकी है. भारत में रहने वाले 2 करोड़ 75 लाख मुसलमानों को तुरन्त ही भारत से बाहर करने के लिए केंद्र एवं राज्य की सत्ता परिवर्तन करने की आवश्यकता है. 2011 तक भारत में अवैध रुप से रहने वाले मुसलमानों को बाहर निकालने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ हो गये हैं.

होटलों में गर्भपात

भारत की होटलों में 58 लाख गर्भपात हर साल धोखे से चिकित्सकों की मदद से शाकाहारी हिंदुओं को खिलाये जाते हैं. आज का आदमी आदमी को बहुत ही चाव के साथ खा रहा है. हिंदुओं को मांसाहारी बनाने के लिए पाकिस्तान तथा बंगलादेश के मुसलमान पूरी तरह से सक्रिय हैं. इंडोनेशिया, ताइवान, ब्राजील आदि मुस्लिम देशों से मेंटोज, फ्लूटेला, चेवअप चोकलेट जो गोमांस से बनती हैं तथा अंग्रेजी में बहुत ही बारीक अक्षरों में लिखा होता है बीफ बोन जिलेटिन यानी गोमांस. पोपींस के समान ही दिखने वाली ये चोकलेट 10 रुपये, 15 रुपये, 25 रुपये की बिकती हैं. हिंदु गोप्रेमी बच्चा धोखे में इन चोकलेट के माध्यम से पूरी तरह से मांसाहारी बन चुका है.

मांसाहार को बढ़ावा

थ्रेपटीन बिस्कीट भी वर्तमान में भारत में शक्तिवर्धक के नाम पर लंबे समय से ऐलोपेथी चिकित्सकों के द्वारा गोप्रेमी हिंदुओं को जबरन धोखे के साथ बहुत बड़ी मात्रा में मेडिकल स्टोरों में बिक्री कर खिलाया जाता है. थ्रेपटीन बिस्कीट बहुत ही मंहगे होते हैं. मंहगे बिस्कीट को सिर्फ अमीर लोग ही खरीद कर खा सकते हैं. थ्रेपटीन बिस्कीट के प्रयोगशाला परीक्षण करवाने की आवश्यकता है. गरीब आदमी तो कल्पना भी नहीं कर सकते हैं. थ्रेपटीन बिस्कीट गाय के खून के अंदर मिलने वाले प्रोटीनों से बनाया जाता है. गाय के खून में बहुत अधिक जीवनशक्ति है इसलिए गाय विरोधी लोगों के द्वारा गाय के खून का उपयोग बिस्कीट के माध्यम से किया जाता है. थ्रेपटीन बिस्कीट भारत में तुरन्त ही बंद करने की आवश्यकता है.

ग्रीज में गो की चर्बी

ग्रीज में गो की चर्बी कतलखानों से सस्ते में लाकर मिलायी जाती है. ग्रीज का उपयोग यंत्रों को चिकना रखने के लिए होता है. ग्रीज में गो चर्बी मिलाने को बंद करने के लिए अभियान चलाने की आवश्यकता है. ग्रीज बहुत बड़ी मात्रा में भारत में उपयोग किया जाता है. नहाने के साबुनों, दाढ़ी बनाने की क्रीम, वेसलीन, कोल्ड क्रीम, ग्लीसरीन, मोम में जानवरों की चर्बी कतलखानों से बहुत ही कम मूल्य पर लाकर मिलायी जाती है. क्रिकेट के गेंदों में भी चमड़े का प्रयोग किया जाता है. भारत में ऐलोपेथी चिकित्सा 2011 तक पूरी तरह से बंद करने के लिए सत्ता परिवर्तन करना ही होगा.

गोवंश की धोखे से हत्या

मुसलमान भारत में गांवों में तथा शहरों में गोवंश को धोखे से खाने में जहर देकर मार देते हैं. हिंदुओं को गो विरोधियों से बहुत अधिक जागरुक रहने की आवश्यकता है. रेल की पटरी पर मुसलमान के द्वारा एकांत में गोवंश को जबरदस्ती धक्का देकर उसकी हत्या की जाती है. रेल की पटरियों के आसपास गोवंश को घूमने से तुरन्त ही रोकना आवश्यक है. मुसलमान के द्वारा रात के अंधेरे में चाकू मारकर गोवंश को जख्मी कर खून से लतपत किया जाता है. हिंदुओं को भारतीय गोवंश को बचाने के लिए बहुत अधिक जागरुक रहने की आवश्यकता है.

गोविरोधी बहुत ताकतवर

भारत में मुसलमानों की जनसंख्या वर्तमान में बहुत ही तेजी से बढ रही है जो बहुत गंभीर चिंता का वि-य है. भारत में मुसलमानों की संख्या बढ़ने से रोकने के लिए 2011 तक भारत को गुजरात के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की तरह ही हिंदूओं को ताकत में लाना है. हिंदु ताकत में रहने पर मुसलमानों को पूरी तरह से कुचलना संभव है. भारत में मुसलमानों की संख्या बहुत अधिक होने पर आजादी के पहले पाकिस्तान के कराची के समान ही गायें दिनदहाडे काटी जायेंगी. भारत में गोवंश को तुरन्त ही बचाने के लिए साफ सुथरे अधिक से अधिक हिंदुओं को राजनीति में तुरन्त ही आने की आवश्यकता है.

धोखाधड़ी

भारत में सुप्रसिद्ध सिने अभिनेता दिलीप कुमार जिसका असली नाम युसुफखान है तथा जो भारत में एक कतलखाने का मालिक भी हैं भारत में कलंक है क्योंकि पाकिस्तान के द्वारा सम्मानित किया गया है तथा सिने निर्माता मेहुल कुमार के समान बहुत सारे मुसलमान अपना असली नाम, वेशभू-ा बदल कर लम्बे समय से सम्मानपूर्वक भारत में रहते हैं. भारत के लिए ऐसे प्रभावशाली मुस्लिम लोग बहुत खतरनाक हैं. इनको भारत से कभी भी प्यार नहीं है. प्रभावशाली मुसलमानों को अच्छी तरह से पहचान करके भारत से बाहर निकालने के लिए हिंदुओं के द्वारा गुजरात के श्री नरेन्द्र मोदी जी की तरह जबरदस्त बल प्रयोग की तुरन्त ही आवश्यकता है.

गुजरात से परिवर्तन आरम्भ

गोवंश के अस्तित्व की रक्षा करने के लिए गुजरात राज्य के 10 सालों तक हिंदुत्व के नाम पर बहुमत से राज्य करने वाले लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के समान और लोगों की आवश्यकता है. गुजरात में नरेन्द्र मोदी जी ने हिंदुओं को ताकत देकर तीसरी बार भी चुनाव जीतने के बाद कमर कस ली है. नरेन्द्र मोदी जी आने वाले 5 सालों में गोरक्षा करने के लिए कमर कस चुके हैं. मुसलमानों के प्रति दया धर्म का मूल है को पूरी तरह से त्यागने की आवश्यकता है. दूध मांगोगे तो खीर देंगे और गायों की ओर देखोगे तो चीर देंगे यह नीति अपनाने की तुरन्त ही आवश्यकता है.

कोई समझौता नहीं

गाय के मसले पर अब हिंदुओं के द्वारा कोई समझौता नहीं होगा और भारत में रह रहे मुसलमान से युद्ध करने के लिए संगठित तैयारी की आवश्यकता है. भारत के हिंदुओं को अपनी गुलामी के अंग्रेजी वस्त्र पेंट और शर्ट को तुरन्त ही उतारकर चोटी, लंगोटी, जनेउ, धोती और कुर्ता पहनना अनिवार्य है. भारत के हिंदुओं को विश्व में अपनी पहचान गोवंश के संपूर्ण विकास करके बनानी बहुत अधिक आवश्यक है. हिंदुओं को अपने घर में तुलसी के अधिक से अधिक वृक्ष लगाने तथा बढ़िया गोवंश पालना अनिवार्य है.

मुसलमान हिंदूओं के साथ भारत में 60 सालों में अपनी योजना के अनुसार मिल गये हैं जिसके कारण ही हिंदू बहुत ही अधिक भ्रमित होते चले गये हैं.

हिंदू नेता पूरी तरह से गलत

मुसलमान भारत में मस्जिदें खोलकर मस्जिदों में गैर कानुनी खतरनाक हथियार एकत्रित कर चुके हैं. मस्जिदों को भारत में तुरन्त ही बंद करने के लिए सत्ता परिवर्तन करने की आवश्यकता है. मुलायमसिंह तथा लालूप्रसाद यादव जैसे हिंदू नेता ही मुसलमानों को खुश करने के लिए गोवंश कटवाने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं. मुसलमानों के समर्थक मुलायमसिंह तथा लालूप्रसाद को सरेआम फांसी पर लटका देने की तुरन्त ही आवश्यकता है.

सत्ता में परिवर्तन आवश्यक

सत्ता में तुरन्त ही परिवर्तन करने के लिए गो समर्थित ताकतवर हिंदुओं को सामने आना होगा. मुसलमानों ने भारत के कई गांवों के नाम भी पूरी तरह से बदल दिये हैं. उत्तरप्रदेश में हरीगढ़ को मुसलमानों के द्वारा अलीगढ़ कहा जा रहा है. गाधीपुर को गाजीपुर कर दिया गया है. गांवों के हिंदु नाम चलन में लाने के लिए सत्ता परिवर्तन ही अंतिम उपाय है. भारत में हिंदू भी मुसलमानों के कारण ही मांसाहारी हो चुके हैं. गोमांस के कार्य में लाभ अधिक होने के कारण ही मुसलमान हिंदुओं के साथ मिलकर अपना कार्य कर रहे हैं.

कतलखानों से पर्य्यावरण में असंतुलन

भारत में पर्यावरण को बिगाडने वाले 2 लाख 4 हजार कतलखानें आज चल रहे हैं जिनमें से 4,000 कतलखानों को सरकार ने स्वयं अनुमति प्रदान की है. भारत सरकार स्वयं देवनार, अलकबीर जैसे विशाल आधुनिकतम यांत्रिक कतलखानों में प्रतिदिन 6,000 गाय माताओं को बहुत ही क्रूरता के साथ काट रही है. दुबई के गुलाम मोहम्मद शेख ने भारत सरकार की 400 करोड रुपये की मदद से अल कबीर कतलखाना हैदराबाद के मेडक जिले के पअनचेरु ग्राम में स्थापित किया है. 20,000 टन मांस निर्यात का अनुबंध ईरान और कुवैत से हुआ है.

गर्भवती गायों पर अत्याचार

गर्भवती गाय को कसाई गांव से भोले भाले लोगों से बहुत ही अच्छे दामों में खरीद कर रात के अंधेरे में सड़क पर कई किलोमीटर पैदल चलवाकर फिर ट्रक से कतलखाने में बेच देता है. एक गाय से 50,000 रुपये कमाई हो जाती है. गर्भवती गाय के गर्भ में पल रहे मासूम बछड़े के मांस की बहुत ही अधिक मांग है. गाय माता को 4 दिनों तक बिना चारे पानी के भूखा और प्यासा रखा जाता है.

भयंकर क्रूरता

गायों को बहुत ही क्रूरता के साथ पीटा जाता है. 200 अंश तक उबलता हुआ खौलता हुआ गरम पानी 5 मिनट तक गाय माता पर डाला जाता है. 100 अंश पर पानी भाप बन जाता है. गाय माता को एक पैर से उल्टा लटका दिया जाता है. फिर जीवित गाय की गर्दन आधी काट दी जाती है. गाय के पेट में छेद कर दिया जाता है. गाय माता में हवा भर दी जाती है. गाय माता जब फूल जाती है तब उसकी चमडी उतार ली जाती है. चमडा उतारने के बाद गाय माता के चार टुकडे कर दिये जाते हैं.

गोवंश हत्या चरम सीमा पर

2,00,000 कतलखाने बिना अनुमति के भारत देश में बहुत ही आराम से देशद्रोही और गाय द्रोही शासन के लोगों के कारण ही हर राज्य सरकार के प्रोत्साहन पर बहुत ही आराम से चल रहे हैं और 1 लाख 4 हजार गायें एवं अन्य जीव मिलाकर 3 लाख 50 हजार प्रतिदिन भारत में बहुत ही क्रूरता के साथ कट रहे हैं जिसके कारण भारत में दिल्ली विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों प्रोफेसर डाक्टर मदन मोहन बजाज जी, डाक्टर विजय राज सिंह, वैज्ञानिक इब्राहिम, राधाकृष्ण झा के अनुसार जीव हत्या के कारण ही भूकंप, बाढ, अकाल, तुफान, अशांति के कारण धरती पर भयंकर विनाश हो रहा है.

सुनामी

2005 में समुद्र में लहरें उंची उठकर 2004 के सुनामी की तरह बहुत बडी मात्रा में लोगों को मारेंगी. कतलखानों के कारण ही प्राथमिक तरंगे उत्पन्न होती हैं. प्राथमिक तरंगे जमीन में रसायनों का गाढापन बढा देती है जिसके कारण ही धरती के नीचे हलचल मच जाती है. भूकंप के कारण ही लाखों लोग मारे जा चुके हैं. भूकंप की भविष्यवाणी करना भी संभव नहीं है. भूकंप को रोकने के लिये मानव के पास कोई अन्य विकल्प मौजूद नही है.

पाकिस्तान को गाय बैल तथा मांस के निर्यात का समझौता

भारत से पाकिस्तान को मांस और गाय बैलों का निर्यात करने के लिये नया समझौता अमेरिका के दबाव में 5 अक्तूबर 2005 से वर्तमान कांग्रेस की भारत सरकार ने किया है. पाकिस्तान सरकार ने भारत से मांस तथा गोवंश के आयात करने के लिये आयात शुल्क पूरी तरह से हटा दिया है. पाकिस्तान सरकार भारत से 4 करोड डालर मूल्य के मांस तथा जिंदा गोवंश का आयात करेगा. यह समझौता भारत को तुरन्त ही बंद करने की आवश्यकता है.

पाकिस्तान में गोवंश की भारी कमी

पाकिस्तान सरकार ने इस्लामाबाद की तुलना में दिल्ली में उपलब्ध वस्तुओं के मूल्य में 15 से 50 फीसदी कम पायी है. भारत सरकार अमेरिका के दबाव में सस्ते मूल्य पर गाय के मांस का निर्यात पाकिस्तान को करेगी. 5 अक्तूबर 2005 से रेल के द्वारा पाकिस्तान में गाय बैल भारत से जाने लगेगें. पाकिस्तान के गोवंश की हालत वर्तमान में बहुत ही अधिक खराब है. पाकिस्तान में खेती करने के लिये अच्छे बैलों की बहुत ही अधिक आवश्यकता है. पाकिस्तान को कोई भी देश बैल देने को तैयार नही है.

गोमांस के लिए आतुरता

पाकिस्तान सरकार समाचार पत्रों में बैल खरीदने के लिये विज्ञापन लम्बे समय से प्रकाशित कर चुका है. पाकिस्तान भारत से बढिया बैल आयात करने के लिये प्रयत्न कर रहा है. पाकिस्तान के मांसाहारियों को गोमांस खाने के लिए हम गोवंश कभी भी नहीं देंगे. पाकिस्तान में मांसाहारियों की संख्या बहुत ही अधिक बढने के कारण 100 रुपये किलो में गाय का मांस बिकता है. वर्तमान में पाकिस्तान में मुर्गियों से सस्ता मांसाहार नहीं है लेकिन मुर्गी भी बीमारी के कारण बहुत अधिक संख्या में मर रही हैं.

पाकिस्तान में 10 लाख गोवंश का आयात

पाकिस्तान को कोई भी देश गाय का मांस देने के लिये तैयार नहीं है. बकरी ईद के समय पाकिस्तान में न्यूजीलेंड और ओस्ट्रेलिया से गायें मंगायी जाती हैं. मेड काउ बीमारी के कारण अब पाकिस्तान ने वहां से गायें मंगवानी बंद कर दी हैं. अपनी नयी मांग के कारण पाकिस्तान भारत से हर साल 10 लाख गोवंश आयात करना चाहता है. पाकिस्तान को एक भी गोवंश काटने तथा मांस खाने के लिए भारत से नहीं देने के लिए हिंदुओं के द्वारा पूरी तरह से संगठित होकर तैयारियां करने की आवश्यकता है.

विनाश काले विपरीत बुद्धि

सामान्यतः वायु की सामान्य रचना में नाइट्रोजन की उपस्थिति 78.06 प्रतिशत तथा ओक्सीजन की मात्रा 20.64 प्रतिशत रहती है लेकिन 100 सालों में ओक्सीजन की मात्रा में उल्लेखनीय कमी हुई है. ओक्सीजन की मात्रा में भारी कमी ने मानव जीवन को पूरी तरह से खतरे में डाल दिया है. विश्व में कई देश जागरुकता के साथ में अपनी भूलों के प्रायश्चित करने में लग गये हैं. मौसम एवं जलवायु पर मानव के द्वारा उपयोग किए जा रहे वातानुकूलित, रेफ्रीजरेटर के कारण उत्पन्न क्लोरो फलोरो कार्बन खतरनाक प्रभाव डाल रही है.

कार्बनिक कचरा

विनाश काले विपरीत बुद्धि वाली कहावत पूरी तरह से सही साबित हो रही है. वर्तमान में भारत में 30,000 लाख टन कार्बनिक पदार्थ व्यर्थ में हर साल पैदा होते हैं जो विभिन्न वातावरणीय समस्याओं का प्रमुख कारण है. भारत में अभी तक कार्बनिक पदार्थ को रोकने के लिए प्रयत्न बहुत ही धीमे स्तर पर किए जा रहे हैं. विश्व के भयंकर दबाव के कारण भारत को भी जैविक तरीकों पर सोचना पड़ रहा है. भारत को ठोस परिणाम लाने के लिए 4 साल का समय और लग जायेगा. 3200 लाख टन कृषि जनित व्यर्थ प्रतिवर्ष पैदा होता है जिसमें धान का पुआल, गेहूं का भूसा, मूंगफल्ली, काफी का छिलका, कपास आदि के डंठल मुख्य हैं.

कचरे का समाधान

केवल गन्ने की खोई के रुप में 40.92 लाख टन हर साल उत्पन्न होता है. 2000 लाख टन व्यर्थ द्रव तथा जानवरों के मलमूत्र के रुप में उत्पादित होता है. घरों में प्रतिदिन कितने प्रकार का कूड़ा करकट निकलता है. यदि इसके डिग्रेडेबल आर्गेनिक वेस्ट को नोनडिग्रेडेबिल वेस्ट प्लास्टिक, लोहा, कांच आदि से अलग कर दिया जाये तो इससे घरेलू स्तर पर प्लास्टिक की बाल्टी, पेटी, बड़े गमलों आदि में केचुआ खाद बनाया जा सकता है. इससे प्रतिदिन निकलने वाले घरेलू कचरे से मुक्ति भी मिलेगी तथा बगीचों में गमलों, सब्जियों में केचुआ खाद का उपयोग किया जा सकता है.

केंचुआ खाद से समाधान

प्रतिदिन रसोईघर से निकलने वाले सब्जियों, फलों के छिलके, दालों व अनाज के चोकर, बची हुई खाने की सामग्री का उपयोग केचुआ खाद बनाने के लिये किया जा सकता है. भारत की बहुत बड़ी बचत वातावरणीय समस्या केंचुआ खाद के माध्यम से हल करने पर हो सकेगी. 103 करोड़ की बचत मात्र कृषि अवशेषों के 50 प्रतिशत उपयोग करने पर संभव है. 30,000 लाख टन कार्बनिक व्यर्थ को केंचुआ खाद में बदलने पर भारत सोने की चिड़िया बन जायेगा.

जैविक खेती में भारत सबसे पीछे

जैविक खेती करने वाले देशों में ओस्ट्रेलिया 10,500,000 हेक्टर, अर्जेंटीना 3,192,000 हेक्टर, इटली 1230,000 हेक्टर, अमेरिका 9,50,000 हेक्टर, ब्रिटेन 4,78,631 हेक्टर, जर्मनी, स्पेन, कनाडा तथा फ्रांस हैं. जर्मनी में 91 प्रतिशत भूमि उपजाउ है. 6,51,99,530 एकड़ जमीन में खेती जर्मनी में होती है. 2,13,97,300 एकड़ गोचर भूमि जर्मनी में है. क्यूबा 100 प्रतिशत जैविक खेती करने वाला देश बन गया है.

विशाल भूमि बरबाद

भारत के पास वर्तमान में 1571964 वर्गमील यानी 1,16,29,19,000 एकड़ भूमि है. 28,66,51,705 एकड़ जमीन खेती करने के लिए काम में आती है. भारत के पास विकसित देशों के

समान खेती करने योग्य तथा गोचर भूमि नहीं है. भारत को अपनी खेती करने योग्य भूमि को रसायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों से बचाने की आवश्यकता है. भारत को अपनी पूरी भूमि को बरबाद होने से बचाने की आवश्यकता है. भारत में अकाल बहुत अधिक पड़ते रहते हैं इसलिए भारत को बहुत ही सावधानी बरतने की आवश्यकता है. भारत में बाढ़, भूकंप भी बहुत ही अधिक आते हैं. प्राकृतिक विपदाओं में भारत की खेती बहुत अधिक प्रभावित होती है. भारत को केंचुआ खाद की मात्रा खेती करने के लिए बहुत अधिक चाहिए.

जैविक लहर

ग्रेट ब्रिटेन में 7,50,0000 एकड़ भूमि कुल है. 4,60,00,000 एकड़ भूमि खेती करने के लिए काम में आती है. गोचर भूमि 2,30,00,000 एकड़ है. अमेरिका में गोचर भूमि 1,05,50,00,000 एकड़ है. कुल जमीन की 55 प्रतिशत गोचर भूमि अमेरिका में है. न्यूजीलैंड में 6,70,40,640 एकड़ भूमि में से 2,80,00,000 एकड़ में खेती की जाती है. 2,72,00,000 एकड़ गोचर भूमि है. अमेरिका, कनाडा, ब्राजील, मेक्सीको, फिलिपाइन्स, यूनाइटेड किंगडम, मलेशिया, इंडोनेशिया, हांगकांग, जापान में वर्तमान में बहुत बड़े स्तर पर केचुओं का उपयोग वर्मी कल्चर तैयार करने के लिये किया जाता है.

केंचुआ खाद

विश्व में विकसित देश अमेरिका 90,000 केंचुआ खाद तैयार करने के फार्म हाउस विकसित कर चुका है. 30,000 डालर के केंचुए अमेरिका हर साल कनाडा से आयात करता है. जापान भारत से गोबर का आयात बहुत बड़ी मात्रा में कर रहा है. मलेशिया गोबर के कंडे भारत से बहुत बड़ी मात्रा में आयात कर रहा है. भारत में गो विरोधी लोग गोबर से तैयार जैविक खाद जिसमें सींग खाद 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, केंचुआ खाद, सी. पी.पी. खाद, मटका खाद, गोबर गैस स्लरी, नेडेप खाद, इंदौर विधि, चार गढ़ढ़ा विधि, समाधि खाद के बदले में रासायनिक खादों यूरिया, डाई अमोनियम फास्फेट, सिंगल सुपर फास्फेट, जिंक सल्फेट, कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का अंधाधुंध उपयोग किया जाता है.

जहरीले कीटनाशक

535 कीटनाशकों इंडोसल्फान, डीटीसी, डीकोफाल, बीएचसी, बीएचसीडी, एचसीएच, डायएल्ड्रिन, लिन्डेन, लीन्यूरान, ईडीबी, इथाइल, डीब्रोमाइट, पैराथिमान, डीबीसीपी, फोसीडोल, फोरेट, मैलाथियान, मोनोकोटोमिडान, अल्डीकार्ब, केप्टीफोल, करोफुरान, क्लोरोबेंजलेट, थीरम, सोडियम सायनायड, मेलियक, मिथाइल पैराथियान, मोनोक्रोटोफास, आक्सीक्लोरोफेन, पाराक्विट डीक्लोराइट, फास्फामीडोन, हाइड्राजाइट, ट्राइक्लोरोएसिटिक एसिड, कारबोफुरेन, अल्क्लोर, एल्यूमिनियम फास्फाइड, बेनोमाइल, केप्टन, कारबारिल, कारबोसल्फान, डीमेथेट, डयूरान, फेनप्रोपारिन, प्रेटलाकोर, सोडियम सायनायड, थियोमेटान, जीरम, न्यूरोटोक्सीकेंट, मेाक्सीक्लोर, हेप्टोक्लोर, डाइबोमो-क्लोरोप्रोपेन, ट्रायाजोफास, ट्राइडेमार्फ, हबीसाइडस-2, फोर डी, के कारण जानलेवा बीमारियां तेजी के साथ में हो रही हैं.

अकाल मृत्यु

रक्त कैंसर, मुंह का कैंसर, मसूढ़ों का कैंसर, गले का कैंसर, ग्रासनली का कैंसर, आमाशय का कैंसर, आंतों का कैंसर, गुदा कैंसर, यकृत का कैंसर, फेफडों का कैंसर, अंडकोष का कैंसर, लिंग का कैंसर, आंख का कैंसर, गुर्दे का कैंसर, मूत्राशय का कैंसर, गर्भाशय की रसौली का कैंसर, स्तन का कैंसर, गर्भाशय का कैंसर, लसिका ग्रंथि का कैंसर हो रहा है.

ग्रासनली कैंसर

भारत में 1 लाख में 40 से 50 लोगों को ग्रासनली का कैंसर होता है.

गुदा कैंसर

गुदा का कैंसर बहुत ही कम केवल 5 प्रतिशत होता है. गुदा का कैंसर महिलाओं को अधिक होता है. 65 प्रतिशत महिलाये इससे पीड़ित रहती हैं. एक तिहाई व्यक्ति 40 से 49 साल के बीच में गुदा के कैंसर से पीड़ित रहते हैं. एक तिहाई व्यक्ति 60 साल से अधिक की आयु में गुदा के कैंसर से पीड़ित रहते हैं.

मसूढ़ों का कैंसर

40 साल से अधिक आयु के लोगों को निचले मसूढ़ों में कैंसर हो रहा है. 1 लाख की जनसंख्या में लगभग 6 लोगों को यह रोग होने की संभावना है. पुरुषों में यह कैंसर महिलाओं की तुलना में अधिक होता है. बच्चों में यह 2 से 6 साल तथा 16 साल के बीच में अधिक मिलता है. यह रोग गोरे लोगों को अधिक देखने मिलता है. पुरुषों में 35 से 55 साल की आयु में अधिक देखने मिलता है.

लिंग कैंसर

लिंग का कैंसर एक लाख की आबादी में लगभग 5 व्यक्तियों को होता है. लिंग का कैंसर युवावस्था में देखा जाता है लेकिन अधिकांश रोगी 50 साल से अधिक आयु के होते हैं.

होठ कैंसर

विश्व में वर्तमान में निचले होठ का कैंसर बहुत ही तेजी से हो रहा है. 40 साल के बाद की आयु में यह रोग होता है. भारत में भी वर्तमान में धूम्रपान तथा तंबाकू का सेवन बढ़ने के कारण ही निचले होठ का कैंसर बहुत अधिक हो रहा है. निचले होठ में कैंसर उपर के होठ की अपेक्षा अधिक होता है. निचले होठ पर कैंसर के आक्रमण होने की संभावना अधिक रहती है इसलिये निचले होठ पर कैंसर अधिक होता है. निचले होठ का कैंसर स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता

यकृत कैंसर

यकृत का कैंसर स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में अधिक होता है. यकृत का कैंसर 30 साल या उससे अधिक आयु में अधिकतर होता है.

फेफड़े का कैंसर

फेफड़े का कैंसर 5 गुना अधिक होता है. 1 लाख व्यक्तियों में से 6 से 14 लोग फेफड़े के कैंसर से पीड़ित हैं.

मृत्यु चरम सीमा पर

विश्व में फेफड़े के कैंसर से मरने वालों की संख्या 1 मिलियन से अधिक है. विश्व में मर्दो में 31 प्रतिशत मौंते फेफड़ों के कैंसर के कारण होती है. महिलाओं में 25 प्रतिशत मौतें फेफड़े के कैंसर के कारण होती है.

मुंह का कैंसर

विश्व में हर साल 6 लाख लोगों को मुंह का कैंसर होता है. 3 लाख लोगों की मृत्यु हर साल विश्व में मुंह के कैंसर के कारण होती है. पाश्चात्य देशों में मुंह का कैंसर मात्र 5 प्रतिशत है जबकि भारत में एक लाख की जनसंख्या में 15 पुरुषों तथा 7 महिलाओं को मुंह का कैंसर होता है. न्यूयार्क में बसे भारतीय मूल के डाक्टर और कैंसर विशेषज्ञ डाक्टर भद्रसेन विक्रम के अनुसार मुंह का कैसर महामारी का रुप लेंगे. मुंह का कैंसर बहुत तेजी से बढ़ रहा है

गर्भाशय का कैंसर

विश्व में महिलाओं को गर्भाशय का कैंसर बहुत ही तेजी के साथ फैल रहा है. अमेरिका में इस रोग से 11000 महिलायें हर साल मर रही हैं. भारत में कुल कैंसर का 30 से 40 प्रतिशत गर्भाशय के कैंसर हो रहे हैं. भारत में आठवी महिला गर्भाशय कैंसर की मरीज है. 5 लाख महिलायें हर साल गर्भाशय कैंसर की शिकार हो रही हैं. 35 से 50 साल की महिलाओं को गर्भाशय का कैंसर बहुत अधिक होता है.

गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर

गर्भाशय के कैंसर की तुलना में गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर 30 गुना होता है. गर्भाशय ग्रीवा कैंसर कई चरणों में होता है. 20 साल से कम की आयु में महिलाओं को गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर बहुत कम मिलता है. जैसे जैसे महिलाओं की आयु बढ़ती जाती है गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर की संभावना बढ़ती जाती है. गर्भाशय ग्रीवा कैंसर की सबसे अधिक संभावना 35 से 40 साल के बीच में होती है. 65 साल की आयु में ग्रर्भाशय ग्रीवा का कैंसर बहुत अधिक होता है. विकासशील देशों में गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर बहुत अधिक पाया जाता है.

प्रोस्टेट ग्रंथि का कैंसर

अक्सर 40 साल की आयु के बाद मर्द को होता है.

गर्भाशय में रसौली का कैंसर

स्त्री शरीर में पाए जाने वाले कैंसरों में से सर्वाधिक प्रतिशत में पाया जाने वाला कैंसर है. यह गर्भाशय में पाया जाने वाला एक सुदम्य अबुर्द है जो अधिकांश रुप में मिलता है. यह कैंसर स्त्रियों में प्रजनन काल में मिलता है तथा यह 30 से 45 साल की आयु में सबसे अधिक मिलता है. यह रोग 20 साल से कम की आयु में सबसे कम मिलता है. 30 से 40 साल की प्रत्येक पांचवी महिला में यह रसौली पायी जाती है.

त्वचा कैंसर

आयरिस और स्काटिस के मूल लोगों को त्वचा का कैंसर बहुत अधिक होता है. ओस्ट्रेलिया तथा तस्मानिया में त्वचा के कैंसर बहुत ही अधिक हैं. कोमल तथा उजली त्वचा वाले लोगों को त्वचा का कैंसर बहुत ही अधिक होता है. डेनमार्क में सरकार त्वचा के कैंसर से बहुत ही अधिक परेशान है. कार चला रहे 85 प्रतिशत लोगों को त्वचा का कैंसर होता है.

भ्रूण कोशिकाओं से उत्पन्न कैंसर

विश्व में बच्चों में होने वाले कैंसरों में 10 प्रतिशत यह कैंसर है. यह लड़के तथा लड़की दोनों में होता है. यह कैंसर न्यूरोब्लास्टोमा, प्राथमिक तंत्रिका भ्रूण कोशिकाओं से उत्पन्न होता है. यह कैंसर मुख्यतः अधिक एड्रीनल ग्रंथि, पोस्टेरियर मीडियास्टाइनम, ग्रैव क्षेत्र, अनुकंपी चेन में मुख्यतः पाया जाता है तथा मेटास्टेसिस, अस्थिमज्जा यानी बोनमेरो, यकृत यानी लीवर, प्लेसेंटा में फैल जाते हैं. मेटास्टेसिस इतनी तेजी से फेलते हैं कि जन्म से पहले ही कैंसर के मेटास्टेसिस फलेसेंटा में फेल चुके होते हैं. एक बार ट्यूमर की मेटास्टेसिस होने के बाद रक्तस्त्राव प्रारम्भ हो जाता है. कैंसर के कुछ रोगी कैटकोलामींस तथा वैसोएक्टिव इंटेस्टाइनल पेप्टाइड को उत्सर्जित करते हैं. 10 साल तक के बच्चों में पाया जाने वाला कैंसर है. 75 प्रतिशत बच्चे 5 साल से कम आयु के होते हैं. यह कैंसर बहुत कम लोगों में पाया जाता है. फिर भी पुरुषों में 20 से 34 साल की आयु में प्रमुख रुप से होने वाला कैंसर है.

गले का कैंसर

60 साल की आयु के बाद अधिकतर गले के कैंसर के पुरुष मरीज होते हैं.

मूत्राशय कैंसर

कैंसर से मरने वालों में कुल मौतों का 2 से 5 प्रतिशत मौत मूत्राशय कैंसर के कारण हो रही है. 50 से 70 साल के बीच में मूत्राशय का कैंसर बहुत ही अधिक होता है. भारत में भी मूत्राशय के कैंसर बहुत ही तेजी से बढ़ रहे हैं. भारतीय चिकित्सा परिषद मूत्राशय के कैंसर को रोकने के लिये प्रयत्नशील है. वर्तमान में भारत में प्रति 1 लाख की जनसंख्या में 5 से 7 पुरुष तथा 2 से 3 महिलाओं को मूत्राशय का कैंसर हो रहा है.

आमाशय का कैंसर

संसार के 10 प्रतिशत लोग आमाशय कैंसर के कारण मर रहे हैं.

रक्त कैंसर

1 लाख में से 6 रोगी रक्त कैंसर के हैं. रक्त कैंसर बच्चों में सर्वाधिक पाया जाने वाला कैंसर है. बच्चों में पाये जाने वाले सभी कैंसरों में 30 प्रतिशत रक्त कैंसर है. एक्यूट लिंफायड ल्यूकीमिया, एक्यूट मायलायड ल्यूकीमिया, क्रोनिक लिंफोयड ल्यूकीमिया, क्रोनिक मायलायड ल्यूकीमिया रक्त कैंसर के प्रकार हैं. 70 से 80 प्रतिशत एक्यूट लिंफायड ल्यूकीमिया बच्चों में पाया जाता है. यह रोग लड़कों में अधिक पाया जाता है. 2 से 10 साल के बच्चों में यह पाया जाता है. 3 से 7 साल के बच्चों में यह रोग मुख्य रुप से पाया जाता है. जन्म लेने वाले 2000 बच्चों में से 1 बच्चा इस रोग का शिकार हो जाता है. एक्यूट मायलायड ल्यूकीमिया बच्चों में पाये जाने वाले रक्त कैंसर में से 20 से 30 प्रतिशत इस रोग से पीड़ित हैं.

स्तन कैंसर

सामान्य रुप से सभी कैंसरों में 20 प्रतिशत स्तन कैंसर महिलाओं को हो रहा है. विश्व में 8 करोड़ से अधिक लोगों को सभी प्रकार के कैंसर है.

नेत्र कैंसर

नेत्र से जन्म लेने वाला कैंसर मानव के लिए वर्तमान में बहुत ही गंभीर समस्या बन गया है. बच्चों में होने वाले कुल कैंसर का 12 प्रतिशत यह कैंसर है. 1 से 2 साल की आयु के 2000 बच्चों में से 1 को आंख के पर्दे रेटिना का कैंसर होता है. यह रोग 1 से 2 साल के बच्चों में सबसे अधिक पाया जाता है. यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में एक प्रभावी गुण के रुप में स्थानांतरित और प्रकट होता है. विश्व में बच्चों में सबसे अधिक फैलने वाला कैंसर है. भारत में नवजात बच्चों में आंख के पर्दे रेटिना का कैंसर होने की संभावना बहुत ही अधिक है. 90 प्रतिशत बच्चे 5 साल से कम आयु के होते हैं.

मानव पर भयंकर खतरा

स्तन कैंसर

वर्तमान में 10 में से 1 महिला को स्तन कैंसर होने की संभावना है.अस्थि का कैंसर, जीभ का कैंसर, निचले होंठ का कैंसर, बाल्यावस्था के कैंसर, त्वचा का कैंसर, गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर, एडस, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, वात, नजला, सिरोसिस, सिफलीस, क्षय रोग, हकलाना, अंधापन, बहरापन, रतौंधी, टाइफाइड, मस्तिष्क ज्वर, डेंगू, बुखार, पेट में दर्द, हडडी के रोग, खूनी बवासीर, बादी बवासीर, दांत के रोग, त्वचा के रोग, सेक्स के रोग, बालों का झड़ना, बालों का असमय पकना, बड़ी आंत की बीमारी, जलोधर, गर्भपात, नपुंसकता, रक्त की खराबी, मधुमेह, आमाशय की बीमारी, यकृत की बीमारी, हाइड्रोसिल, अतिसार, संग्रहणी, गैस, कब्ज, मूत्राशय की बीमारी, स्वप्नदोष, मोटापा, मिर्गी, उन्माद, मूर्छा, पागलपन, स्मृतिनाश, मंदबुद्धि, मानसिक विकलांगता, मासिक धर्म की अनियमितता, रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, बांझपन, ह्रदय रोग, सांस की बीमारी, गुर्दे की बीमारी, रक्त की कमी, हीपेटाइटिस बी यानी यकृत कामला, कामला की बीमारी से लोग बहुत बड़ी संख्या में मर रहे हैं.

यकृतीय कामला

पूरे विश्व में 30 करोड से भी अधिक लोगों को यकृतीय कामला यानी हिपेटाइटीस बी की प्राणघातक बीमारी है. प्रतिवर्ष 45 प्रतिशत और अधिक मरीज हीपेटाइटिस बी के बढते ही जा रहे है. भारत में ढाई लाख लोग प्रतिवर्ष इस बीमारी से मर रहे हैं.

बच्चों में कैंसर

भारत में जन्म लेने वाले मासूम बच्चे रक्त कैंसर, गुर्दे के कैंसर, आंख के कैंसर, यकृत कामला जैसे खतरनाक रोग से ग्रसित हैं तथा उनका मरना निश्चित है. 20 करोड़ से अधिक लोग मधुमेह से परेशान हैं.

अस्थि कैंसर

अस्थि के ज्यादातर कैंसर शरीर के अन्य भागों में पैदा होकर रक्त संचार द्वारा हडिडयों में पहुंचाते हैं. अस्थि कैंसर में अस्थिमज्जा से प्रारम्भ होकर विस्तृत फैलाव व अस्थि का नाश करता है. अस्थि कैंसर बहुत खतरनाक है इसलिये इसमें हडडी काट देने के बाद भी कैंसर होते देखा गया है. महाकोशिका अर्बुद 20 साल के पूर्व तथा 55 साल के बाद बहुत ही कम पाया जाता है. यह कैंसर पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक मिलता है. इंविंग्स सारकोमा 7 से 15 प्रतिशत तक मिलता है. यह कैंसर अधिकतर बच्चों तथा प्रौढ़ावस्था के लोगों में मिलता है. 4 से 25 वर्ष की आयु में लम्बी अस्थियां प्रभावित होती हैं. यद्यपि यह किसी भी हडडी में हो सकता है. यह कैंसर शल्यचिकित्सा और रेडियोथैरेपी से भी ठीक नहीं होता है.

ब्रेन ट्यूमर

भारत में इस समय कुल जनसंख्या 125 करोड़ का 0.75 प्रतिशत ब्रेन ट्यूमर से पीड़ित हैं. भारत में गांवों में भी ब्रेन ट्यूमर के मरीज मौजूद हैं. ब्रेन ट्यूमर 30 साल पहले विश्व में इतना अधिक नहीं होता था लेकिन वर्तमान समय में 4 गुना बढ़ गया है.

खून की कमी

खून की कमी से 50 करोड़ से अधिक लोग भारत में बीमार हैं. 88 प्रतिशत गर्भवती महिलाएं खून की कमी से परेशान हैं. 85 हजार गर्भवती महिलाएं प्रसूति के समय हर साल भारत में मर रही हैं. भारत में 60 प्रतिशत 5 साल से कम आयु के बच्चे खून की कमी से परेशान हैं.

महामारी

आने वाले समय में भारत में बीमारियां महामारी का रुप कभी भी धारण कर लेंगी जिससे एक ही झटके में बेमौत मर जायेंगे. इन बीमारियों से लड़ने के लिए भारत को खरबों रु. खर्च करने पड़ रहे हैं.

एडस

वर्तमान में एडस के मरीज भारत में निरन्तर बढ़ रहे हैं. देश में करीब 75 हजार मासूम बच्चे एडस से ग्रसित हैं. बच्चे अकारण ही अकाल मृत्यु के शिकार हुए है. 25 साल से कम आयु के 50 प्रतिशत युवा एडस से ग्रसित हैं. 18 से 35 साल की आयु के युवा ज्यादातर लोग एडस के रोगी बन रहे हैं. जैसे जैसे एडस के रोगी देश में मरते जा रहे हैं वेसे वैसे ही जागरुकता बढ़ रही है.

तड़फ तड़फ कर मर रहे

23800 नवजात शिशु एडस संक्रमण के साथ जन्म लेते हैं. इन नवजात शिशुओं को बचाने के लिए प्रयत्न बहुत ही कमजोर हैं. नवजात शिशु बहुत ही क-ट के साथ में तड़फ तड़फ कर मर रहे हैं.

मां का प्यार

वर्तमान में भारत में मातायें अपने स्तनों के सौंदर्य के खराब हो जाने के डर से अपने बच्चों को अपना दूध पिलाती ही नहीं हैं. बच्चा मां के दूध की मिठास के लिये तरस गया है. बच्चा मां के प्यार के लिये तरस रहा है. बच्चा मां के ममत्व के लिये तरस गया है.

दूध की बोतल

भारत में वर्तमान में महानगरों में बच्चा जन्मा तो बच्चे को सीधे ही दूध की बोतल. बच्चे को जन्म से ही बोतल की आदत पड जाने के कारण ही बच्चा मां से बहुत दूर चला जाता है.

जहरीले पेय की बोतल

10 साल की आयु में बच्चा मिनरल वाटर की बोतल पीता है. ठंडे जहरीले पेय की बोतल जीवन भर पीता है.

दारु की बोतल

25 साल की आयु में शराब की बोतल पीता है.

खून की बोतल

45 साल की आयु में उसे ग्लूकोज और खून की बोतल चढ़ती है. अपनी मां को मां नहीं समझता है.

बोतल का लाल

बच्चा बोतल का लाल बन जाता है. बच्चा जब मां को ही मां नहीं समझता है तब गाय को माता कैसे मानेगा.

जन्मदिन या मरणदिन

लार्ड मेकाले की शिक्षा नीति के खतरनाक परिणाम इस तरह से दिखाई दे रहे हैं. हमारी संस्कृति में केक काटकर जन्मदिन मनाने की परम्परा वर्तमान समय के अनुसार नहीं रही है. तीन साल का मासूम बच्चा जन्मदिन के नाम पर बिना धार का चाकू जब पहली बार केक काटने के लिये पकड़ता है तो उसका हाथ एक बार कांप जाता है. वह अपने मां बाप को केक काटने के लिये मना कर देता है. मां बाप आज की आधुनिकता में अपने आपको पीछे नहीं रखना चाहते हैं इसलिये बच्चे से जबरदस्ती केक कटवाते हैं. बिना धार के चाकू पकड़ते पकड़ते एवं केक काटते काटते उसको धार वाले चाकू पकड़ने की आदत हो जाती है और गाय काटने का अभ्यास भी पूरी तरह से हो जाता है.

दया ममता समाप्त

चाकू से काटने के कारण ही उसके अंदर की दया ममता करुणा प्रेम की भावना पूरी तरह से समाप्त हो जाती है.

मरणदिन

हमारी संस्कृति में जब कोई मर जाता है तब मुंह से फूंक कर दिया बुझाते हैं. वर्तमान में भारत में बच्चों को जन्मदिन पर केक पर लगायी गयी मोमबत्ती को अपने मुंह से फूंक कर बुझाने पर ताली बजाकर मरणदिन मनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है. बड़े होने पर मरणदिन मनाने की आदत पड़ जाती है. अंडों से तैयार केक काटने की गलत परम्परा अब हर घर में आ जाने के कारण मांसाहार की नींव घर में पड़ने के कारण गाय माता के लिये कोई जगह है ही नहीं. हमारी संस्कृति में जन्मदिन मनाने के लिये अपनी आयु के अनुसार अधिक से अधिक पेड़ लगाने, गरीब, अनाथ, वृद्ध, विकलांग, बीमार की सेवा करने, गोमाता को मीठा खिलाने की परम्परा है.

परिवारवाद की भावना समाप्त

हमारी संस्कृति में प्रेम, भाईचारे, आपसी त्याग, तप एवं बलिदान पर आधारित परिवारवाद की भावना सर्वोपरि है लेकिन परिवारवाद की भावना को पूरी तरह से ध्वस्त करके विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा विज्ञापनों के द्वारा तैयार भावना के कारण आज भोग विलास, भौतिक सुख, लालच उत्पन्न करके बाजारवाद ही हमारा सभी कुछ बन गया है. आज हर चीज देश में बिक रही है जिसके कारण मानव के लिये अनिवार्य हवा, पानी जैसी सभी चीजें बिक रही हैं. आज बहुत बढ़िया गोवंश भी कटने के लिये गांवों में लगाये जा रहे मेलों, प्रदर्शनों, हाटों, बाजारों में बहुत ही आराम से बिक रहा है.

मनोरंजन के नाम पर हिंसा

मनोरंजन के नाम पर हम अपने यहां पर टीवी लाते हैं जिसमें हम चेनल की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं. हमारा 3 साल का मासूम बच्चा प्रतिदिन 5 घंटा चेनल बहुत ही चाव के साथ देखता है और 20 साल तक लगातार चेनल देखते हुए 72000 बार बलात्कार, 32000 बार हत्या, 17000 बार हिंसा देखकर उसके अंदर की दया, करुणा और ममता पूरी तरह से समाप्त हो जाती है.

मानसिक असंतुलन

अमेरिका में 9 करोड़ बच्चे बहुत अधिक चेनलों के कारण ही पूरी तरह से मानसिक विक्षिप्त हो गये हैं.

ब्राजील में भारतीय गोवंश का विकास

ब्राजील में भारत के भूतपूर्व राजवी श्री सत्यजित खाचर के द्वारा 108 गायों को पाला जा रहा है. श्री सत्यजित खाचर ने 59 सालों से गीर प्रजाति का संपूर्ण विकास किया है इसलिए गीर प्रजाति के 120 किलो दूध देने वाली रुपा के पुत्र जसरण सांड की बोली पौने दो लाख डालर तक बोली गयी थी.

सांड की बोली 80 लाख

ब्राजील में गीर गाय रुपा की बोली पौने चार लाख रुपयो तक गयी थी.

120 किलो दूध एक दिन में

रुपा गीर गाय ने ब्राजील में 120 किलो एक दिन में दूध देकर भारतीय गोवंश की ओर सभी का ध्यान खींचा. एक दिन में 218 किलो दूध देकर गीर ने वर्तमान में ब्राजील में फिर से भारतीय गोवंश की ओर ध्यान खींचा. ब्राजील में भारत की बहुत अच्छी नस्लों अंगोल, कांकरेज, सींधी, साहीवाल का संपूर्ण विकास किया गया है. वर्तमान में पूरे विश्व में गाय माता का महत्व भारत से ही बहुत ही अधिक बढ गया है.

गोरक्षा की आवश्यकता क्यों है?

भारत में गोरक्षा की आवश्यकता क्यों है? यह गंभीर प्रश्न आज हम सभी हिंदुओं के सामने उत्पन्न हुआ है. हमें गंभीरता के साथ इस प्रश्न पर विचार करने की आवश्यकता है.

1 गोरक्षा यानी गाय माता की रक्षा.

2 गोरक्षा यानी धरती माता की रक्षा.

3 गोरक्षा यानी इंद्रियों की रक्षा.

4 गोरक्षा यानी सत्य की रक्षा

5 गोरक्षा यानी असुरों से ब्रहमांड की रक्षा

6 गोरक्षा यानी जीवन की रक्षा

गोरक्षा से जीवन की रक्षा

गोरक्षा से स्वयं के अस्तित्व की रक्षा हमारा अस्तित्व गाय माता से पूरी तरह से जुडा हुआ है. ब्रहमांड में 8 लोग हनुमान जी, अश्वथामा जी, विभीषण जी, बलि, कृपाचार्य जी, मार्कण्य ऋषि, परशुराम जी, वेदव्यास अमर हैं क्योंकि वे सभी गाय माता की सेवा तथा गाय माता का ही दूध पीकर अमर हैं.

पर्यावरण की रक्षा

विश्व में 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस, 16 सितम्बर को अंतरा-ट्रीय ओजोन परत दिवस, 22 अप्रेल पृथ्वी दिवस, 26 दिसम्बर जैव विविधता दिवस, 21 मार्च को सामाजिक वानकी दिवस, 3 दिसम्बर रा-ट्रीय पर्यावरण संरक्षण दिवस, 2 दिसम्बर रा-ट्रीय प्रदू-ाण निवारण दिवस, 12 नवम्बर रा-ट्रीय पर्यावरण दिवस, 6 अक्तूबर वन्य जीव दिवस, 3 अक्तूबर विश्व पशु दिवस, 1 अक्तूबर आवास दिवस, 11 जुलाई विश्व जनसंख्या दिवस, 23 दिसम्बर विश्व किसान दिवस, 28 फरवरी रा-ट्रीय विज्ञान दिवस, 11 अप्रेल विश्व हेरिटेज दिवस, अक्तूबर का द्वितीय बुधवार, 31 मई तम्बाकू उन्मूलन दिवस, 26 जून मादक पदार्थ उन्मूलन दिवस, 1 फरवरी सुंदर वन प्रोटोकोल दिवस के रुप में मनाया जाता है.

पर्यावरण असंतुलन

वर्तमान समय में 1980 के नासा वैज्ञानिकों के द्वारा किए गये अनुसंधानों के कारण ही यह बात हर किसी को ज्ञात है कि वातावरण में ओजोन की मौजूदगी बहुत ही अल्प मात्रा में है. 1956 से ओजोन के मापन का कार्य प्रारम्भ किया गया था. 1974 में ओजोन को समाप्त करने वाले रसायनों की ओजोन परत की कुदरती ढाल धरती पर जीवन के अस्तित्व को कायम रखे हुए है.

ओजोन परत में छिद्र

2003 में 280 लाख वर्गकिलोमीटर आकार ओजोन छिद्र का दर्ज किया गया है ओजोन का एक अणु ओक्सीजन के 3 परमाणुओं से बनता है. ओजोन की गंध बिजली के तार जलने जैसी होती है. उच्च उर्जा वाले यूवी-बी विकिरण जब ओक्सीजन को विभक्त करते हैं तब ओक्सीजन के छूटे हुए परमाणु ओजोन का एक अणु बनाते हैं. ओजोन एक रंगहीन गैस है. ओजोन के टूटने और बनने की क्रिया लगातार चलती रहती है.

वैज्ञानिक अनुसंधान

1928 में सीएफसीज की खोज की गयी थी तथा दीर्घजीवी एवं अविनैले होने के कारण ही वातानुकूलन, अग्निशमन, घोलक यानी सोलवेंट, रेफ्रीजरेशन में ठंडक के लिए,, फोम्स, स्प्रे केन्स,में उपयोग किया जाता है. मानव के सुखपूर्वक जीवन जीने की लालसा के कारण ही 82 प्रतिशत जिसमें 28 प्रतिशत प्लास्टिक फोम्स, 23 प्रतिशत अनिरधारित उत्पादन, 17 प्रतिशत चलित वातानुकूलित, 12 प्रतिशत धातु एवं इलेक्ट्रोनिक के कलपुर्जों की सफाई व सोलवेंट के रुप में, 9 प्रतिशत रेफिजेशन, 5 प्रतिशत ऐरोसोल प्रोपेलेंट व अन्य उपयोग, 4 प्रतिशत चिकित्सा औजारों के विसंक्रमण हेतु क्लोरोफलोरो कार्बन्स की उत्पत्ति होती है. मानव की प्रकृति के क्रियाकलापों में बढ़ती अवांछित दखलंदाजी ने अपनी सुरक्षा कवच में ही सेंध लगा दी है.

त्वचा कैंसर

वातावरण में विश्व में ओजोन की परत में बहुत ही बड़ा छेद होने के कारण सूर्य की पराबैंगनी यानी अल्ट्रा वायलेट जिसे संक्षिप्त में यूवी किरणों के सीधे त्वचा पर आक्रमण करने के कारण त्वचा की कोशिकाओं के डीएनए क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण ही त्वचा के कैंसर बहुत अधिक हो रहे हैं.

कैंसर को बढ़ावा

मानव के देह की तीन प्रणालियां सीधे यूवी तरंगों का सामना करती है. हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली जो हमें रोगों से लड़ने में मदद करती है यूवी तरंगों का सीधे सामना करती है. यूवी तरंगे हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर देती है जिसके कारण ही त्वचा संक्रमणों का सामना नहीं कर पाती है जिसके कारण त्वचा की कसावट ढीली पड़ जाती है उस पर झूरियां पड़ जाती है और इससे कैंसर को बढ़ावा मिलता है.

पर्यावरण असंतुलन के परिणाम

आयरिस और स्काटिस के मूल लोगों को त्वचा का कैंसर बहुत अधिक होता है. ओस्ट्रेलिया तथा तस्मानिया में त्वचा के कैंसर बहुत ही अधिक हैं. कोमल तथा उजली त्वचा वाले लोगों को त्वचा का कैंसर बहुत ही अधिक होता है. डेनमार्क में सरकार त्वचा के कैंसर से बहुत ही अधिक परेशान है. कार चला रहे 85 प्रतिशत लोगों को त्वचा का कैंसर होता है. धावकों को भी कैंसर होता है. ओजोन परत में 1 प्रतिशत की क्षति पराबैंगनी किरणों का विकिरण 2 गुना बढ़ाती है. त्वचा के कैंसर में 90 प्रतिशत वृद्धि होती है. 90 से 95 प्रतिशत लोगों को त्वचा का कैंसर शरीर के खुले भाग में होता है. भारत में भी बाहर काम करने वाले लोगों किसान, नाविकों आदि को त्वचा के कैंसर बहुत अधिक हो रहे हैं.

पर्यावरण का आधार गोवंश

गाय माता पर्यावरण का प्रमुख आधार है. गाय माता के कारण ही पर्यावरण की रक्षा संभव है. जनसंख्या के भयंकर विस्फोट के कारण प्रदूषण में बहुत ही अधिक बढोतरी हुई है. वैदिक काल में हर घर में गाय माता भी मौजूद थी. प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त के समय हर घर में अग्निहोत्र पूरे परिवार के साथ पूरे उत्साह के साथ वैदिक विधान से वेद मंत्रें के उच्चारण के साथ किया जाता था. अग्निहोत्र में पिरामिड आकार का तांबे का पात्र, गाय माता के गोबर से उत्पन्न अक्षत यानी चावल के दाने जिनके दोनों कोने पूरे हों, गाय माता के गोबर के कंडे, गाय माता का ही घी अनिवार्य है. जैविक खेती के स्थान पर वर्तमान में रसायनिक खाद, कीटनाशक का प्रयोग होने के कारण गाय माता का गोबर खेती में से हट चुका है तथा महानगरों में गाय माता के गोबर के कंडे भी दुर्लभ हो गये हैं.

कामधेनु संयंत्र

बैल से चलने वाले कामधेनु ट्रेक्टर का उपयोग भारत के प्रत्येक गांव में करना अनिवार्य है. गाय माता का शुद्व घी भी जनसाधारण के द्वारा प्रयोग में नहीं है इसलिये गाय माता का घी आसानी से उपलब्ध नहीं है. गाय माता के धी के स्थान पर उपलब्ध अन्य किसी भी घी से हवन करने का लाभ ही नहीं है.

अग्निहोत्र

अग्निहोत्र हर घर में करने पर घर के सभी वास्तुदोष पूरी तरह से समाप्त हो जाते हैं. अग्निहोत्र करने पर 9 ग्रह और 27 नक्षत्रों का मानव पर सदैव समान प्रभाव पडता है. मानव 24 घंटों में 21,600 सांसे ग्रहण करता है. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य और चंद्र नाडी एक साथ चलने के कारण ही मानव दोनों नाक के छिद्रों से सांस लेता है. मानव को सूर्योदय और सूर्यास्त के समय अधिक शुद्व प्राण वायु की आवश्यकता होती है.

अग्निहोत्र से चिकित्सा

बाकी समय मानव नाक के एक ही छिद्र से सांस लेता है. अग्निहोत्र करने पर गाय माता के गोबर के कंडों में गाय माता के घी में चावल को मिलाकर होम करने पर मानव के लिये पर्यावरण के दृष्टिकोण से बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण तीन गैसें इथोलीन ओक्साइड, प्रोपीलीन ओक्साइड, फोर्मलडीहाइड उत्पन्न होती हैं. प्रोपीलीन ओक्साइड गैस वर्षा के लिये उपयोगी है. अग्निहोत्र खेती के स्थल पर करने पर खेती में बढोत्तरी असाधारण रुप से होती है. फार्मलडीहाइड पर्यावरण को शुद्व बनाये रखती है. अग्निहोत्र में उपयोग में लाये जाने वाले घी को 10 वर्षों तक पुराना होने पर जीर्ण कहलाता है, 100 वर्षों से हजार वर्ष तक गाय माता का घी पुराना होने पर कौम्भ कहलाता है,

महाघृत

1100 वर्ष से पुराना होने पर गाय माता का घी महाघृत कहलाता है. मानव के मन पर अग्निहोत्र का बहुत ही सूक्ष्म प्रभाव पडता है. प्रकृति को संतुलित रखने के लिये 6 से 8 सितम्बर 2002 आई. आई टी. दिल्ली मे 11,12,13 अक्तूबर 2003 दिल्ली में तथा 29, 30, 31 अक्तूबर 2004 को प्रकृति 2004 का आयोजन दशहरा मैदान टी.टी. नगर भोपाल मध्यप्रदेश में किया गया है जिसमें गोवंश संरक्षण एवं संवर्धन, पंचगव्य, औसधियां तथा अन्य उत्पाद, जैविक कृसि,जैविक खाद एवं कीट नियंत्रक, विपणन, खपत एवं आपूर्ति, मृदा,भूमि सुधार, जल प्रबंधन, वन संपदा तथा औसधीय पौधों की खेती बारी, पर्यावरण, बैल चालित कृसि यंत्र एवं उर्जा, ग्रामीण तकनीक एवं उद्योग, पशु आहार, जैविक सब्जी व फल उत्पादन पर गहन मंथन किया जायेगा. पत्राचार कार्यालय डा. बैजनाथ गुप्ता 322, प्रौद्योगिकी अपार्टमेंटस, सेक्टर 3, द्वारका, नई दिल्ली 110075 दूरभा-न 011-25097136, मोबाइल 011-35237521, 011-31174340 है.

प्रकृति भारती

प्रकृति 2005 का आयोजन नोयडा में 9, 10, 11 दिसम्बर 2005 को सरस्वती शिशु मंदिर में किया गया है. 2006 में प्रकृति 2006 का सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है. 111 करोड गोवंश बहुत ही क्रूरता के साथ भारत में कट चुके हैं जिसके कारण भारत का पर्यावरण पूरी तरह से असंतुलित हो गया है. भारत में निदेशक रा-ट्रीय मांस उत्पाद अनुसंधान केंद्र राजेंद्र नगर हैदराबाद 450030 दूरभास 040 24536501 कार्य कर रही है. वर्तमान में 26 दिसंबर 2004 को सुनामी के नाम से 6 देशों में तीन लाख लोगों को मारने वाला भूकंप विश्व में गाय माता की लगातार हो रही हत्याओं का ही परिणाम है.

कतलखानों से मानव का विनाश

सरकारें कतलखाने खोलने के लिये कतलखाने के मालिकों को विशेष सुविधायें अपने राज्यों में उपलब्ध करवा रही हैं. कतलखानों को बढावा देकर मानव ने अपना विनाश स्वयं चुना है. पूरे विश्व के वैज्ञानिक इस बात से पूरी तरह से सहमत हो गये हैं कि जीवों की हत्या के समय जीवों की करुण चित्कार के कारण ही जो खतरनाक तरंगे निकलती हैं उनके कारण ही पर्यावरण में

असंतुलन आ जाता है. भारत में वर्तमान में जितने अधिक विनाशकारी भूकंप आ रहे हैं उनके कारणों में कतलखानों की महत्वपूर्ण भूमिका साबित हो गयी है.

वैज्ञानिक चेतावनी

मानव की बढती लालच को देख कर वैज्ञानिक बार बार मानवता को जगाने का प्रयास कर रहे हैं. विनाश काले विपरीत बुद्धि. कोलकता में हुए तृतीय एवं चतुर्थ राष्ट्रीय गोसम्पदा सम्मेलन में डाक्टर मदन मोहन बजाज एवं उनके सहयोगियों ने मानवता को स्पष्ट रुप से चेतावनी देते हुए विश्व के सभी कतलखानों को पूरी तरह से बंद करने और विश्व के सभी लोगों से शाकाहारी बनने की अपील की. 26 जनवरी से 30 जनवरी 2005 में गांधी जी की समाधि राजघाट पर 5 दिनों का सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है जिसमें पूरे विश्व का ध्यान गोहत्या की ओर खींचा जायेगा.

बिस प्रभाव

डाक्टर मदन मोहन बजाज ने बिस प्रभाव की 75 शाखाओं के बारे में भी जानकारी दी. 15 से 17 जुलाई 2006 तक झारखंड में धनबाद में कतरासगढ़ में श्री गंगा गोशाला में गोसंरक्षण पर चिंतन शिविर आयोजित किया गया था. उत्तरप्रदेश में कानपुर गोशाला सोसायटी भौती कानपुर में 12 से 14 अगस्त 2006 को गोसंरक्षण चिंतन शिविर का आयोजन किया गया था. 26 से 29 अक्तूबर तक आर्य समाज का महासम्मेलन स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी सेक्टर 13 दिल्ली में आयोजित किया गया जिसमें 1 लाख 30 हजार लोगों ने गोरक्षा के जिए भाग लिया.

किसान मेला

28 से 30 अक्तूबर 2006 को आई.वी.आर. आई. इज्जतनगर बरेली उत्तरप्रदेश में किसान मेला आयोजित किया गया जिसमें भारतीय गोवंश के बारे में विस्तार से बताया गया.

गोमाता चलता फिरता चिकित्सालय है

गाय माता की पीठ पर 15 मिनट बहुत ही प्रेम से धीमे धीमे पूरी श्रद्धा के साथ हाथ फेरने पर गाय माता के रक्त में मौजूद शक्तिशाली प्राणशक्ति एवं विशेष उर्जा के कारण ही मानव के हाथों में मौजूद बिंदुओं में स्वाभाविक परिवर्तन चमत्कारिक ढंग से होने लगता है. शरीर में मौजूद रक्त कण में भी गहरा एवं सूक्ष्म प्रभाव दिखाई देता है. शरीर में मौजूद रक्तचाप पर भी शानदार असर पडता है जिसके कारण मानव शरीर का रक्तचाप उच्च हो या निम्न हो स्वाभाविक रुप से सामान्य होने लगता है. कुछ दिनो में ही गाय माता की पीठ पर नियमित हाथ फेरने पर उच्च रक्तचाप हो या निम्न रक्तचाप हो, रक्तचाप हमेशा के लिये सामान्य हो जाता है.

स्पर्श चिकित्सा

गाय माता की पीठ पर 30 मिनट श्रद्धा और प्रेम के साथ धीमे धीमे हाथ फेरने पर ह्रदय रोगों में आश्चर्यजनक परिवर्तन महसूस होने लगते हैं तथा 6 माह और 12 माह में ह्रदय रोग पूरी तरह से अच्छा हो जाता है. 1 घंटे गाय माता की पीठ पर बहुत ही प्रेम के साथ हाथ फेरने पर मस्तिष्क की बीमारियां पूरी तरह से ठीक हो जाती हैं. गाय माता की पूंछ को सिर के बायें दायें 15 मिनट घूमाने पर गाय माता की पूंछ में मौजूद शक्तिशाली उर्जा के कारण ही सिर में से निकलने वाली तरंगे अल्फा, बीटा, गामा, थीटा, डेल्टा तरंगे पूरी तरह से नियंत्रित हो जाती हैं.

गाय की पूंछ से उपचार

सिर में होने वाली बीमारियां पागलपन, उन्माद, मूर्छा, भूत, प्रेत, बाधा, तंत्र, मंत्र, यंत्र,मनोविज्ञान और परामनोविज्ञान की समस्त बीमारियां, सिरोबाधा पूरी तरह से दूर हो जाती है. गाय माता के कान में एकांत में पूरी श्रद्धा के साथ अपनी सभी समस्याएं रखने पर गाय माता के कान में बिराजमान देवताओं के वैघ अश्वनी कुमार के द्वारा समस्याओं को सुनकर संबंधित देवता के पास समस्या प्रस्तुत करने पर संबंधित देवता के द्वारा समस्या को दूर करने के कारण ही समस्याएं मात्र 1 घंटे में पूरी तरह से हल हो जाती है. गोरक्षा करने के लिये आपको अपने जीवन में निम्नलिखित बिंदुओ पर पूरी गंभीर चिंतन, मनन करने की बहुत ही अधिक आवश्यकता है

संस्कृति की रक्षा

गाय माता हमारी हिंदू संस्कृति का मूल केंद्र है. गोवध का हमारी संस्कृति में कभी भी स्थान नहीं है. हमारी हिंदू संस्कृति में प्रतिदिन सुबह उठकर गो ग्रास देने से लेकर हमारे 16 संस्कारों के लिए हमें गाय माता की आवश्यकता है. व्यक्ति के मरने के पूर्व गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी पार करने की परम्परा है. व्यक्ति के मरने पर हमारे द्वारा गोदान करने तथा गांव में अच्छी नस्ल के सांड छोड़ने की परम्परा रही है. हमारे द्वारा संगठित स्तर पर गाय माता की रक्षा करने पर ही हमारी संस्कृति की रक्षा होगी.

गोवंश बचेगा तो देश बचेगा

वर्तमान में भारत में गाय माता हमारी संस्कृति का मूल केंद्र नहीं है क्योंकि मेकाले की शिक्षा प्रणाली ने भारत में शरीर से भारतीय दिखने वालों को दिमाग से अंग्रेज बना दिया है. अंग्रेजीयत के कारण शरीर से भारतीय दिखने वाले और गाय माता की जय बोलने वाले तथा भैंस का दूध पीकर गौ हत्या बंद करो के नारे लगाने वाले लोग आज गाय माता के बहुत बडे दुश्मन हैं. गाय माता बचेगी तो हमारी संस्कृति बचेगी. आज हमारी पहचान भी हमारी संस्कृति के कारण ही पूरे विश्व में है. मेकाले की नीति के कारण हमारी संस्कृति का सत्यानाश पूरी तरह से हो गया है. हमारी संस्कृति में जन्म से मृत्यु तक गाय माता का महत्वपूर्ण स्थान रहा है.

महानगर में गोवंश का अभाव

महानगरों में गाय माता नहीं मिलने के कारण ही वर्तमान में हमारी संस्कृति में गाय माता का महत्व नगण्य है. भारत के मानव को गाय माता से पूरी तरह से दूर करने के लिये बहुत सारे कानूनों का पालन बहुत ही कडाई से भारत सरकार के द्वारा करवाया जा रहा है.

अंधा राजा अंधी प्रजा

भारत सरकार के अधिकांश नेता एवं अधिकारी पूरी तरह से गाय विरोधी हो चुके हैं जिसके कारण अंधा राजा अंधी प्रजा टका सेर भाजी टका सेर खाजा वाली कहावत भारत में पूरी तरह से लागू हो गयी है. हमारे शास्त्रों में भी गाय माता को ही प्रथम स्थान दिया गया है.

गोग्रास

हमारे घरों में भी गौग्रास सबसे पहले निकालने की परम्परा हजारों वर्षों से है लेकिन आज लार्ड मेकाले की शिक्षा नीति के कारण ही गौग्रास कोई निकालना पसंद ही नहीं कर रहा है क्योंकि वर्तमान समय में फास्ट फूड का जमाना है.

गाय की हडडी के चूरे से मुंह की सफाई

सुबह उठकर गाय की हडडी से तैयार पेस्ट से दांत साफ करने और गाय की चर्बी से तैयार साबुन से नहाने की गलत परम्परा भी मजबूत हो चुकी है. हर घर में आधुनिकता के नाम पर गाय माता के बदले विदेशी कुत्ता पालना अनिवार्य हो गया है और कुत्तों को बिस्तर में अपने साथ में बहुत प्यार से सुलाते हैं और कुत्तों को बहुत ही प्यार से चूमते और चाटते हैं. कुत्ता आधुनिक परिवार का अभिन्न सदस्य बन गया है. गाय माता प्राचीन परिवार का अभिन्न अंग थी.

धर्म की रक्षा

धारा 48 का अर्थ नेहरु के अनुसार सिर्फ उपयोगी जानवरों की हत्या बंदी करनी है. 20 दिसम्बर 1959 को केंद्रीय खेती मंत्रालय ने सभी राज्यों की सरकारों को परिपत्र लिखकर सूचित कर दिया था कि धारा 48 का मतलब संपूर्ण गोवध बंदी नहीं है.

20 लाख गोवंश सेवक

चार वेद, अठारह पुराण, छह उपनिसद गाय माता की स्तुति करते हैं. 7 नवंबर 1966 गोपाष्टमी के पवित्र दिन को धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज जी के नेतृत्व में पूरे भारत के हर कोने से 20 लाख साधु, संत, ब्रहमचारी, सन्यासी, सदगृहस्थ, सभी नेता, गोसेवक जिनमें सर्वश्री ज्योतिष्पीठ के जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज, पुरी गो संवर्धन पीठ के जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निरंजनदेवतीर्थजी महाराज, संत प्रभुदत्त जी ब्रहमचारी, जैन मुनि श्री सुशीलकुमारजी, स्वामी श्री रामेश्वरानन्दजी, कल्याण के संपादक भाई श्री हनुमानप्रसादजी पोददार, भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, सेठ गोविंददास जी, भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री गुमानमल लोढा जी, आदि अनेकों महानुभावों ने संसद के सामने संपूर्ण गो हत्या बंदी के कानून को कोंग्रेस सरकार से पूरी तरह से हमेशा के लिये पारित कराने का संकल्प लेकर एकत्रित हुए थे.

गोरक्षा की मांग

मंच पर से धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने घोषणा की थी कि हमारा किसी दल विशेष से द्वेष नहीं है. हम किसी राजनीतिक मांग को लेकर नहीं आये हैं. इस समय जो शासनारुढ हैं वे हमारे ही घर के लोग हैं हम इन सबका कल्याण चाहते हैं. हम तो केवल गोरक्षा की मांग को लेकर आयें हैं. धर्मप्राण भारत के ह्रदय धर्मसम्राट ब्रहमलीन स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने बहुत ही विनम्रता के साथ जब भारत अंग्रेजों के भय से मुक्त हुआ था.

नेहरु का गोविरोधी अभियान

भारत सरकार के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी जिन्हें अंगेजों ने बहुत ही सोच समझकर चुना था तथा अंगेजों के पढाये गये पाठ के कारण ही पंडित जवाहरलाल नेहरु जी ने आजाद भारत में गाय माता की दुश्मन 126 बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत में ही व्यापार करने के नाम पर बिना किसी शर्त के वैसे का वैसा रख लिया था. पंडित जवाहरलाल नेहरु के कारण 1921 से लेकर 1948 तक हुए गोहत्या बंदी के प्रयास समाप्त हो गये थे. 1949-1950 के कांग्रेस अधिवेशन में दिल्ली में जवहरलाल नेहरु ने कहा कि किसी कोने में गोहत्या बंदी की रिपोर्ट पडी होगी. मैं त्याग पत्र दे दूंगा लेकिन गोवध बंदी मांग के आगे नहीं झूकूंगा. 2 अप्रेल 1955 को जवाहरलाल नेहरु ने गरजते हुए कहा कि राज्य सरकार गोवध बंदी कानून उपस्थित न करें तथा पारित न होने दें.

गायों के अंगों से दवाईयां

बंबई और दिल्ली में गायों के विभिन्न अंगों से दवाई तैयार करने के लिये बंबई तथा दिल्ली में बडे बडे कतलखाने खोलने की सलाह दी गई. नेहरु की सरकार के स्वास्थय मंत्रालय के द्वारा नेहरु के संरक्षण में गो हत्यारों ने उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, पंजाब में बने गो हत्या बंदी के खिलाफ सर्वोच्च न्यायलय में चुनौती दी. सर्वोच्च न्यायालय की पूरी पीठ ने 23 अप्रेल 1958 को एक स्वर में निर्णय गोवध बंदी के पक्ष में दिया. गाय बछडे, बछडी की हत्या को संपूर्णतया बंद करने की कारवाई को वैद्य माना गया. मुसलमानों के अधिकार वाली बात भी अमान्य कर दी गई. नेहरु के कारण सर्वोच्च न्यायालय ने अनुपयोगी सांडों और बैलों को कटने देने

की छूट रही. कतलखानों और कसाईयों को संविधान के अनुसार मौलिक अधिकार में संरक्षण मिल गया.

गो प्रेमी जनता की आंखों में धूल

भारत की गोप्रेमी जनता की आंख में धूल झोकने का रास्ता मिल गया. भारत में गोवंश को अनुपयोगी बताने के लिये बैलों की टांगे तोडने, सींग काटने, आंखों में मिर्च डालने, बैलों के घाव करने का कार्य बडे पैमाने पर बहुत ही क्रूरता के साथ चल पडा. वर्तमान समय में कसाइयों के हौसले बहुत ही अधिक बुलंद हैं इसलिये गोवंश को पूरी तरह से अनुपयोगी बनाने के लिये कानून की परवाह कोई भी नहीं कर रहा है. दिनदहाडे ही बैल की आड में गाय काटने का कार्य पूरे जोरों पर चल पडा. नेहरु के कारण ही कलकता में दिन दहाडे गाय कटने लगी जो आज तक लगातार बहुत ही आसानी से क्रूरता के साथ कट रही है.

प्रतिज्ञा पत्र

जैसे ही भारत की गोप्रेमी जनता को मालूम हुआ कि नेहरु गोहत्या बंदी करना नहीं चाहते हैं बहुत गहरा आक्रोश छा गया. 22 जनवरी 1953 को आर्य समाज की सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा ने आंदोलन का प्रस्ताव पारित कर दिया. गोरक्षा के लिये सम्मेलन हुए तथा गोरक्षक जनता ने लाखों की संख्या में प्रतिज्ञा पत्र भरे. इतना ही नहीं नेहरु के चुनाव क्षेत्र में दिसम्बर 1953 से जनवरी 1954 के बीच गोवध बंदी पर मत संग्रह कराया गया. नेहरु अपने चुनाव क्षेत्र से कुल 2,33,571 मत पाकर अपने चुनाव क्षेत्र से जीते थे. नेहरु जी के चुनाव क्षेत्र के 2,48,422 व्यस्क गोसमर्थक नागरिकों ने गोवध बंदी कानून के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर कर नेहरु को आदेश दिया था कि अपनी मानसिकता बदलो.

गोबंदी कानून पारित

नेहरु अपनी जिद पर अडे रहे. 27 सितम्बर 1954 को लखनउ विधानसभा के सामने सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ. 8 सितम्बर 1955 को विधानसभा में गोवध बंदी कानून पारित कर दिया गया. 5 अक्तूबर 1955 को बिहार विधानसभा में भी गोवध बंदी कानून पारित कर दिया गया. नेहरु ने जनता के भोजन में परिवर्तन कर तथा धार्मिक भावना में क्रांति कर गोमांस खाने के लिये प्रेरित किया.

गोमांस

नेहरु के कारण ही भारत की बडी बडी होटलों में गोमांस परोसा जाता है. भारत की होटलों में हर साल 58 लाख गर्भपात खिलाये जाते हैं. पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु के कारण ही अखंड भारत के दो टुकडे हुए थे. वर्तमान में 13 टुकडे भारत के हो गये हैं. पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी 1947 से ही धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज की भयंकर उपेक्षा पूरी तरह से सोच समझकर की थी जिसके कारण ही 7 नवम्बर 1966 को संसद के सामने पूरे भारत के गांव गांव से आया गोकुम्भ उपस्थित था.

अपार गो कुंभ

कोंग्रेस की सरकार धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के नेतृत्व में 20 लाख गोसेवकों की इतनी बडी संख्या को प्रबल आत्मविश्वास के साथ देखकर अंदर से पूरी तरह से कांप गयी थी. कोंग्रेस सरकार गाय माता की रक्षा के मामले में 1947 से ही धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी के सटीक और दूरदर्शी प्रयासों के कारण हर स्थान पर हार रही थी. 7 नवंबर 1966 गोपाष्टमी के पवित्र दिन को भारत सरकार की कोंग्रेस सरकार की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी थी तथा परम गोसेवक श्री गुलजारीलाल नंदा जी गृहमंत्री थे.

वि-ा कन्या

पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी ने आजादी की लडाई में अंगेजो के विरुद्ध जब वे जेल गये थे तब जेल से ही अपनी प्रिय पुत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी को पत्रों के माध्यम से विष कन्या के रुप में पूरी तरह से तैयार कर दिया था. पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी जन्में जरुर भारत में थे लेकिन दिमाग से अंग्रेजी पढाई के कारण ही पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी पूरे अंग्रेज थे. गोपाष्टमी के पावन पर्व पर सन 1921 में दिल्ली के पटौदी हाउस में महात्मा गांधी जी की उपस्थिति में सर्व सम्मति से पारित प्रस्ताव में कहा गया था कि भारत में अंगेजी राज्य में भयंकर गोहत्या होती है इसलिये अंगेजी राज्य से सहयोग नहीं किया जाये. 18 दिसम्बर 1924 से गोसेवा-संघ के द्वारा गोरक्षा का कार्य योजनाबद्ध तरीके से प्रारम्भ किया गया था.

जीवन भर गोरक्षा

25 फरवरी 1925 को महात्मा गांधी जी ने कहा था कि गोरक्षा का प्रश्न स्वराज्य के प्रश्न से भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण है. महात्मा गांधी जी ने कहा था कि भारत की सुख समृद्धि गो के साथ जुडी हुई है. भारत की आत्मा गांवों में रहती है. भारत की 80 प्रतिशत से अधिक जनता गांवों में ही रहती है. गांवों में गाय माता के वंश का संपूर्ण विकास करने से ही गांव के लोग पूरी तरह से सुखी और समृद्ध रह सकते हैं. जनवरी 1928 को महामना पंडित मदनमोहन मालवीय महाराज जी ने प्रयाग में त्रिवेणी के पावन तट पर गंगाजी का जल हाथ में लेकर कहा था कि हम जीवन भर गोरक्षा करेंगे.

गोवंश की रक्षा में देश की रक्षा

1928 के कांग्रेस के अधिवेशन में महामना पंडित मदनमोहन मालवीय महाराज जी ने स्पष्ट कहा था कि गोवंश की रक्षा में देश की रक्षा समायी हुई है क्योंकि गो भारतवर्ष का प्राण है इसलिये गाय माता की हत्या पूरी तरह से बंद करवानी अनिवार्य है. श्री जवाहरलाल नेहरु जी ने प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज की कोई भी बात स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 1947 से अपनी मृत्यु तक यानी 27 मई 1964

तक कभी भी नहीं मानी थी. नरहरी ने अकबर के दरबार में यह कविता पढी थी कि

नरहरि की कविता

अरिहूं दंत तृण धरे

ताहि मारत न सबल कोई

हम सतत तृण चरही

वचन उच्चरहि दीन होई

हम नित थन पय श्रवही

बच्छ महि जोवन जावहि

हिंदू ही मधुर न देही

कटुक तुरक ही न पीयावही

कह कवि नरहरी दास

मांगत गउ जोरे करन्ह

अपराध कौन मोहि मारियत

मुयेहू चाप सेदूहि चरन

गोहत्या पर बंदी

यहां उल्लेखनीय यह है कि नरहरी की गोभक्ति से प्रभावित होकर सम्राट अकबर ने गोहत्या पर बंदी लगायी थी. बाबर ने भी हूमायु को पत्र लिखा था कि गो वध कभी न करना. धर्मप्राण भारत के ह्रदय सम्राट ब्रहमलीन अनन्त स्वामी श्री करपात्री जी महाराज द्वारा विक्रम संवत 2001 में अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ की स्थापना की थी. धर्मसंघ ने अपने जन्मकाल से ही मां भारती के प्रतीक गोवंश की रक्षा, पालन, पूजा, संवर्धन को अपने प्रमुख उददेश्यों में स्थान दिया था.

विराट गोरक्षा सम्मेलन

अखिल भारतीय धर्मसंघ ने मुम्बई में विराट गोरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया था. धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने गोरक्षा सम्मेलन में राष्ट्र के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक नेताओं एवं धर्मप्राण जनता का आहवाहन किया था.

द काउ इन इंडिया

1945 में ही श्री सती-ा चंद्र दास गुप्ता जी भारतीय गोवंश के बहत ही अच्छे जानकार ने जेल में ही द काउ इन इंडिया लिखी थी. इ काउ इन इंडिया में बहुत ही जबरदस्त जानकारियां प्रकाशित की गयी हैं. भाग 1 एवं 2 कुल 2000 पन्नों में प्रकाशित की गयी है तथा जिसकी प्रस्तावना महात्मा गांधी जी ने लिखी थी. द काउ इन इंडिया अंग्रेजी में थी.

गो अंक का प्रकाशन 1945 में

1945 में ही श्री हनुप्रसाद जी पोददार जी ने गीता प्रेस गोरखपुर ने भी गो अंक का प्रकाशन मात्र 4 रुपयों में की थी. कल्याण के इस विशे-ांक का मूल्य हर विशे-ांक की तुलना में 1 रु. कम रखा गया था जिससे लोग आसानी से इस अंक को खरीद सकें.

गो अंक का द्वितीय संस्करण

गो अंक में बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारियां प्रकाशित की गयी हैं गो अंक को ध्यान से पढ़ने पर गोवंश पर किये गये अत्याचार पूरी तरह से समझ में आ जायेंगे. गोसेवा अंक 1995 में 470 पन्नों के साथ में प्रकाशित किया गया था. गोसेवा अंक में 50 सालों में सरकार के द्वारा किए गये अत्याचारों के बारे में बहुत ही विस्तार से लिखा गया है. गो अंक को अब फिर से 2007 में 120 रु. में प्रकाशित करने के कारण अवश्य ही पढ़ना चाहिए. अग्रेंजों ने गीताप्रेस के अभियान को बंद न करने के कारण यह प्रतिबंध लगाया था कि 760 पन्ने के उपर का प्रकाशन नहीं किया जाये.

संतुलित गोपालन

1949 में श्री रेवतीरमण जी ने संतुलित गोपालन पुस्तक पीलीभीत उत्तप्रदेश में लिखी थी. संतुलित गो पालन बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है.

धर्मयुद्ध का शंखनाद

करपात्री जी महाराज ने सम्मेलन में घोषणा की थी कि राष्ट्र के सर्वविध कल्याण को ध्यान में रखते हुए भारतीय धर्म और संस्कृति की प्रतीक गोवंश की हत्या पर कानून द्वारा प्रतिबंध लगा दे. धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने सरकार को अक्षय तृतीया 2003 यानी 28 अप्रेल 1947 तक का समय दिया था. धर्मसंघ द्वारा गोरक्षार्थ धर्मयुद्ध का शंखनाद अक्षय तृतीया के दिन किया गया था. अक्षय तृतीया के दिन धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के नेतृत्व में प्रातःकाल ही संविधान निर्माण परिषद के भवन के सामने गोहत्या बंद हो के गगन भेदी नारों के साथ सत्याग्रह किया. सरकार ने अपनी दमन नीति के कारण ही धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज को तुरन्त ही कैद कर दिल्ली जेल और बाद में केंद्रीय जेल लाहोर में स्थानान्तरित कर दिया था.

करपात्री जी महाराज

धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज का व्यक्तित्व बहुत ही जबरदस्त था इसलिये जब सरकार ने धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री महाराज को गिरफतार किया था तब धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज को बंद करने के कारण धार्मिक जगत में एक जबरदस्त हलचल उत्पन्न हो गयी थी. देश के कोने कोने से धर्मवीरों के जत्थे दिल्ली में आने लगे और सत्याग्रह तीव्र गति से चल पडा. 5 से 6 हजार की संख्या में देश के प्रसिद्ध विद्वान महामहोपाध्याय पंडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी जी, शास्त्रर्थ-महारथी पंडित श्री माधवाचार्य जी शास्त्री, पंडित श्री चंद्रशेखर जी शास्त्री, पंडित श्री नंदलाल जी शास्त्री, श्री सत्यव्रत जी ब्रहमचारी, पंडित श्री सूर्यनाथ जी पांडेय, श्री स्वामी आत्मदेवाश्रम जी महाराज, भक्त रामशरणदास जी आदि अनेको गोसेवक मौजूद थे. कई गोसेवकों पूज्य श्री स्वामी मुकुन्दाश्रम जी महाराज, श्री स्वामी कृष्णानन्द तीर्थ जी महाराज, गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य जी ने अपने प्राणों को हंसते हंसते बलिदान भी कर दिया था.

गोरक्षा आंदोलन का प्रभाव

दिल्ली में जब गोरक्षा के लिये आंदोलन अपनी चरम सीमा पर चल रहा था तब देश के विभाजन के कारण दिल्ली षडयंत्र का केंद्र बन गयी थी. राष्ट्रीय संकट को ध्यान में रखते हुए गोरक्षा आंदोलन गोपाल कृष्ण की पवित्र भूमि मथुरा में करने का फेसला किया गया था. भारत सरकार के प्रधानमंत्री पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी गोरक्षा के आंदोलन के कारण बहुत ही अधिक परेशान हो गये थे. पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी ने आंदोलन को पूरी तरह से दबाने के लिये धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज को फिर से गिरफतार करवा दिया था और पहले मथुरा जेल और बाद में आगरा जेल में बंद कर दिया था. धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के बहुत ही जबरदस्त प्रभाव के कारण ही गोरक्षा का आंदोलन बहुत ही तेजी से चलता रहा.

कतलखाने बंद

गोरक्षा के जबरदस्त आंदोलन के कारण ही मथुरा नगर परिषद ने अपनी सीमा में गोहत्या बंदी का प्रस्ताव सबसे पहले पारित किया था. पूरे भारत में गोहत्या बंदी के प्रस्ताव के कारण जन जागरण हुआ था और पूरे भारत में भी गो हत्या बंदी के लिये एक के बाद एक अनेक नगर-पालिकाओं, नगर परिषदों, नगर निगमों, जिला परिषदों ने भी प्रस्ताव पारित किये थे. मथुरा तथा ब्रज की पवित्र भूमि में 14 कतलखाने हमेशा के लिये पूरी तरह से बंद कर दिये गये थे. भारत सरकार पर पूरे भारत से तार, पत्र, दूरभाष, शिष्ट मंडल के द्वारा व्यक्तिगत मुलाकात के द्वारा बहुत ही जबरदस्त दबाव बनाया गया था.

जनता की भावनाओं का मजबूरन सम्मान

प्रधानमंत्री पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी को गोरक्षा आंदोलन के सामने मजबूरन झुकना पडा था. जनता की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए संविधान के अध्याय 4 अनुच्छेद 48 में आधुनिक और वैज्ञानिक पद्धति पर कृषि एवं पशु-धन की व्यवस्था के लिये प्रयत्न करने विशेषतः पशु-धन की नस्लों की रक्षा और सुधार करने तथा गौओं, बछडे-बछडियों एवं दुधारु पशुओं की हत्या पर कानूनी प्रतिबंध लगाने का भारत सरकार के प्रति नीति निर्देश सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया था.

संविधान का सोच समझकर अपमान

आज भारत के संविधान का पूरी तरह से अपमान कर बंगाल एवं केरल में गाय विरोधी सरकार के कारण ही गोवंश बहुत ही क्रूरता के साथ लम्बे समय से काटा जा रहा है. 19 नवंबर 1947 को भारत सरकार ने गोसंरक्षण और गोपालन के संबंध में विचार कर अपनी सम्मति देने के लिये सरदार दातारसिंह की अध्यक्षता में एक गो रक्षण और संवर्धन समिति बनायी गयी थी. सन 1948 में मुम्बई में बंबई जीवदया मण्डल के प्रयत्न से भारत गो सेवक समाज के माध्यम से गोहत्या बंद करवाने के लिये सेठ गोविंद दास जी अध्यक्ष एवं लाला हरदेव सहाय जी तथा श्री जयन्तीलाल मान्कर जी मंत्री के नेतृत्व में बहुत ही जबरदस्त आंदोलन किया गया था.

आंदोलन का सकारात्मक परिणाम

समिति ने 6 नवम्बर 1949 को अपनी रिपोर्ट सरकार के समक्ष प्रस्तुत की. रिपोर्ट में गोहत्या बंदी एवं गो संरक्षण के संबंध में कतिपय महत्वपूर्ण सुझाव दिये थे किंतु भारत सरकार के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु जी ने धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के बहुत अधिक दबाव के कारण ही कुछ सुझाव मान लिये थे लेकिन भारत में सुझाव कार्यान्वित नहीं किये थे. मजे की बात यह है कि धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी के प्रभाव के कारण पडोसी देशों श्री लंका, बर्मा, नेपाल, पाकिस्तान में गोहत्या पर प्रतिबंध लगाये थे. अखिल भारतीय रामराज्य परिषद की स्थापना भी गोरक्षा के लिये की गयी थी.

राम राज्य परि-द

1949-50 में अखिल भारतीय रामराज्य परिषद ने धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के नेतृत्व में भारत में गोरक्षा के लिये बहुत ही सक्रिय आंदोलन किया था. राजस्थान के 20,000 वीर राजपूतों राजा दुर्जनसिंह जावली, ठाकुर मदनसिंह दाता, श्री मोहनसिंह भाटी, श्री रघुवीरसिंह जावली जी ने पंडित नन्दलाल जी शास्त्री पंडित चंद्रशेखर जी शास्त्री, प्रसिद्ध हिंदू नेता सेठ सीताराम जी खेमका के मार्गदर्शन में गोरक्षा के लिये बहुत ही जबरदस्त आंदोलन किया था और भारत सरकार की दमन नीति के कारण उन सभी को गिरफतार किया गया था इसलिये हंसते हंसते वे सभी जेल चले गये थे.

2 करोड़ हस्ताक्षर

सन 1952 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देश के लगभग 2 करोड लोगों के हस्ताक्षर करवाकर देश में संपूर्ण गो वंश की हत्या पर कानून द्वारा प्रतिबंध लगाने की मांग राष्ट्रपति डाक्टर राजेंद्र प्रसाद के सामने संघ के सरसंघचालक श्री माधवराव सदाशिव गोलवलकर जी गुरु जी ने स्वयं रखी थी परन्तु प्रधानमंत्री पंडित श्री जवाहरलाल नेहरु जी ने मानने से पूरी तरह से इंकार कर दिया था. सन 1954 में प्रयाग कुंभ के पावन पर्व पर एक विराट गोरक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया था. सम्मेलन में भाग लेने पूज्य श्री प्रभुदत्त जी ब्रहमचारी, लाला हरदेव सहाय जी, श्री राघवदास प्रभृति जी आये थे.

गोहत्या बंदी कानून

सम्मेलन के मंच पर से लाला हरदेव सहाय जी ने घोषणा की थी कि जब तक देश से गोहत्या का भयंकर पाप पूरी तरह से नहीं मिटेगा मै अपने माथे पर पगडी धारण नहीं करुंगा. केंद्र सरकार की दमन नीति के कारण ही लाला जी ने आजीवन पगडी धारण नहीं की थी. पूज्य ब्रहमचारी श्री प्रभुदत्त जी के सहयोग से गोहत्या निरोध समिति का गठन किया. समिति के निश्चय अनुसार ही पटना तथा लखनउ में गोरक्षा के लिये बहुत ही जबरदस्त आंदोलन किया इसलिये मजबूरन बिहार सरकार ने गोहत्या बंदी कानून बनाना स्वीकार किया. इसके पश्चात लखनउ में भी सत्याग्रह किया गया था और इस अवसर पर धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज भी भाग लेने पहुंचे थे.

लंबा गोरक्षा आंदोलन

केंद्र सरकार ने इस समय धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज को बंदी नहीं बनाया था. स्वर्गीय गोविन्द वल्लभ पंत जी ने राज्य मंत्रिमंडल की ओर से धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज को सादर आमंत्रित किया था और आश्वासन दिया था कि डाक्टर सीताराम जी की अध्यक्षता में नियुक्त कमेटी की रिपोर्ट मिलते ही उत्तरप्रदेश में गोहत्या बंदी कानून बना दिया जायेगा. इस प्रकार उत्तरप्रदेश में भी गोहत्या बंदी कानून बन गया था. 60 हजार से अधिक गोसेवकों ने पूरे भारत में कलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली, अहमदाबाद में 1954-55 में गोहत्या बंदी का आंदोलन बहुत ही जबरदस्त रुप से पौने 2 साल चलाया गया था और सरकार की लगातार भयंकर दमन की नीति के कारण ही जेल की यात्रा की थी.

उग्र आंदोलन

आंदोलन इतना अधिक उग्र रुप ले चुका था कि भारत सरकार बहुत अधिक परेशान हो गयी थी. केंद्र सरकार को कई राज्यों में गोहत्या बंदी के कानून बनाने के लिये मजबूर कर दिया गया था. 1958 में सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के 48 वें अनुच्छेद की व्याख्या करते हुए निर्णय इस प्रकार दिया था कि गाय माताओं का कतल नहीं किया जा सकता है. अगर बूढी और बिना काम की गाय माताओं के कतल की छूट दी जाये तो अच्छी गायों कों भी नहीं बचाया जा सकता है. गाय माता की अवध्यता के लिये सर्वोच्च न्यायालय ने आर्थिक कारणों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है.

असुरक्षा

बछडे बछडियों का भी कतल नहीं किया जा सकता है. जवान और काम करने लायक बैलों, सांडों और दूध देने वाली भैंसों का भी कतल नहीं किया जा सकता है. केवल जम्मू कश्मीर राज्य में धारा 370 के कारण संपूर्ण गो हत्या बंदी का कानून लागू हुआ है और गो हत्या करने वाले व्यक्ति को 10 साल की जेल का प्रावधान है तथा नेपाल में भी गो हत्या बंदी का कानून है तथा गो हत्या करने वाले को 20 साल की कैद की सजा हे तथा वहां की आम जनता बहुत ही सजग है इसलिये गो हत्या करने वाले को कानून के द्वारा सजा देने के पहले ही गोली मार देते हैं. केरल तथा पश्चिम बंगाल राज्यों में वहां की सरकार की गलत नीतियों के कारण ही गो हत्या बंदी के लिये सर्वोच्च न्यायालय का कोई भी कानून कडाई से लागू करना बहुत ही अधिक कठिन है.

विशाल गोरक्षा सम्मेलन

पूरे भारत में गाय माता के कटने का बहुत बडा कारण ये दोनों राज्य ही हैं. केरल और बंगाल में गाय काटने को बंद करने के लिये भारत के सभी राज्यों में गाय प्रेमी जनता को संगठित करना ही होगा. भारत सरकार के गोहत्या को निरन्तर प्रोत्साहन देने की प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने अप्रेल 1962 में हरिद्वार कुम्भ मेले में अखिल भारतीय धर्मसंघ के तत्तवावधान में एक विशाल गोरक्षा सम्मेलन हुआ. 11 मई 1962 को समस्त भारत में जन जागरण के लिये अभियान प्रारम्भ करने का निश्चय किया गया.

जबरदस्त आंदोलन

विजयादशमी 18 अक्तूबर 1962 को आकोला महाराष्ट्र से विधिवत गोपूजन के पश्चात अपार जनसमूह के गगनभेदी जयघोषों एवं हरिसंकीर्तन के बीच गोरक्षा अभियान ने मुम्बई में बनने जा रहे देवनार के विशाल कतलखाने को रोकने के लिये प्रस्थान किया. मार्ग के नगरों एवं गांवों में जन-जागरण करता हुआ अभियान 23 अक्तूबर 1962 को मुम्बई आ पहुंचा. नगर के विभिन्न भागों में जोरदार जनसभायें करके कतलखाने की योजना को पूरी तरह से बंद करवाने के लिये जनमत जाग्रत किया जाने लगा. वृन्दावन में अगस्त 1964 में अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया. अखिल भारतीय गोरक्षा सम्मेलन में केंद्र सरकार को चेतावनी दी गयी कि गोपाष्टमी तक यदि संपूर्ण गोवंश की हत्या बंद न की गयी तो इसके लिये शांतिमय आंदोलन किया जायेगा.

संकल्प

22 फरवरी 1965 को प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी, राष्ट्रपति तथा खाधान्न मंत्री जी से मुलाकात की गयी लेकिन संतोषजनक परिणाम नहीं मिले. अखिल भारतीय धर्मसंघ के मेरठ महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित गोरक्षा सम्मेलन में निश्चय किया गया कि 24 मार्च 1965 को लाल बहादुर शास्त्री जी से मिलने जगतगुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्तश्री स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज, गोवर्धन पीठाधीशवर अनन्त श्री स्वामी निरंजनदेव तीर्थ जी के नेतृत्व में एक संभ्रान्त शिष्ट मंडल जायेगा.

संपूर्ण गो हत्या बंदी कानून

भारत सरकार के प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने वचन दिया था कि मैं संपूर्ण गो हत्या बंदी कानून बनाउंगा लेकिन गोरक्षा के इतिहास में काला दिन उस समय आया था जब पाकिस्तान ने 1965 की लडाई में भारत से बुरी तरह से हार जाने के कारण ही रुस की राजधानी ताशकंद में अपनी पूर्व नियोजित षडयंत्र के अनुसार ही श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को रात्रि में भोजन में बहुत ही तेज जहर देकर मरवा दिया था.

मांस का निर्यात

1962 के चीन के हमले के बाद भारत में आर्थिक संकट प्रारम्भ हुआ जिसे देखकर विदेशी मुद्रा कमाने के लिये गाय माता के मांस के निर्यात करने का सुझाव केंद्र सरकार को दिया गया था. श्री लाल बहादुर शास्त्री जी भारत के उस समय के प्रधानमंत्री होने के कारण गाय माता के मांस के निर्यात करने का सुझाव नहीं माना था. गाय माता के सच्चे लाल श्री लाल बहादुर जी ने अपने प्राणों का बलिदान देकर भी भारत से गाय के मांस का निर्यात करने का विरोध किया था.

कतलखानों की बाढ़

भारत सरकार के कतिपय कर्णधारों की भावना शुद्ध न होने के कारण गोहत्या का कलंक भारत देश में बना ही न रहा बल्कि विदेशी शासन-काल की अपेक्षा कई गुना अधिक बढ गया था. अंग्रेज जब हमारा सर्वनाश करना चाहते थे तब मात्र 300 कतलखाने थे लेकिन अंगेजों के जाने के बाद भारत में कतलखानों की बाढ आ गयी थी. केंद्र सरकार ने अपनी परेशानी के कारण ही मानसिक संतुलन पूरी तरह से खोकर राक्षसी हरकतें चरम सीमा तक कर दी थी.

गो हत्या को बढ़ावा

मजहबी त्यौहारों में मांस के भक्षण करने के लिये, औषध-निर्माण करने में गाय माता के मांस, रक्त का बहुत ही अधिक उपयोग करने और चिकित्सा के नाम पर गोहत्या चालू रखने का दुराग्रह किया गया. शाकाहारी जनता में मांस-भक्षण की प्रवृत्ति बढाने का षडयंत्र अवसरवादी नेताओं के द्वारा अकाल के समय बहुत ही होशियारी के साथ प्रारम्भ किया गया था. भारत की गोप्रेमी जनता ने भारत में अनाज की कमी उत्पन्न होने के कारण ही प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर जी के नेतृत्व में सप्ताह में एक दिन का उपवास करना स्वीकार किया था. देश में स्वदेशी उद्योगों के संपूर्ण विकास तथा शिक्षित बेरोजगारों, अशिक्षित लोगों को रोजगार मिले गांधी जी ने इसके लिये प्रयास किया था. गांधी जी की हत्या होने के कारण ही भारत में गांव गांव में गाय के दूध से तैयार उत्पादों, गाय माता के गोबर से तैयार दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन को कभी भी बढावा नहीं मिला.

अवतार

श्रीमद भगवद गीता में स्पष्ट रुप से पूर्ण पूरषोत्तम योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि जब जब धर्म की हानि होती है जब जब गाय माता पर अत्याचार बढता जाता है जब जब संतों, मेरे प्रिय भक्तों पर इस धरती पर त्रस बढ जाता है और चरम सीमा पर पहुंच जाता है तब तब मैं दुष्टों का संपूर्ण नाश करने पृथ्वी पर अवतार रुप में मनुष्य जन्म लेता हूं.

गो विरोधी कौन?

गो विरोधी लोग केवल मुसलमान और ईसाई नहीं है बल्कि हिंदू अधिक हैं. बैल से खेती करने की बजाय ट्रेक्टर से खेती करने के लिये गो विरोधी जी जान से लगे हैं. विनाश को रोकने के लिये बहुत ही कम लोग हैं. विनाश के लिये उतावले गो विरोधी लोग नयी योजनायें बनाने में लगे हैं. भारत सरकार की प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने भी धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री महाराज जी की किसी भी बात को नहीं माना था. श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज तथा उनके साथ आये गोसेवकों को पूरी तरह से दबाने के लिये अपनी पूर्व योजना के अनुसार आयोजन स्थल की बिजली काटकर सबसे पहले बत्ती बंद करवा दी थी.

अचानक हमला

जब वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी मंच पर गाय माता की रक्षा करने के लिये गोसेवकों को पूरे उत्साह के साथ संबोधन कर रहे थे तब अचानक ही अपनी पूर्व योजना के अनुसार मासूम गोसेवकों पर किराये के गुंडों के द्वारा अचानक अंधेरे में हमला करवाया था जिसके कारण गोसेवकों में भगदड मच गयी थी.

गोलियों की बौछार

श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने बहुत ही चालाकी से गोसेवकों में भगदड करवाकर निहत्थे गोभक्तों पर बहुत ही चालाकी के साथ पुलिस से इंडियन पुलिस एक्ट 1860 के कानून के अंतरगत सोच समझकर अहिंसक और निहत्थे गोसेवकों पर आंसू गैस के गोले और रायफलों की गोलियों की बौछार गोपाष्टमी के दिन चलवायी थी. गोसेवकों पर क्रूर अत्याचार करने के कारण ही गाय माता का भयंकर श्राप श्रीमती इंदिरा गांधी जी को लग गया था.

विनाश ही विनाश

विनाश काले विपरीत बुद्धि. गाय माता मुंह से कभी भी बोलती नहीं हैं. गाय माता अपने अंदर से 24 घंटे बहुत ही शक्तिशाली तरंगे चारों ओर निकालती रहती है. 31 अक्तुबर 1984 गोपाष्टमी के पवित्र दिन को श्रीमती इंदिरा गांधी जी के निवास पर श्रीमती इंदिरा गांधी जी के ही दोनों सिक्ख सुरक्षा कर्मियों ने दिन में सुबह 9 बजे 17 गोलियां दोनों तरफ से श्रीमती इंदिरा गांधी जी पर बदला लेने के लिये बहुत ही निकट से चलायी थी. सुरक्षा कर्मी नहीं चाहते थे कि श्रीमती इंदिरा गांधी किसी भी स्थिति में जीवित रहे.गाय माता के भयंकर श्राप के कारण ही श्रीमती इंदिरा जी अपने ही निवास पर अपने ही सुरक्षा कर्मियों के द्वारा कुत्ते की मौत तडफ तडफ कर मारी गयी थी.

पूर्वाभास

श्रीमती इंदिरा गांधी जी को अपनी मौत का पूर्वाभास तो बहुत ही पहले से ही हो गया था. इसलिये उन्होंने मरने के एक दिन पूर्व उडीसा में कह दिया था कि मैं रहूं या न रहूं लेकिन मेरे खून का एक एक कतरा भारत की सेवा करता रहेगा..... श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने काली गाय का ही दूध जीवन भर सेवन किया था. मृत्यु के भय के कारण ही श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने अपनी सुरक्षा के लिये एक मुखी से 21 मुखी रुद्राक्ष की इंद्राक्षी माला सदैव ही गले में पहनी थी. गाय माता के भयंकर श्राप के कारण ही मरने के एक दिन पूर्व ही इंद्राक्षी माला उनके गले में से अपने आप ही टूट गयी थी.

गोवंश का भयंकर श्राप

गाय माता के भयंकर श्राप के कारण ही सुरक्षित असुरक्षित में बदल गयी थी. श्रीमती इंदिरा गांधी जी के सुपुत्र श्री संजय गांधी जी की मृत्यु भी गाय माता के भयंकर श्राप के कारण ही अष्टमी के दिन ही कुत्ते की तरह हुई थी.

कुत्ते की मौत

श्रीमती इंदिरा गांधी जी के सुपुत्र श्री राजीव गांधी जी की मृत्यु भी गाय माता के भयंकर श्राप के कारण ही 21 मई 1991 को रात्रि 10 बजकर 40 मिनट को अष्टमी के दिन कुत्ते की तरह से हुई थी. 13 अप्रेल 1919 का अमृतसर का जलियावाला कांड भी 7 नवंबर 1966 की घटना के सामने बहुत ही छोटा पड गया था.

हत्या

800 गोसेवक पुलिस की गोलियों के कारण ही तडफ तडफ कर मारे गये थे. संसद की सडकें गोसेवकों के खून से पूरी तरह से लाल हो गयी थी. गोसेवकों की मृत देहों से संसद की सडकें भर गयी थी. सरकार ने अपने पापों पर पर्दा डालने के लिये रातों रात विघुत भटटी में गोसेवकों के देहों को चुपचाप जला दिया था जिससे कोई सबूत ही न बचे.

जबरदस्ती जेलों में बंद

गाय माता की रक्षा करने आये हजारों गोसेवकों और उनके नेताओं को जेलों में जबरदस्ती से बंद कर दिया गया था. सरकार के द्वारा सबूतों को मिटाने का काम बहुत ही चालाकी से किया गया था. गोरक्षा आंदोलन रुकता सा प्रतीत हो रहा था. हजारों गो भक्तों के बलिदान के कारण किसी में इतना साहस नहीं था कि आंदोलन को अब चलाया जाय.

दमनचक्र

8 नवंबर 1966 को धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज सुबह अकेले ही संसद की सडक पर निकल पडे थे. फिर क्या था, उनके पीछे पीछे हजारों गोसेवक भी गाय माता की रक्षा करने के लिये माथे पर कफन बांधकर निकल पडे थे. सरकार के दमनचक्र से उत्पन्न आतंक को छिन्न भिन्न करते हुए धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज ने गोरक्षा आंदोलन को नवजीवन प्रदान किया. कोंग्रेस सरकार ने अपना पूरा गुस्सा धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज पर उन्हें गिरफतार कर निकाला.

धर्मसम्राट पर जेल में आक्रमण

धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज जब एक दिन संध्या के समय तिहाड जेल में अपने सेवकों को धर्म उपदेश दे रहे थे तभी अचानक उन पर किराये के गुंडों के द्वारा प्राणघातक हमला कराया था. धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज को लोहे की सलाखों से इतना अधिक मारा गया था कि धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज के पूरे देह पर हरे हरे दाग पड गये थे.

आंख फूटी एवं सिर फटा

धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज का सिर और एक आंख भी फूट गयी थी. धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के एक अनुयायी शिवानन्द जी ने धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज पर लेटकर गुंडो की मार को अपने देह पर लेकर धर्मसम्राट स्वामी श्री करपात्री जी महाराज को मरने से बचा लिया था.

त्यागपत्र

गाय माता के अनन्य भक्त भारत सरकार के गृहमंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा जी ने समय की नाजूकता को ध्यान में रखते हुए अपना त्यागपत्र 7 नवम्बर 1966 गोपाष्टमी को भारत सरकार की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी को उनके गोसेवकों पर बिना किसी कारण के गोली चलाने के बहुत ही क्रूर आदेश को देखते हुए तुरन्त ही सौंप दिया था.

आमरण अनशन

विनोबा भावे जी ने गाय माता की हत्या पूरी तरह से बंद करने के लिये आमरण अनशन किया था और केंद्र सरकार में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी के नहीं मानने पर गाय माता के लिये ही अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे.

सर्वनाश

हमारी 100 गाय माताओं को बुद्ध की प्रतिमाओं को तोडने में हुए विलंब के कारण ही मुसलिमों के द्वारा प्रायश्चित के रुप में तालिबान में मई 2001 में डंके की चोट पर बहुत ही क्रूरता के

साथ काट दिया गया है तथा गाय माता के भयंकर श्राप के कारण बहुत ही जल्दी तालीबान पूरी तरह से समाप्त हो गया और हमारा धर्म समाप्त करने की साजिश भी पूरी तरह से विफल हो गयी है. आज भारत में केंद्र सरकार के पूरी तरह से गाय विरोधी और भौतिकवादी भावना के कारण ही गाय माता के स्थान पर जर्सी, हालीस्टीन पशओुं ने स्थान ले लिया है. युरोप में मौजूद जर्सी टापू में रहने वाले हिंसक जानवरों को पूरी तरह से पालतु बनाकर दुधारु बनाया गया है.

बरबादी

आधुनिक प्रयोगों ने अब यह पूरी तरह से साबित कर दिया है कि जर्सी, होलीस्टीन, फ्रीजियन जानवरों का दूध पीना यानी अपनी मौत को ही बुलाना है. मार्च 2001 में पूरे युरोप में मुंह और पैरों की भयंकर बीमारी जर्सी जानवरों में बहुत ही तेजी के साथ फैलने के कारण ही 2 लाख जर्सी जानवरों को युरोप में बहुत अधिक मानसिक डर के मारे तुरन्त ही बिना आवाज की बंदूके तैयार कर गोलियों से मारना पडा था.

भयंकर श्राप

हमारी गाय माता के भयंकर श्राप के कारण ही युरोप को 65,000 करोड रुपयों का भयंकर आर्थिक नुकसान उठाना पडा था. भारत के लोग हमारी गाय माता के स्थान पर गलतफहमी के कारण ही यूरोप के जर्सी द्वीप की जर्सी नस्ल, होलीस्टीन, फ्रीजीयन एवं अन्य वर्णसंकर पशुओं की पूजा कर रहे हैं. गाय माता धर्म का साक्षात अवतार है. गाय माता की रक्षा करना ही धर्म की रक्षा करना है. गाय माता के नाम पर धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज के द्वारा बताये जयकारे वर्तमान में धार्मिक कार्यक्रम में धर्म की जय हो अधर्म का नाश हो प्राणियों में सदभावना हो विश्व का कल्याण हो गाय माता की जय और गो हत्या बंद करो के गगनभेदी नारे बहुत ही श्रद्धा के साथ लगाये जाते हैं.

त्याग

गाय माता की रक्षा करने के लिये हमें पूरी तरह से भैंस के त्याग करने की आवश्यकता है. पूरी तरह से गोव्रती बनना अनिवार्य है. गाय माता की रक्षा करने से 33 करोड देवताओं की रक्षा होगी. गाय माता की रक्षा करने के लिये हमें पूरी दृढता के साथ संगठित प्रयास करने की आवश्यकता है. हम रहे या न रहे हमें इसकी चिंता नहीं करनी है.

एक बार मरना

हमारे खून का एक एक कतरा गाय माता की रक्षा करने के लिये ही उपयोग होना चाहिये. रोज रोज मरने से एक बार मरना ज्यादा अच्छा है. गाय माता हमसे पहले भी थी और हमारे बाद आगे भी इस धरती पर सदैव रहेगी. हम सभी कुछ सहन कर सकते हैं लेकिन गाय माता का अपमान कभी भी सहन नहीं कर सकते हैं. गाय माता के लिये हम कोई भी समझौता नहीं कर सकते हैं. अभी तक हमने गाय माता के लिये सिर्फ बहुत सारे समझौते ही किये हैं जिसके कारण हमें आने वाली पीढी कभी माफ नहीं करेगी. गाय माता में 33 करोड देवता साक्षात रुप से विराजमान हैं.

गोवंश को भयंकर खतरा

वर्तमान में कांग्रेस सरकार साम्यवादी समर्थक केंद्र में आने के कारण गाय काटने के लिये अब कसाईयों को बहुत अधिक प्रोत्साहन दिया जा रहा है जिसके कारण पश्चिम बंगाल में गोप्रेमी भारत की जनता को लम्बे समय से बहुत ही गहरा धक्का लग रहा है. वर्तमान केंद्र सरकार के गाय विरोधी कार्य को पश्चिम बंगाल में रोकने के लिये मौन तोडकर गोप्रेमियों को कमर कसकर सामने आने की आवश्यकता है. भारत के गोवंश पर अब भयंकर खतरा उत्पन्न हो गया है. भारत के गोसेवकों को आने वाले समय में सावधानी के साथ भारत में उत्पन्न होने वाली खतरनाक परिस्थितियों का सामना करना पडेगा. भारत में गोवंश समाप्त होने का खतरा उत्पन्न होने के कारण सभी को सोचना होगा. वर्तमान समय में कच्छ, गुजरात, राजस्थान की सीमाओं से प्रतिदिन गोवंश पाकिस्तान बडी मात्रा में जाता है. पाकिस्तान के बहुत सारे समाचार पत्रों में भारत से आने वाले गोवंश के बारे में बहुत ही विस्तार से प्रकाशित हो चुका है.

2011 में भारत महाशक्ति

सर्वोदय के कार्यकर्ताओं के द्वारा लम्बे समय से चलाये जा रहे गोरक्षा के आंदोलन को समर्थन पूरे भारत से मिल रहा है. श्री सुदर्शन जी ढंढारिया सर्वोदय विचार परि-द 132/1 महात्मा गांधी मार्ग कोलकत्ता पश्चिम बंगाल 700007 के द्वारा भारत में नये तरीके से चुनाव करवाने के लिये आंदोलन प्रारम्भ किया गया है.

राम

राम यानी रा-ष्ट्रीय अहिंसा मंच का पंजीयन दिल्ली में करवा लिया गया है. भारत को महाशक्ति बनाने के लिए तैयारियां की गयी हैं.

भारत यात्रा

पूरे भारत में यात्रा का आयोजन नवम्बर 2008 में किया जायेगा ओर हजारों लोगों को जोड़ा जायेगा.

नयी सरकार

यदि आप आने वाले समय में साफ सुथरी सरकार चाहते हैं तो आप भी अपने विचार श्री पुरु-ोत्तम जी झुनझुनवाला जी 54 झकारिया स्ट्रीट कोलकता पश्चिम बंगाल को भेज सकते हैं. बंगलादेश में 28000 गांव बिना हिंदू के हैं इसलिये मांसाहारियों की संख्या बंगलादेश में बहुत ही अधिक है.

गोवंश का निर्यात

पाकिस्तान में भी हिंदूओं की संख्या बहुत अधिक कम हो गयी है. पाकिस्तान में मांसाहारियों की संख्या तेजी से बढती चली गयी है. भारत से हर साल पश्चिम बंगाल से बंगलादेश कटने के लिये जाने वाले दस लाख गोवंश को बचाने के लिये निर्णायक विरोध पूरे भारत से करने की आवश्यकता है. 2011 तक एक भी गोवंश भारत से बाहर कटने के लिये न जाये इसके लिये जबरदस्त तैयारियां चल रही है.

आईवीआरआई इज्जतनगर

श्री राम स्वरुप सिंह चौहान जी संयुक्त संचालक केडरेड, इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट इज्जतनगर बरेली उत्तरप्रदेश 30 पुस्तकें तथा 300 शोधपत्र विश्व के जनरलों में प्रकाशित कर चुके हैं. 3 मासिक प्रकाशित करते हैं. वर्तमान में गोवंश पर किये जा रहे वैज्ञानिक अनुसंधानों के आधार पर पंचगव्य कांउसिल की स्थापना करने के लिये कानून बनवाने के लिये प्रयत्नशील हैं. श्री रामस्वरुप सिंह चौहान गोमाता का चेनल या धारावाहिक प्रसारित करवाने के लिए कार्य कर रहे हैं.

जैविक क्रांति

श्री राजेंद्र सिह राजपुरोहित जी वर्तमान में भारतीय गोवंश को समाज में उपयोगी सिद्ध करने के लिये कामधेनु विश्वविद्यालय की स्थापना करने के लिये प्रयत्नशील हैं. सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री पवन अग्रवाल जी कतरासगढ़ धनबाद झारखंड में जैविक खाद नेडेप, केंचुआ खाद, समाधि खाद, सींग खाद, मटका खाद, सी.पी.पी. खाद, चार गढढा विधि, इंदौर विधि, अमृत पानी, गोबर गैस स्लरी बहुत बड़ी मात्रा में तैयार कर रहे हैं तथा प्रतिदिन एक ट्रक जैविक खाद आसाम में चाय बागान को बेचने का लक्ष्य तैयार कर रहे हैं.

अहिंसक खेती

श्री वीरेन्द्र जी जैन इंदौर गोमूत्र को मानव के सभी असाध्य रोगों में उपयोगी साबित करने के लिये जबरदस्त कार्य आस्था चेनल में सुबह 10 बजे से आधा घंटा तक प्रतिदिन प्रचार प्रसार के साथ कर रहे हैं. श्री वीरेन्द्र जी जैन प्रधान संपादक अहिंसक खेती बसंत मेंशन किसान किसानी विकास ट्रस्ट 165 रविन्द्रनाथ टैगोर मार्ग इंदौर मध्यप्रदेश 452001 प्रकाशित करते हैं. श्री रतनचंद जी बाफना जलगांव महारा-ट्र में 15 करोड़ की लागत से 13 एकड़ भूमि पर 1650 गोवंश के साथ अहिंसा तीर्थ चला रहे हैं. श्री रतनचंद जी बाफना गोवंश के द्वारा प्रतिदिन 2.5 लाख रुपये की आय प्राप्त करने का लक्ष्य बना चुके हैं. श्री दत्तशंरणानंद जी महाराज विश्व की सबसे अधिक गोवंश महाअकाल के समय 2,80,000 तथा वर्तमान में 1,25,000 रखकर गोपाल गोशाला आनंदवन पथमेड़ा तहसील सांचोर जिला जालोर राजस्थान में कामधेनु विश्वविद्यालय खोलने की तैयारियां कर चुके हैं.

कामधेनु विश्वविद्यापीठ

श्री सुदर्शन जी ढंढारिया सर्वोदय विचार परि-द 132/1 महात्मा गांधी मार्ग कोलकत्ता 700007 मोबाइल 09433023999 पश्चिम बंगाल कामधेनु विश्वविद्यापीठ की स्थापना कर नवग्रह धूप के माध्यम से जबरदस्त परिवर्तन की तैयारियां कर रहे हैं. गोमाता का गोबर बहुत ही मंहगे मूल्य पर नगद खरीदने के लक्ष्य के कारण गोरक्षा करना संभव है.

नवग्रह धूप

हर गांव में नवग्रह धूप तैयार करने के लिए प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है. गाय माता का घी भी लोगों से खरीद कर कार्यालय के माध्यम से बेचा जा रहा है. एसएमएस नियमित रुप से कर गे प्रेमी लोगों से संपर्क बराबर चल रहा है. आंदोलन का स्वरुप बहुत ही व्यापक किया जा रहा है. पत्रक तैयार कर वितरित किए जा रहे हैं. समाचार पत्र भी सम्मेलन में वितरित किए जा रहे हैं.

सौम्य सत्याग्रह

1 से 21 दिसम्बर तक पूरे भारत में सौम्य सत्याग्रह किया गया है. सौम्य सत्याग्रह के माध्यम से मांसाहार को त्यागने के लिए बैनर पोस्टर तथा स्टीकर के माध्यम से जागृति की गयी है. कैलेंडरों, प्रतियोगिताओं, पत्रिकाओं, समाचार पत्र में भी मांसाहार से होने वाले रोगों के बारे में बताया गया है. कल्याण के संपादक श्री राधेश्याम खेमका जी ने भी 3000 अंक गो अंक 1945 के नवम्बर माह में पुनः प्रकाशित किया है. 760 पन्नों में मांसाहार का खुलकर बहुत सारे लेखकों ने विरोध किया गया है. गीताप्रेस की अपनी अदभुत पकड़ है. गीताप्रेस बहुत ही कम मूल्य पर धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित कर नयी परम्परा बना चुकी है. गो अंक हाथो हाथ बिक गया है. मांसाहार त्यागो और शाकाहार अपनाओ नारा प्रमुखता से उठाया गया है. बहुत बड़ी संख्या में बहुत ही विस्तार से ई मेल कर विश्व के सभी मुसलमानों को भी मांसाहार त्यागने के लिए समझाया गया है.

मांसाहार चरम सीमा पर

लगातार 21 दिनों तक आंदोलन करने के कारण ही मांसाहार करने वालों पर बहुत ही जबरदस्त दबाव बन रहा है. भारत में गलतफहमियों के कारण मांसाहार बहुत ही तेजी के साथ बढ़ता जा रहा है. मांसाहार को रोकने के लिए आगे भी आंदोलन को जारी रखना है.

21 दिनों का आंदोलन

21 दिनों में बहुत सारे लेख अलग अलग लेखकों के द्वारा मांसाहार के विरोध में प्रकाशित किये गये हैं. विदेशों में मांसाहार में लगातार कमी आ रही है. विदेशी लोगों पर हमारी अपील का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ रहा है. डा. चिरंजी लाल बागड़ा जी कोलकत्ता में मांसाहार के खिलाफ बहुत ही जबरदस्त आंदोलन कई सालों से विश्व में चला रहे हैं. जैन संगठन के द्वारा मांसाहार का बहुत ही जबरदस्त विरोध किया जाता रहा है. गोधन दिसम्बर 2007 में डा. मधु पोददार सुविख्यात लेखिका एवं चिकित्सक पोददार अस्पताल बस अडडा गाजियाबाद उत्तरप्रदेश के द्वारा मांसाहार है अनेक घातक रोगों का कारण प्रकाशित किया गया है. अपने लेखों में मानव के द्वारा मांसाहार के प्रति उत्पन्न बहुत सारी भ्रांतियां ठोस वैज्ञानिक प्रमाण के द्वारा समाप्त कर दी गयी हैं.

इस्लाम और शाकाहार

इस्लाम और शाकाहार पुस्तक 144 पन्नों तथा 150 रु. मूल्य की श्री मुजफफर हुसैन के द्वारा लिखी गयी है. मुसलमान के द्वारा बहुत ही सच्ची बातें मांसाहार के विरोध में लिखने से इस पुस्तक की चर्चा हो रही है. श्री मुजफफर हुसैन जी के द्वारा बहुत सारे लेख कई पत्रिकाओं में पहले भी लिखे गये हैं जिसके कारण उनकी अलग पहचान बन गयी है.

तेजस्वी गोमाता ओजस्वी भारत माता

नांदेड़ के मुसलमान श्री युनुसुदीन फारोखी जी भी ओजस्वी गोमाता तेजस्वी भारत माता मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ कर रहे हैं. 2004 से ही इस पत्रिका के लिए सम्मेलनों में उन्होंने अपनी बात रखी है. पत्रिका की लागत 70 रु. आयेगी. पत्रिका मुसलमानों को अवश्य ही दी जायेगी. मांसाहार का कड़ा विरोध करने के लिए उनके द्वारा 100 प्रश्न हर अंक में प्रकाशित किए जायेंगे.

गोरक्षा सम्मेलन

विजेता को 10,000 का नगद पुरुस्कार दिया जायेगा. 11 से 13 जनवरी 2008 तक सर्वोदय तीर्थ घाटकोपर मुम्बई में गोरक्षा सत्याग्रह सम्मेलन का आयोजन किया गया है.

सत्याग्रह

पूज्य विनोबा भावे जी के मार्गदर्शन में 1982 से देवनार में चल रहे कतलखाने का विरोध करने के लिए निरन्तर सत्याग्रह चल ही रहा है. सत्याग्रह का प्रभाव पूरे विश्व में बहुत ही अच्छा पड़ रहा है. पूरे भारत से अधिक से अधिक लोग इस सम्मेलन में भाग लेने आयेंगे. 9 फरवरी से 19 फरवरी तक अहिवारा में गो पुष्टी यज्ञ का आयोजन किया गया है.

कठोर संकल्प

गाय माता की रक्षा के लिये बहुत ही कठोर संकल्प यानी करो या मरो की आवश्यकता है. 2011 तक गोवंश हत्या भारत में पूरी तरह से बंद करने के लिए गोसेवकों को पूरी तरह से संगठित होने की आवश्यकता है.

असफलता

वर्तमान में भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड 1975 से, रा-ट्रीय स्वयं सेवक संघ 1925 से, विश्व हिंदु परि-द 1964 से, बजरंग दल, धर्मसंघ, पुष्टिमार्ग, लव फोर काउ ट्रस्ट, पीपुल फोर एनिमल, पीपुल फोर इथीकल ट्रीटमेंट फोर एनिमल्स, ब्यूटी वीदाउट क्रूएलटी, आर्य समाज, जैन संगठन, हिंदु महासभा, अखिल विश्व कामधेनु परिवार 48 सालों से, रामकृ-ण मिशन, सर्वोदय, अखिल विश्व गायत्री परिवार 1953 से, आजादी बचाओ आंदोलन 1989 से, हिंद स्वराज अभियान अलग अलग कार्य कर रहे हैं जिससे गोरक्षा करने में पूरी सफलता मिल नहीं रही है.

कठोर संकल्प का अभाव

गाय माता की रक्षा करने वाले कठोर संकल्प के अभाव में ठोस परिणाम लाने में आजादी के बाद 60 साल बाद भी सफल नहीं हो पा रहे हैं.

गो सम्पदा सम्मेलन

आजादी बचाओ आंदोलन इलाहाबाद उत्तरप्रदेश के द्वारा 1 करोड़ साथियों के माध्यम से योजना आयोग के सुझाव पर गंभीरता के साथ कार्य किया गया है. लगातार चार सालों से कोलकत्ता में गोसम्पदा सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं. पूरे भारत के गो प्रेमियों को आमंत्रित किया जाता है. 2005 में 5 वां सम्मेलन इस्कोन मंदिर में पश्चिम बंगाल में आयोजित किया जायेगा. गोमाता को बचाने के लिये 29, 30 अप्रेल तथा 1 मई 2005 को 1 लाख आठ कुंडीय कामधेनु महायज्ञ का आयोजन मध्यप्रदेश में खरगोन जिले के कसरावद तहसील में डोंगरगांव में सत्यधाम आश्रम में किया गया जिसमें 1 लाख जोडे तथा 1 लाख ब्राहमण भाग लें चुके.

गो सेवा आयोग

वर्तमान में 6 गो सेवा आयोग गुजरात गो सेवा आयोग, मध्यप्रदेश गो सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश गो सेवा आयोग, राजस्थान गो सेवा, छतीसगढ गो सेवा आयोग, झारखंड गो सेवा आयोग भारत में कार्य कर रहे हैं. भारत में अन्य राज्यों महारा-ट्र, उड़ीसा में भी तुरन्त ही गो सेवा आयोग प्रारम्भ करने के लिए प्रयत्न किये गये है.

अखिल भारतीय गोशाला संघ

श्री रामपाल अग्रवाल नूतन अखिल भारतीय गोशाला संघ होटल सिद्वार्थ लेन ईस्ट बोरिंग केनल रोड पटना बिहार 800001 0612 2524719, मोबाइल 3116334 भारत की सभी गोशालाओं को प्रति माह गोवंश गोशाला वार्ता भिजवा रहे हैं.

भगीरथ प्रयास

भगीरथ प्रयास के द्वारा ही ठोस परिणाम संभव है. संपूर्ण गो हत्या बंदी के लिये आमरण अनशन, मौन धरना, पद यात्रायें पूरे भारत में 5 लाख 76 हजार गांवों में करनी हैं. वर्तमान में गोरक्षा के लिये गायत्री परिवार के 11 करोड गोसेवक 1953 से बहुत ही उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं.

सृजन

श्री विवेक गोविंद सुरंगे जी संपादक सृजन कर्म गोमती इंडस्ट्रीज के पास में शंकरनगर रायपुर छतीसगढ़ 492007 दूरभा-ा 0771-4055723 मासिक पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं. सृजन कर्म का वार्षिक शुल्क 50 रुपये, आजीवन 1100 रु. डाक खर्च 12 रुपये है.

गति

श्री मेवालाल पंडित जी गायत्री शक्तिपीठ सेंधवा जिला बड़वानी मध्यप्रदेश 9425449414 07281-283014 बहुत ही कम आयु में 2001 से विश्व में परिवर्तन लाने के लिए बहुत बड़े स्तर पर वाहनों के माध्यम से पंचगव्य दवाओं का निर्माण कर अखिल विश्व गायत्री परिवार के सभी केंद्रों में वितरण कर गोवंश संवर्धन करने के लिए ठोस कार्य कर रहे हैं. साहित्य का प्रकाशन कर रहे हैं. शिविर का आयोजन करते हैं.

परिवर्तन

श्री शंकर पाटीदार जी भूतपूर्व अध्यक्ष मध्यप्रदेश गोसेवा आयोग तथा ऐलोपेथी चिकित्सक गायत्री शक्तिपीठ महाराणा प्रताप नगर भोपाल मध्यप्रदेश 462001 9425008594, गोवंश संवर्धन के लिए विशाल होल बनवाकर उसमें नियमित रुप से पंचगव्य पर नियमित निःशुल्क प्रशिक्षण देने का जबरदस्त कार्य कर रहे हैं. गांव गांव में उनके द्वारा किसानों तथा गोपालकों को मार्गदर्शन वाहन के माध्यम से दिया जा रहा है. भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा ली जा रही है. गोवंश साहित्य भी उपलब्ध है. श्री परमानंद जी के द्वारा 70 प्रकार के अलग अलग अर्क तैयार कर रहे हैं.

पेटा

इंग्रिड न्यूकिर्क, अध्यक्षा, पीपुल फोर इथीकल ट्रीटमेंट फोर एनिमल यानी पेटा अमेरिका के द्वारा 26 सालों में 12 लाख 50 हजार गोसेवको के साथ मिलकर पूरे विश्व में गोवंश रक्षा करने के लिए बहुत ही ठोस कार्य किये गये हैं. एक बुलेटिन पाक्षिक एनिमल टाइम्स अंग्रेजी में प्रकाशन किया जा रहा है. बुलेटिन के माध्यम से विश्व में चल रहे कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जा रही है. वेबसाइट अंग्रेजी में तैयार की गयी है. वेबसाइट के माध्यम से विश्व के महत्वपूर्ण लोगों को जोड़ने के प्रयत्न जारी हैं. पोस्टर, बैनर, ब्रोचर, थैले, पर्स, बनियान आदि बहुत सारी प्रचार प्रसार की चीजें तैयार की गयी हैं.

पीपुल फोर एनिमल्स

श्रीमती मेनका गांधी जी, अध्यक्षा, रा-ट्रीय कार्यालय पीपुल फोर एनिमल्स, 14, अशोक रोड, नई दिल्ली 110001 दूरभाष 011-3357088, 3355883 फेक्स 011- 3354321 के द्वारा गोरक्षा के लिये कठोर कानून बनवाकर पूरे भारत में समर्पित सदस्यों के माध्यम से कड़ाई से पालन करवाया जा रहा है. अंग्रेजी में वेबसाइट तैयार की गयी है. वेबसाइट में गोरक्षा करने के लिए विस्तार से जानकारी दी गयी है. साहित्य का प्रकाशन किया गया है. गोरक्षा करने के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है.

भव्य सम्मेलन

समय समय पर बहुत ही भव्य सम्मेलन करवाये जा रहे हैं. इंडिया टीवी न्यूज चेनल पर प्रतिदिन रात्रि 8 बजकर 40 मिनट पर जीने की राह कार्यक्रम दिखाया जा रहा है. इस कार्यक्रम में आप यदि कुछ कहना चाहते हैं तो कृपया श्रीमती मेनका गांधी जी जीने की राह इंडिया टीवी, फिल्मसिटी नोयडा 201301 दूरभास 0120-30510101 से तुरन्त संपर्क करें. पीपुल फोर एनिमल्स की भारत में सभी जगह सहायक शाखायें हैं. आप यदि पीपुल फोर एनिमल्स की शाखा अपने क्षेत्र में प्रारम्भ करते हैं तो श्रीमती मेनका गांधी जी के द्वारा आपको 50,000 रुपये की नगद सहायता हर साल प्राप्त होगी.

गोवंश सम्मान

श्री अचलदास जी पारख श्री कृ-ण गोरक्षा केंद्र, कामधेनु भवन, शनिचरी बाजार दुर्ग, छतीसगढ 491001 मोबाइल 98266-36000 गोशाला छातागढ़ कार्यालय पारख ज्वेलर्स जवाहर मार्केट पावरहाउस भिलाई 490001 लिक्विड एसेट, गोबर, जेल में गोशाला, गोमूत्र चिकित्सा, भारतीय गोवंश पर निःशुल्क साहित्य एवं सीडी वितरित कर रहे हैं. समय समय पर सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं. पुस्तक, स्मारिका का प्रकाशन कर रहे हैं. मेलों में स्टोल लगा रहे हैं. श्री अचलदास जी पारख सिविल इंजीनियर हैं तथा वास्तु के बहुत अच्छे जानकार हैं. श्री अचलदास जी पारख पचंगव्य महो-धियों के निर्माण करने के लिये सरकार के सहयोग से 3 दिनों का निःशुल्क प्रशिक्षण भी देते हैं. समय समय पर गोवंश संवर्धन करने के लिए सम्मेलन भी करवा रहे हैं.

जय पंचगव्य

श्री हुकुमचंद जी सावला 786 सुदामानगर विश्व हिंदू परि-द इंदौर के द्वारा भारतीय गोवंश पर सचित्र वैज्ञानिक जानकारी जय पंचगव्य निःशुल्क पुस्तक वितरित की जा रही है. निरन्तर संगठित ठोस प्रयास किये जा रहे हैं.

दूरदर्शिता

गाय माता की रक्षा के लिये दूरदर्शिता की आवश्यकता है. गाय माता की रक्षा के लिये अभी तक जितने भी आंदोलन भारत की आजादी के बाद से किये गये हैं वे सभी दूरदर्शिता के अभाव में पूरी तरह से असफल हुए हैं. पहली बार भारत सरकार गोसेवकों, गोभक्तों, गोरक्षकों के बहुत ही कडे रुख के आगे झुकने के लिये मजबूर हो रही है. केंद्र और सभी राज्यों में सरकार चाहे किसी भी पार्टी की आती है गाय माता के लिये पूरी नीतियां जब तक नहीं बदलेंगी तब तक परिणाम मनचाहे मिल नहीं सकते हैं.